PijushNandi

mun

Model: Web-M4

Order No: 107517301

RATNA JYOTI
RATNA JYOTI

Phone: +91-341-2668022
Mobile : +91 -9732150484
Whatsapp : +91 -9732150484

RATNA JYOTI®

Website: https://www.ratnajyoti.com/
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan ,W.B , India ,Zip-713322

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
01/02/2019	जन्म तिथि	01/02/2019
शुक्रवार	दिन	शुक्रवार
घंटे 12:12:12	जन्म समय	11:11:10 घंटे
घटी 14:34:41	जन्म समय(घटी)	12:02:06 घटी
India	देश	India
dur	स्थान	dur
23:39:18 पूर्व	अक्षांश	23:39:18 पूर्व
87:11:23 उत्तर	रेखांश	87:11:23 उत्तर
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:18:46	स्थानिक संस्कार	00:18:46 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:22:19	सूर्योदय	06:22:19
17:27:29	सूर्यास्त	17:27:29
24:07:11	चित्रपक्षीय अयनांश	24:07:11

वृष	लग्न	मेष
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	मंगल
धनु	राशि	धनु
गुरु	राशि-स्वामी	गुरु
मूल	नक्षत्र	मूल
केतु	नक्षत्र स्वामी	केतु
3	चरण	3
हर्षण	योग	हर्षण
तैतिल	करण	तैतिल
भा-भारत	जन्म नामाक्षर	भा-भावना
कुम्भ	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ
क्षत्रिय	वर्ण	क्षत्रिय
मानव	वश्य	मानव
श्वान	योनि	श्वान
राक्षस	गण	राक्षस
आद्य	नाड़ी	आद्य
मूषक	वर्ग	मूषक

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
केतु 2वर्ष 4मा 5दि		06:15:37	वृष	लग्न	मेष	19:04:42	केतु 2वर्ष 7मा 12दि	
केतु		17:58:54	मक	सूर्य	मक	17:56:19	केतु	
01/02/2019		08:51:40	धनु	चंद्र	धनु	08:20:59	01/02/2019	
08/06/2021		26:57:50	मीन	मंगल	मीन	26:56:06	14/09/2021	
	00/00/0000	19:31:26	मक	बुध	मक	19:27:00	00/00/0000	
	00/00/0000	23:41:53	वृश्चि	गुरु	वृश्चि	23:41:26	00/00/0000	
	00/00/0000	02:51:32	धनु	शुक्र	धनु	02:48:39	00/00/0000	
	00/00/0000	20:52:06	धनु	शनि	धनु	20:51:49	00/00/0000	
	00/00/0000	02:40:12	कर्क	राहु	कर्क	02:40:08	00/00/0000	
	01/02/2019	02:40:12	मक	केतु	मक	02:40:08	01/02/2019	
गुरु	03/05/2019	04:45:36	मेष	हर्ष	मेष	04:45:33	गुरु	09/08/2019
शनि	10/06/2020	20:48:56	कुंभ	नेप	कुंभ	20:48:51	शनि	16/09/2020
बुध	08/06/2021	27:31:06	धनु	प्लूटो	धनु	27:31:01	बुध	14/09/2021

24:07:11 चित्रपक्षीय अयनांश 24:07:11

लग्न-चलित

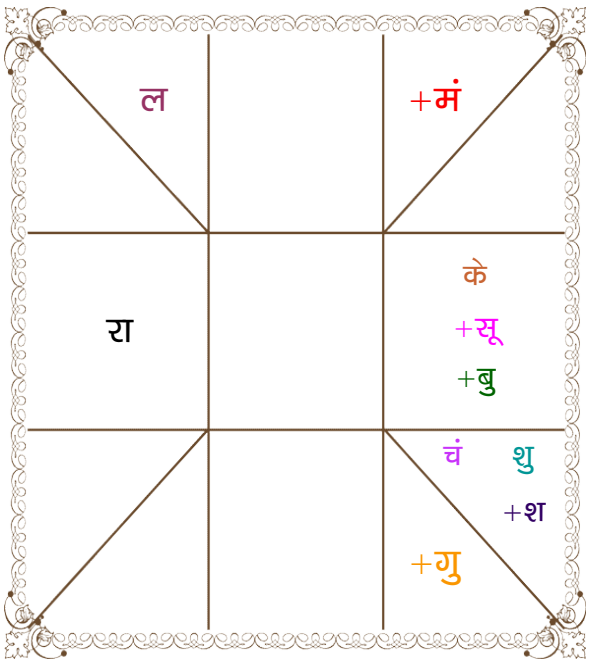

लग्न-चलित

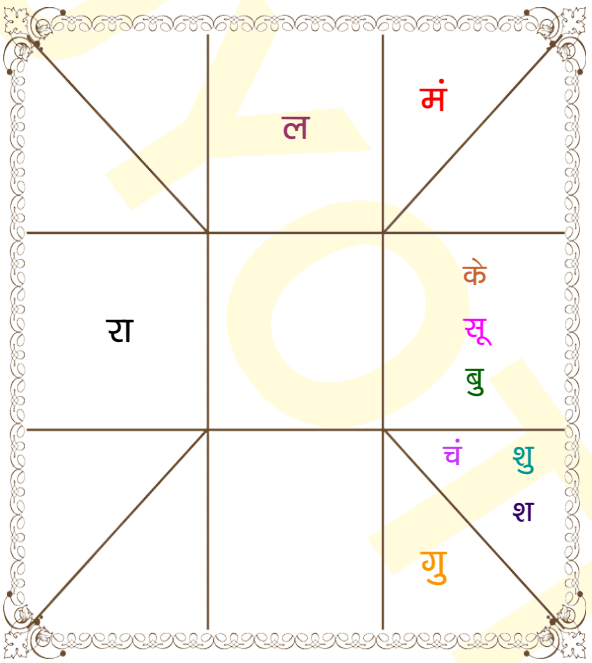

चन्द्र कुंडली

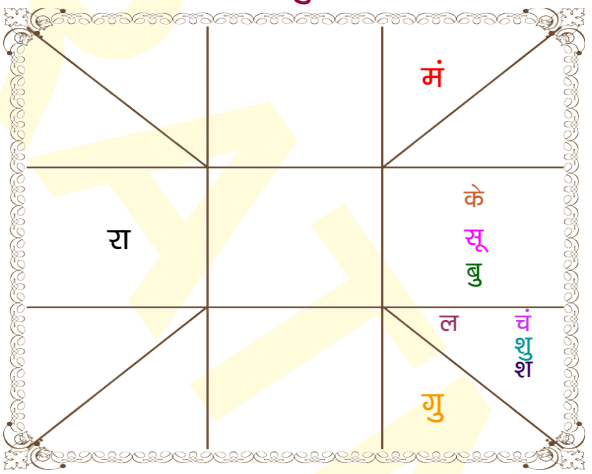

चन्द्र कुंडली

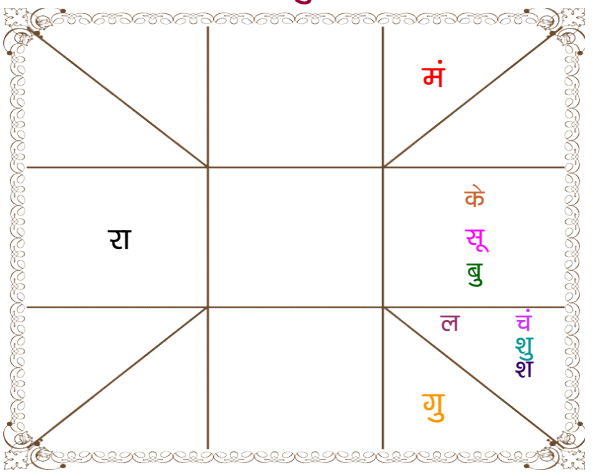

सूर्य कुंडली

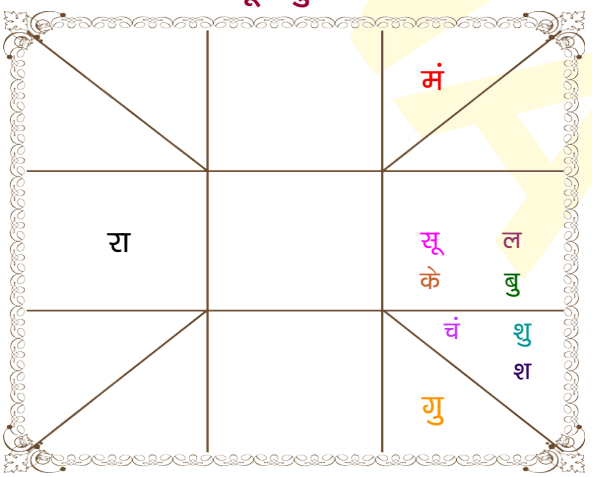

सूर्य कुंडली

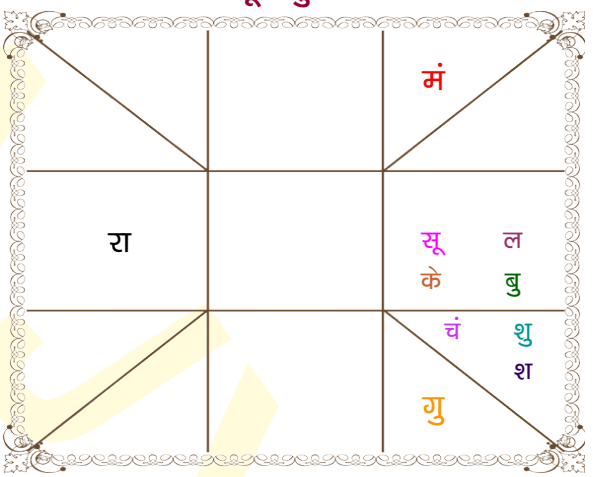

नवमांश कुंडली

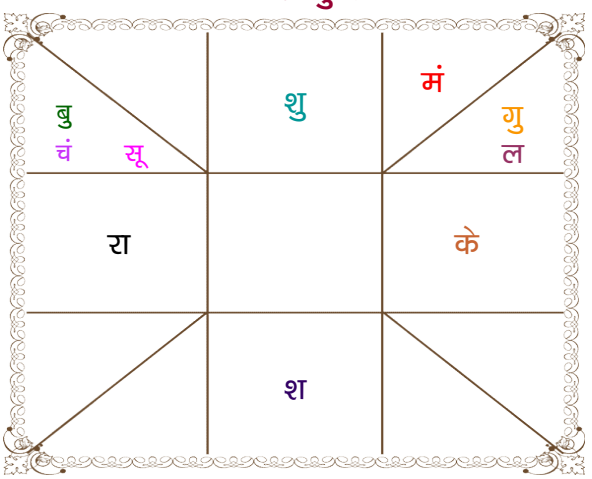

नवमांश कुंडली

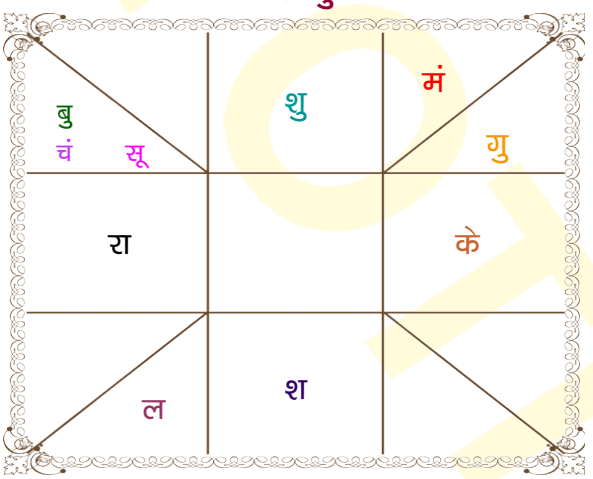

RATNA JYOTI

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : केतु 2 वर्ष 4 मास 5 दिन

के.पी. अयनांश : 24:01:04

फॉरच्युना : मीन 27:08:23

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मक	17:58:54	शनि	चंद्र	बुध	बुध
चंद्र		धनु	08:51:40	गुरु	केतु	गुरु	चंद्र
मंगल		मीन	26:57:50	गुरु	बुध	गुरु	केतु
बुध		मक	19:31:26	शनि	चंद्र	बुध	शनि
गुरु		वृश्चि	23:41:53	मंगल	बुध	मंगल	शनि
शुक्र		धनु	02:51:32	गुरु	केतु	शुक्र	बुध
शनि		धनु	20:52:06	गुरु	शुक्र	गुरु	बुध
राहु		कर्क	02:40:12	चंद्र	गुरु	राहु	शुक्र
केतु		मक	02:40:12	शनि	सूर्य	गुरु	मंगल
हर्ष		मेष	04:45:36	मंगल	केतु	चंद्र	सूर्य
नेप		कुंभ	20:48:56	शनि	गुरु	गुरु	केतु
प्लूटो		धनु	27:31:06	गुरु	सूर्य	चंद्र	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	06:15:37	शुक्र	सूर्य	बुध	राहु
2	मिथु	02:24:47	बुध	मंगल	केतु	गुरु
3	मिथु	26:30:48	बुध	गुरु	केतु	बुध
4	कर्क	22:21:18	चंद्र	बुध	चंद्र	मंगल
5	सिंह	23:01:29	सूर्य	शुक्र	शनि	सूर्य
6	कन्या	29:12:21	बुध	मंगल	शनि	चंद्र
7	वृश्चि	06:15:37	मंगल	शनि	बुध	चंद्र
8	धनु	02:24:47	गुरु	केतु	शुक्र	शनि
9	धनु	26:30:48	गुरु	शुक्र	केतु	शनि
10	मक	22:21:18	शनि	चंद्र	शुक्र	बुध
11	कुंभ	23:01:29	शनि	गुरु	शनि	चंद्र
12	मीन	29:12:21	गुरु	बुध	शनि	चंद्र

भाव कुंडली

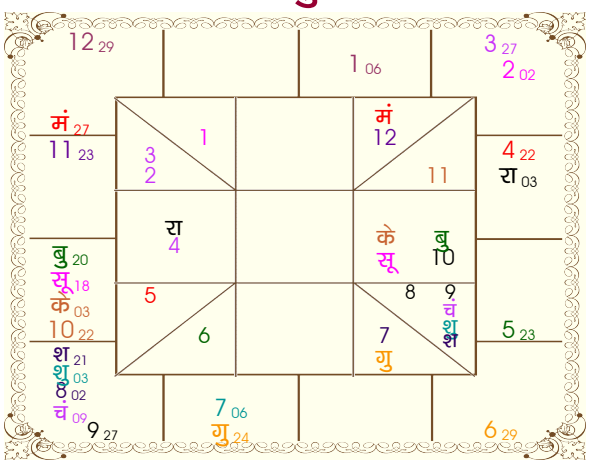

भोग्य दशा काल : केतु 2 वर्ष 7 मास 12 दिन

के.पी. अयनांश : 24:01:04

फॉरच्युना : मीन 09:29:21

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मक	17:56:19	शनि	चंद्र	बुध	बुध
चंद्र		धनु	08:20:59	गुरु	केतु	गुरु	केतु
मंगल		मीन	26:56:06	गुरु	बुध	गुरु	केतु
बुध		मक	19:27:00	शनि	चंद्र	बुध	शनि
गुरु		वृश्चि	23:41:26	मंगल	बुध	मंगल	शनि
शुक्र		धनु	02:48:39	गुरु	केतु	शुक्र	बुध
शनि		धनु	20:51:49	गुरु	शुक्र	गुरु	बुध
राहु		कर्क	02:40:08	चंद्र	गुरु	राहु	शुक्र
केतु		मक	02:40:08	शनि	सूर्य	गुरु	मंगल
हर्ष		मेष	04:45:33	मंगल	केतु	चंद्र	सूर्य
नेप		कुंभ	20:48:51	शनि	गुरु	गुरु	केतु
प्लूटो		धनु	27:31:01	गुरु	सूर्य	चंद्र	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मेष	19:04:42	मंगल	शुक्र	राहु	बुध
2	वृष	17:53:56	शुक्र	चंद्र	बुध	बुध
3	मिथु	12:33:20	बुध	राहु	शनि	गुरु
4	कर्क	07:17:18	चंद्र	शनि	बुध	शनि
5	सिंह	05:42:13	सूर्य	केतु	राहु	राहु
6	कन्या	10:23:49	बुध	चंद्र	चंद्र	गुरु
7	तुला	19:04:42	शुक्र	राहु	चंद्र	शुक्र
8	वृश्चि	17:53:56	मंगल	बुध	बुध	राहु
9	धनु	12:33:20	गुरु	केतु	बुध	राहु
10	मक	07:17:18	शनि	सूर्य	केतु	मंगल
11	कुंभ	05:42:13	शनि	मंगल	चंद्र	मंगल
12	मीन	10:23:49	गुरु	शनि	सूर्य	चंद्र

भाव कुंडली

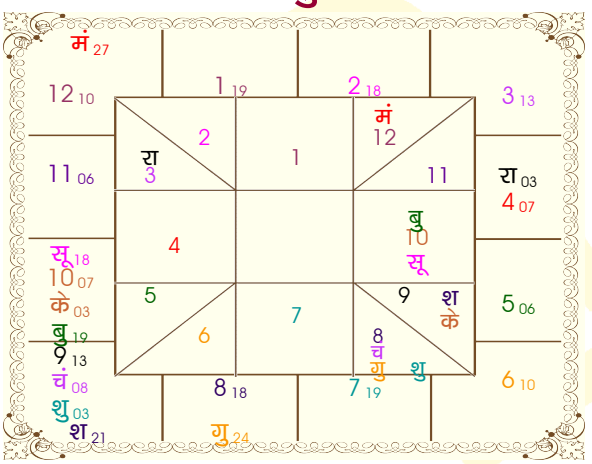

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र- शनि-
2	मंगल- बुध- गुरु-
3	मंगल- बुध- गुरु- राहु,
4	सूर्य- चंद्र- बुध-
5	सूर्य- केतु-
6	मंगल- बुध- गुरु-
7	मंगल- गुरु, राहु,
8	सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु- शुक्र, शनि+ राहु-
9	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु+ शुक्र, राहु- केतु+
10	शनि-
11	मंगल, शनि-
12	गुरु- राहु-

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल-
2	शुक्र- शनि-
3	मंगल- बुध- गुरु- राहु,
4	सूर्य- चंद्र- बुध-
5	सूर्य- केतु-
6	मंगल- बुध- गुरु-
7	शुक्र- शनि-
8	सूर्य, चंद्र, मंगल- बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु,
9	चंद्र, गुरु- शुक्र, शनि, राहु- केतु,
10	सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि- केतु,
11	शनि-
12	मंगल, गुरु- राहु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4- 5- 8, 9,
चंद्र	4- 8, 9,
मंगल	2- 3- 6- 7- 9, 11,
बुध	2- 3- 4- 6- 8, 9,
गुरु	2- 3- 6- 7, 8- 9+ 12-
शुक्र	1- 8, 9,
शनि	1- 8+ 10- 11-
राहु	3, 7, 8- 9- 12-
केतु	5- 9+

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4- 5- 8, 10,
चंद्र	4- 8, 9,
मंगल	1- 3- 6- 8- 10, 12,
बुध	3- 4- 6- 8, 10,
गुरु	3- 6- 8, 9- 10, 12-
शुक्र	2- 7- 8, 9,
शनि	2- 7- 8, 9, 10- 11-
राहु	3, 8, 9- 12-
केतु	5- 9, 10,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	सूर्य
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	केतु
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	शुक्र
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	केतु
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	शुक्र
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

RATNA JYOTI

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

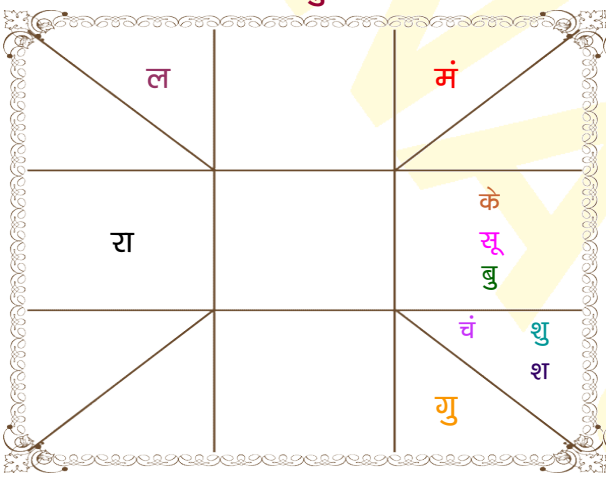

देह विचारः

लग्न कुंडली

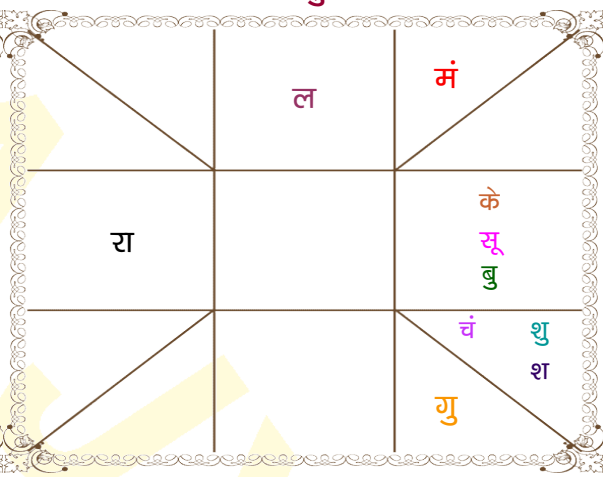

देह विचारः

होरा कुंडली

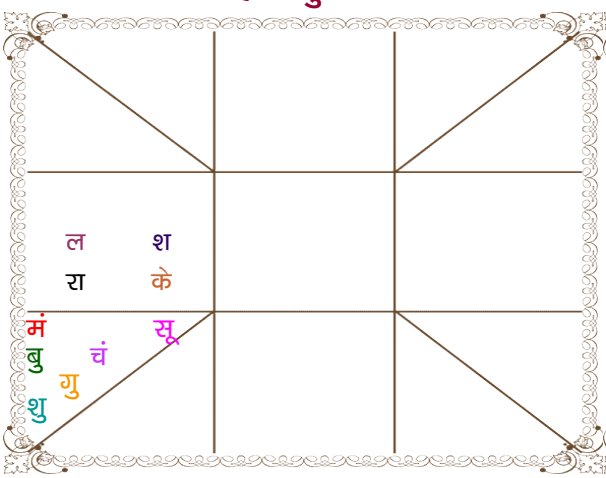

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

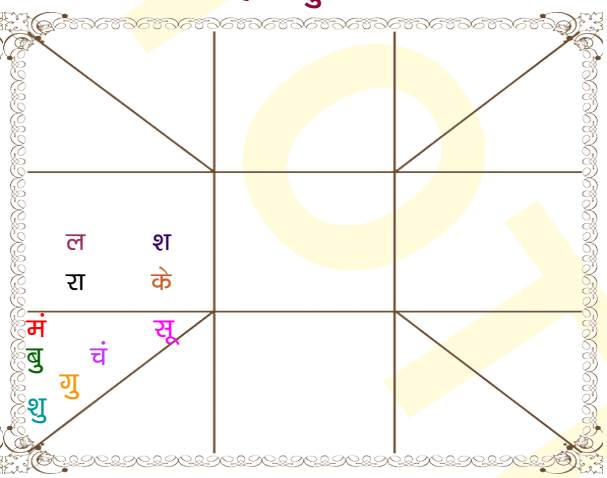

सम्पदाविचारः

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

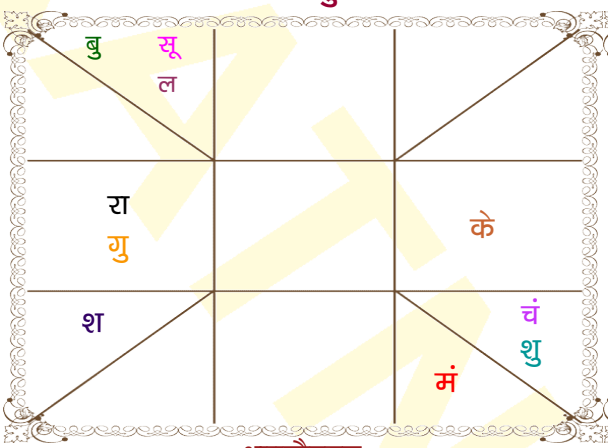

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

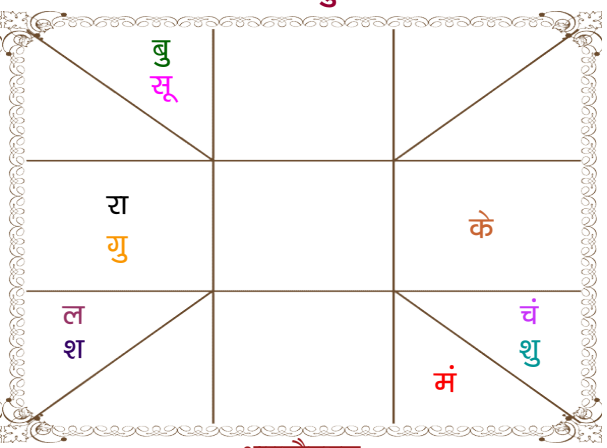

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

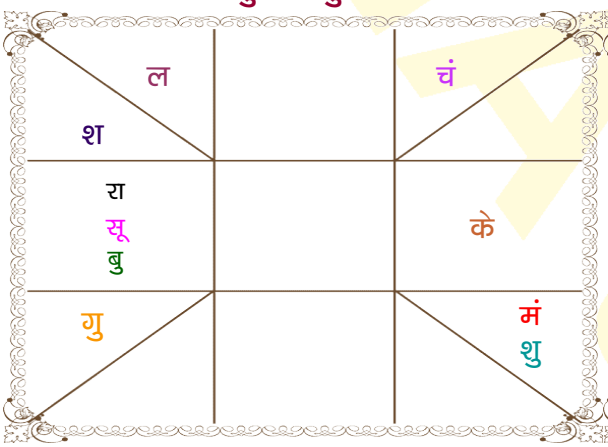

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

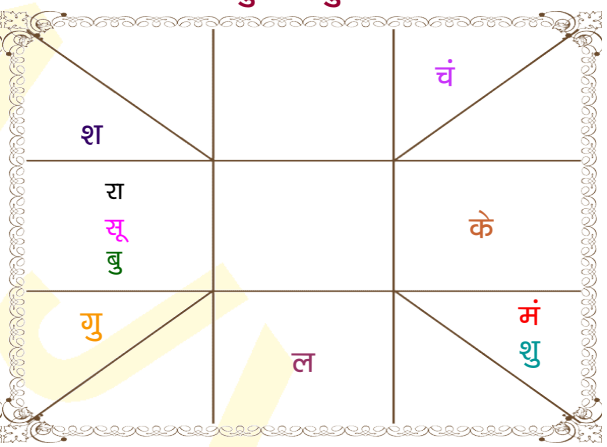

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

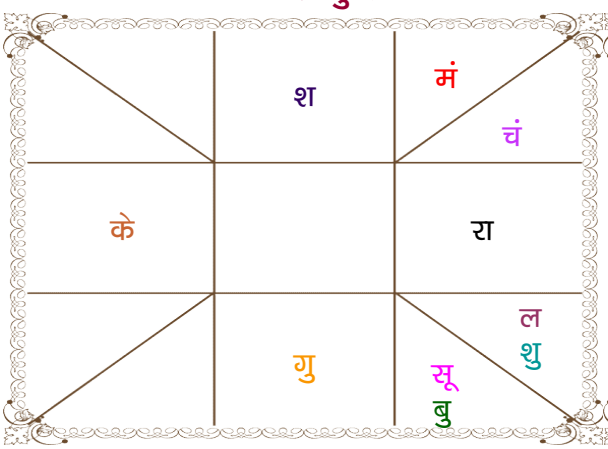

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

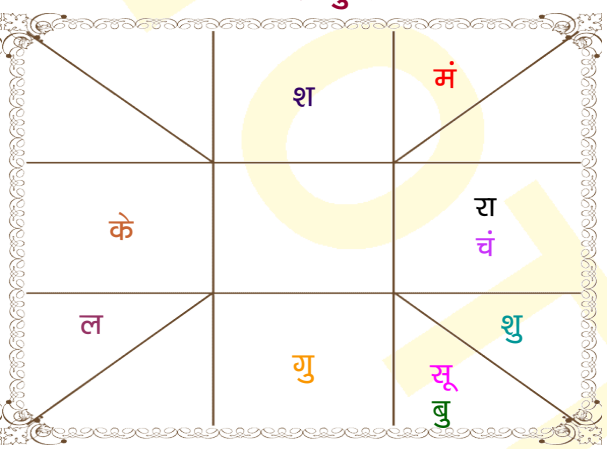

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

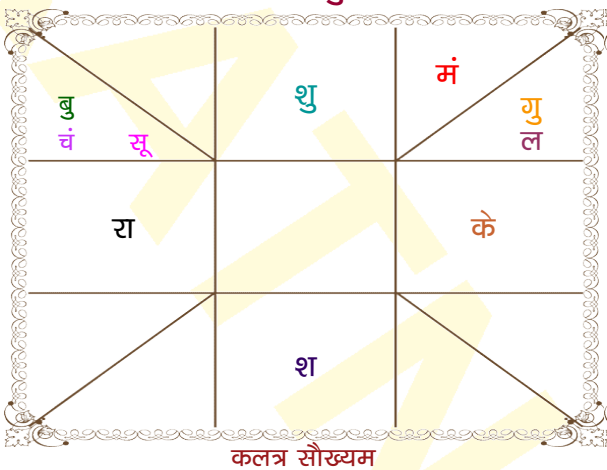

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

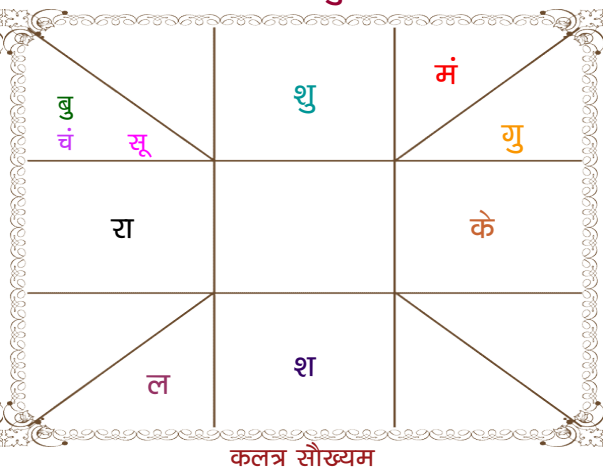

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

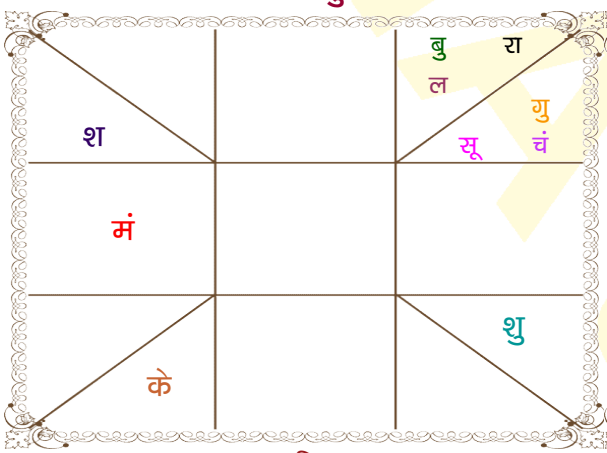

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

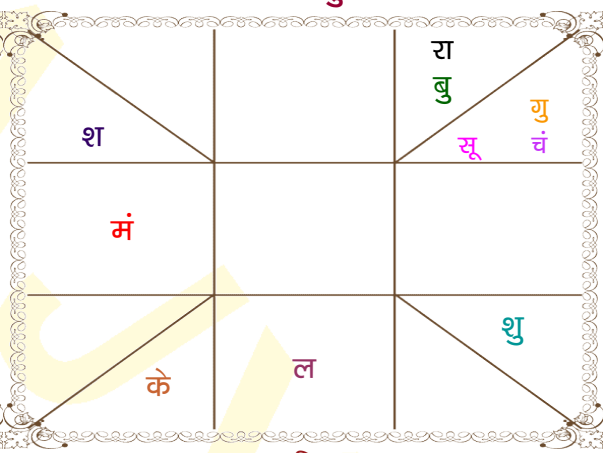

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

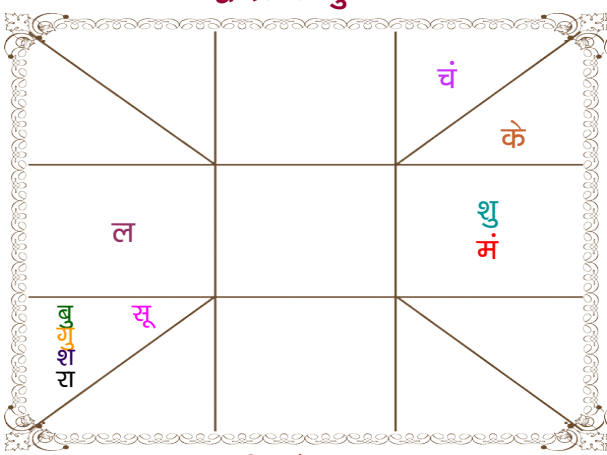

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

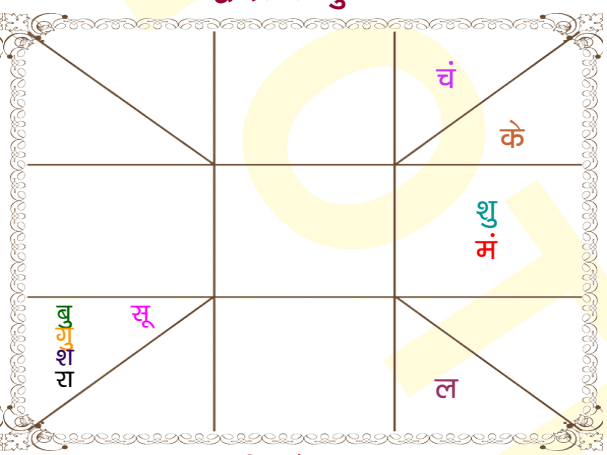

पितृसौख्यम

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

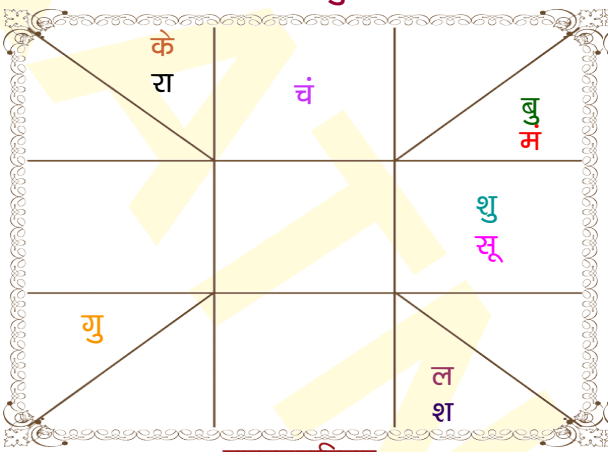

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

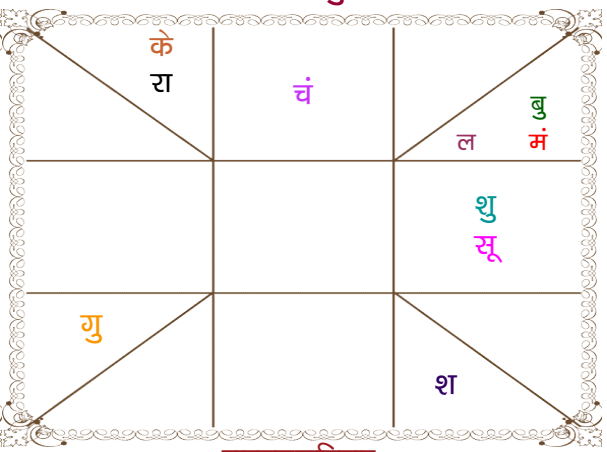

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

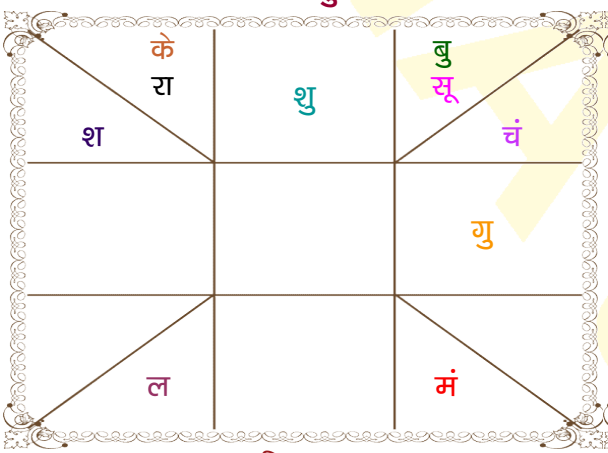

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

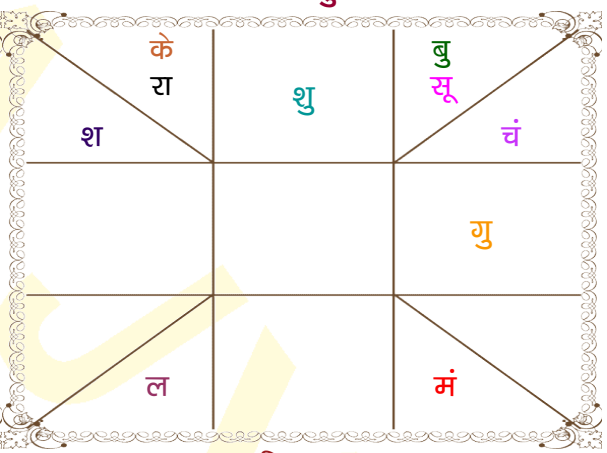

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

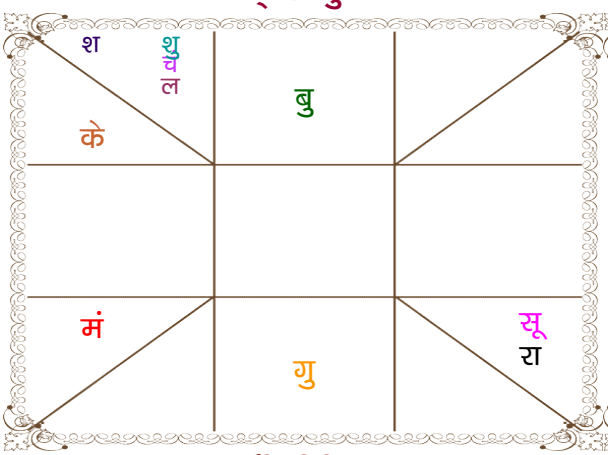

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

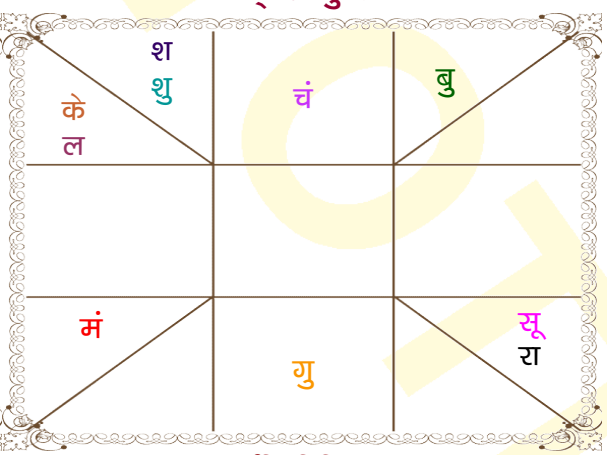

सर्वास्थितिविचारः

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - PijushNandi

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	---	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - mun

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	---	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

RATNA JYOTI

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	4
लग्न	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	3	3	5	4	3	4	4	3	6	6	4	3	48

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	6
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
बुध	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	1	7
गुरु	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	4
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	3
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
कुल	3	3	5	4	2	7	5	4	3	4	3	5	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	7
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	1	7
सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	6
शुक्र	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	7
बुध	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
कुल	2	2	5	4	4	5	4	4	5	3	7	4	49

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
सूर्य	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	6
चंद्र	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	0	6
मंगल	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	8
गुरु	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	0	7
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	7
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
कुल	4	5	5	3	5	4	6	4	2	3	5	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	7
गुरु	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
कुल	5	2	5	4	3	2	3	7	3	2	1	2	39

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	5
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
बुध	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
गुरु	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	4
शुक्र	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	4
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	7
कुल	3	4	5	2	2	4	6	3	2	2	2	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	6
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	5	2	6	3	4	6	3	3	6	7	3	6	54

बुध का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
चंद्र	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	6
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
बुध	0	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	4
शुक्र	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	8
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
कुल	4	4	5	4	2	7	6	4	5	6	2	5	54

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

गुरु का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
सूर्य	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	9
शुक्र	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	6
बुध	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	8
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	5
लग्न	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
कुल	5	2	7	5	3	6	5	5	1	5	6	6	56

गुरु का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
बुध	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	6
शनि	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
कुल	7	5	4	2	5	6	6	4	3	7	5	2	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
गुरु	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	5
मंगल	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
कुल	4	4	4	6	3	3	3	6	7	5	3	4	52

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	0	3
चंद्र	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	9
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
बुध	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	1	5
गुरु	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	5
शुक्र	1	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	1	9
शनि	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	7
कुल	4	3	3	6	7	4	3	5	4	3	5	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	3
बुध	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	6
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
कुल	2	2	5	2	3	5	1	3	4	2	7	3	39

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
बुध	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	6
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
शुक्र	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
कुल	4	4	2	3	3	3	6	3	2	3	5	1	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
गुरु	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
मंगल	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
शुक्र	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	0	8
बुध	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	2	3	4	3	6	3	5	3	6	6	4	49

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
सूर्य	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
मंगल	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
बुध	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
गुरु	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
शुक्र	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	8
शनि	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
कुल	4	4	3	2	4	4	5	3	5	4	6	5	49

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

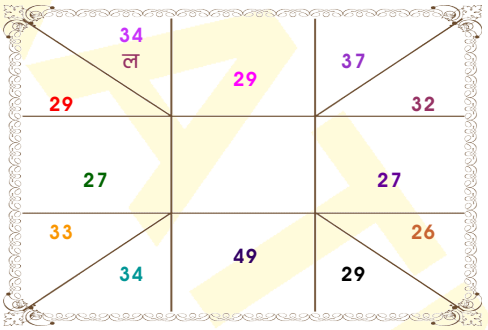

सर्वाष्टकवर्ग

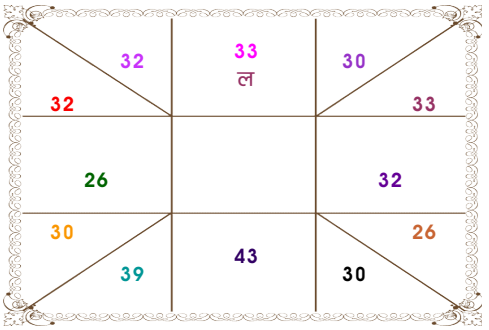

PijushNandi

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	5	1	3	4	2	7	3	2	2	5	2	39
गुरु	6	5	5	1	5	6	6	5	2	7	5	3	56
मंगल	2	5	4	3	2	3	7	3	2	1	2	5	39
सूर्य	4	3	4	4	3	6	6	4	3	3	3	5	48
शुक्र	3	3	3	6	7	5	3	4	4	4	4	6	52
बुध	3	4	6	3	3	6	7	3	6	5	2	6	54
चंद्र	4	5	4	4	5	3	7	4	2	2	5	4	49
लग्न	4	4	2	3	4	3	6	3	5	3	6	6	49
बिन्दु	29	34	29	27	33	34	49	29	26	27	32	37	386
रेखा	35	30	35	37	31	30	15	35	38	37	32	27	382

mun

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	4	4	3	2	4	4	5	3	5	4	6	5	49
सूर्य	3	3	5	4	2	7	5	4	3	4	3	5	48
चंद्र	4	5	5	3	5	4	6	4	2	3	5	3	49
मंगल	3	4	5	2	2	4	6	3	2	2	2	4	39
बुध	4	4	5	4	2	7	6	4	5	6	2	5	54
गुरु	7	5	4	2	5	6	6	4	3	7	5	2	56
शुक्र	4	3	3	6	7	4	3	5	4	3	5	5	52
शनि	4	4	2	3	3	3	6	3	2	3	5	1	39
बिन्दु	33	32	32	26	30	39	43	30	26	32	33	30	386
रेखा	31	32	32	38	34	25	21	34	38	32	31	34	382

शोध्य पिंड - PijushNandi

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	106	53	60	92	129	108	96	127
ग्रह पिंड	41	8	0	16	85	76	43	10
शोध्य पिंड	147	61	60	108	214	184	139	137

शोध्य पिंड - mun

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	100	73	67	92	91	79	61	84
ग्रह पिंड	51	35	10	26	79	40	0	20
शोध्य पिंड	151	108	77	118	170	119	61	104

विंशोत्तरी दशा

केतु 2 वर्ष 4 मास 5 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
01/02/2019		08/06/2021		08/06/2041	
08/06/2021		08/06/2041		08/06/2047	
	00/00/0000	शुक्र	07/10/2024	सूर्य	25/09/2041
	00/00/0000	सूर्य	07/10/2025	चंद्र	27/03/2042
	00/00/0000	चंद्र	08/06/2027	मंगल	02/08/2042
	00/00/0000	मंगल	07/08/2028	राहु	26/06/2043
	00/00/0000	राहु	08/08/2031	गुरु	14/04/2044
	01/02/2019	गुरु	08/04/2034	शनि	27/03/2045
गुरु	03/05/2019	शनि	08/06/2037	बुध	31/01/2046
शनि	10/06/2020	बुध	07/04/2040	केतु	08/06/2046
बुध	08/06/2021	केतु	08/06/2041	शुक्र	08/06/2047

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
08/06/2047		08/06/2057		07/06/2064	
08/06/2057		07/06/2064		08/06/2082	
चंद्र	07/04/2048	मंगल	04/11/2057	राहु	19/02/2067
मंगल	07/11/2048	राहु	22/11/2058	गुरु	14/07/2069
राहु	08/05/2050	गुरु	29/10/2059	शनि	20/05/2072
गुरु	07/09/2051	शनि	07/12/2060	बुध	07/12/2074
शनि	08/04/2053	बुध	04/12/2061	केतु	26/12/2075
बुध	07/09/2054	केतु	02/05/2062	शुक्र	26/12/2078
केतु	08/04/2055	शुक्र	02/07/2063	सूर्य	19/11/2079
शुक्र	07/12/2056	सूर्य	07/11/2063	चंद्र	20/05/2081
सूर्य	08/06/2057	चंद्र	07/06/2064	मंगल	08/06/2082

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
08/06/2082		08/06/2098		09/06/2117	
08/06/2098		09/06/2117		09/06/2134	
गुरु	26/07/2084	शनि	12/06/2101	बुध	05/11/2119
शनि	06/02/2087	बुध	20/02/2104	केतु	01/11/2120
बुध	14/05/2089	केतु	31/03/2105	शुक्र	02/09/2123
केतु	20/04/2090	शुक्र	30/05/2108	सूर्य	09/07/2124
शुक्र	19/12/2092	सूर्य	12/05/2109	चंद्र	08/12/2125
सूर्य	07/10/2093	चंद्र	12/12/2110	मंगल	05/12/2126
चंद्र	06/02/2095	मंगल	20/01/2112	राहु	24/06/2129
मंगल	13/01/2096	राहु	26/11/2114	गुरु	30/09/2131
राहु	08/06/2098	गुरु	09/06/2117	शनि	09/06/2134

केतु 2 वर्ष 7 मास 12 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
01/02/2019		14/09/2021		14/09/2041	
14/09/2021		14/09/2041		14/09/2047	
	00/00/0000	शुक्र	13/01/2025	सूर्य	01/01/2042
	00/00/0000	सूर्य	13/01/2026	चंद्र	03/07/2042
	00/00/0000	चंद्र	14/09/2027	मंगल	08/11/2042
	00/00/0000	मंगल	13/11/2028	राहु	02/10/2043
	00/00/0000	राहु	14/11/2031	गुरु	21/07/2044
	01/02/2019	गुरु	15/07/2034	शनि	03/07/2045
गुरु	09/08/2019	शनि	14/09/2037	बुध	09/05/2046
शनि	16/09/2020	बुध	15/07/2040	केतु	14/09/2046
बुध	14/09/2021	केतु	14/09/2041	शुक्र	14/09/2047

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
14/09/2047		14/09/2057		13/09/2064	
14/09/2057		13/09/2064		14/09/2082	
चंद्र	15/07/2048	मंगल	10/02/2058	राहु	28/05/2067
मंगल	13/02/2049	राहु	28/02/2059	गुरु	20/10/2069
राहु	14/08/2050	गुरु	04/02/2060	शनि	26/08/2072
गुरु	14/12/2051	शनि	15/03/2061	बुध	16/03/2075
शनि	15/07/2053	बुध	12/03/2062	केतु	02/04/2076
बुध	14/12/2054	केतु	08/08/2062	शुक्र	03/04/2079
केतु	15/07/2055	शुक्र	08/10/2063	सूर्य	25/02/2080
शुक्र	15/03/2057	सूर्य	13/02/2064	चंद्र	26/08/2081
सूर्य	14/09/2057	चंद्र	13/09/2064	मंगल	14/09/2082

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
14/09/2082		14/09/2098		15/09/2117	
14/09/2098		15/09/2117		15/09/2134	
गुरु	01/11/2084	शनि	18/09/2101	बुध	11/02/2120
शनि	15/05/2087	बुध	28/05/2104	केतु	07/02/2121
बुध	20/08/2089	केतु	07/07/2105	शुक्र	09/12/2123
केतु	27/07/2090	शुक्र	05/09/2108	सूर्य	15/10/2124
शुक्र	27/03/2093	सूर्य	18/08/2109	चंद्र	16/03/2126
सूर्य	13/01/2094	चंद्र	20/03/2111	मंगल	13/03/2127
चंद्र	15/05/2095	मंगल	27/04/2112	राहु	30/09/2129
मंगल	20/04/2096	राहु	04/03/2115	गुरु	06/01/2132
राहु	14/09/2098	गुरु	15/09/2117	शनि	15/09/2134

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
01/02/2019		03/05/2019		10/06/2020	
03/05/2019		10/06/2020		08/06/2021	
	00/00/0000	शनि	06/07/2019	बुध	01/08/2020
	00/00/0000	बुध	01/09/2019	केतु	22/08/2020
	00/00/0000	केतु	25/09/2019	शुक्र	21/10/2020
	00/00/0000	शुक्र	01/12/2019	सूर्य	08/11/2020
	00/00/0000	सूर्य	21/12/2019	चंद्र	08/12/2020
	01/02/2019	चंद्र	24/01/2020	मंगल	30/12/2020
चंद्र	21/02/2019	मंगल	17/02/2020	राहु	22/02/2021
मंगल	12/03/2019	राहु	17/04/2020	गुरु	11/04/2021
राहु	03/05/2019	गुरु	10/06/2020	शनि	08/06/2021

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
01/02/2019		09/08/2019		16/09/2020	
09/08/2019		16/09/2020		14/09/2021	
	00/00/0000	शनि	12/10/2019	बुध	07/11/2020
	00/00/0000	बुध	08/12/2019	केतु	28/11/2020
	01/02/2019	केतु	01/01/2020	शुक्र	27/01/2021
केतु	16/02/2019	शुक्र	08/03/2020	सूर्य	14/02/2021
शुक्र	14/04/2019	सूर्य	28/03/2020	चंद्र	17/03/2021
सूर्य	01/05/2019	चंद्र	01/05/2020	मंगल	07/04/2021
चंद्र	30/05/2019	मंगल	25/05/2020	राहु	31/05/2021
मंगल	18/06/2019	राहु	24/07/2020	गुरु	18/07/2021
राहु	09/08/2019	गुरु	16/09/2020	शनि	14/09/2021

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
08/06/2021		07/10/2024		07/10/2025	
07/10/2024		07/10/2025		08/06/2027	
शुक्र	28/12/2021	सूर्य	25/10/2024	चंद्र	27/11/2025
सूर्य	26/02/2022	चंद्र	25/11/2024	मंगल	02/01/2026
चंद्र	08/06/2022	मंगल	16/12/2024	राहु	03/04/2026
मंगल	18/08/2022	राहु	09/02/2025	गुरु	23/06/2026
राहु	16/02/2023	गुरु	30/03/2025	शनि	27/09/2026
गुरु	29/07/2023	शनि	26/05/2025	बुध	23/12/2026
शनि	07/02/2024	बुध	17/07/2025	केतु	27/01/2027
बुध	28/07/2024	केतु	07/08/2025	शुक्र	09/05/2027
केतु	07/10/2024	शुक्र	07/10/2025	सूर्य	08/06/2027

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
14/09/2021		13/01/2025		13/01/2026	
13/01/2025		13/01/2026		14/09/2027	
शुक्र	05/04/2022	सूर्य	31/01/2025	चंद्र	05/03/2026
सूर्य	04/06/2022	चंद्र	03/03/2025	मंगल	10/04/2026
चंद्र	14/09/2022	मंगल	24/03/2025	राहु	10/07/2026
मंगल	24/11/2022	राहु	18/05/2025	गुरु	29/09/2026
राहु	26/05/2023	गुरु	06/07/2025	शनि	03/01/2027
गुरु	04/11/2023	शनि	01/09/2025	बुध	31/03/2027
शनि	15/05/2024	बुध	23/10/2025	केतु	05/05/2027
बुध	03/11/2024	केतु	14/11/2025	शुक्र	15/08/2027
केतु	13/01/2025	शुक्र	13/01/2026	सूर्य	14/09/2027

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
08/06/2027		07/08/2028		08/08/2031	
07/08/2028		08/08/2031		08/04/2034	
मंगल	03/07/2027	राहु	19/01/2029	गुरु	16/12/2031
राहु	05/09/2027	गुरु	14/06/2029	शनि	18/05/2032
गुरु	01/11/2027	शनि	04/12/2029	बुध	03/10/2032
शनि	07/01/2028	बुध	08/05/2030	केतु	29/11/2032
बुध	08/03/2028	केतु	11/07/2030	शुक्र	10/05/2033
केतु	01/04/2028	शुक्र	10/01/2031	सूर्य	28/06/2033
शुक्र	11/06/2028	सूर्य	06/03/2031	चंद्र	17/09/2033
सूर्य	03/07/2028	चंद्र	05/06/2031	मंगल	13/11/2033
चंद्र	07/08/2028	मंगल	08/08/2031	राहु	08/04/2034

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
14/09/2027		13/11/2028		14/11/2031	
13/11/2028		14/11/2031		15/07/2034	
मंगल	09/10/2027	राहु	27/04/2029	गुरु	23/03/2032
राहु	12/12/2027	गुरु	20/09/2029	शनि	24/08/2032
गुरु	07/02/2028	शनि	12/03/2030	बुध	09/01/2033
शनि	14/04/2028	बुध	14/08/2030	केतु	07/03/2033
बुध	14/06/2028	केतु	17/10/2030	शुक्र	16/08/2033
केतु	08/07/2028	शुक्र	18/04/2031	सूर्य	04/10/2033
शुक्र	17/09/2028	सूर्य	12/06/2031	चंद्र	24/12/2033
सूर्य	09/10/2028	चंद्र	11/09/2031	मंगल	19/02/2034
चंद्र	13/11/2028	मंगल	14/11/2031	राहु	15/07/2034

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
08/04/2034		08/06/2037		07/04/2040	
08/06/2037		07/04/2040		08/06/2041	
शनि	08/10/2034	बुध	01/11/2037	केतु	02/05/2040
बुध	21/03/2035	केतु	01/01/2038	शुक्र	12/07/2040
केतु	27/05/2035	शुक्र	22/06/2038	सूर्य	03/08/2040
शुक्र	06/12/2035	सूर्य	13/08/2038	चंद्र	07/09/2040
सूर्य	02/02/2036	चंद्र	07/11/2038	मंगल	02/10/2040
चंद्र	08/05/2036	मंगल	06/01/2039	राहु	05/12/2040
मंगल	15/07/2036	राहु	11/06/2039	गुरु	31/01/2041
राहु	04/01/2037	गुरु	27/10/2039	शनि	08/04/2041
गुरु	08/06/2037	शनि	07/04/2040	बुध	08/06/2041

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
15/07/2034		14/09/2037		15/07/2040	
14/09/2037		15/07/2040		14/09/2041	
शनि	14/01/2035	बुध	07/02/2038	केतु	08/08/2040
बुध	27/06/2035	केतु	09/04/2038	शुक्र	18/10/2040
केतु	02/09/2035	शुक्र	28/09/2038	सूर्य	09/11/2040
शुक्र	13/03/2036	सूर्य	19/11/2038	चंद्र	14/12/2040
सूर्य	10/05/2036	चंद्र	13/02/2039	मंगल	08/01/2041
चंद्र	14/08/2036	मंगल	14/04/2039	राहु	13/03/2041
मंगल	21/10/2036	राहु	17/09/2039	गुरु	09/05/2041
राहु	12/04/2037	गुरु	02/02/2040	शनि	15/07/2041
गुरु	14/09/2037	शनि	15/07/2040	बुध	14/09/2041

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
08/06/2041		25/09/2041		27/03/2042	
25/09/2041		27/03/2042		02/08/2042	
सूर्य	13/06/2041	चंद्र	10/10/2041	मंगल	03/04/2042
चंद्र	22/06/2041	मंगल	21/10/2041	राहु	22/04/2042
मंगल	29/06/2041	राहु	17/11/2041	गुरु	09/05/2042
राहु	15/07/2041	गुरु	12/12/2041	शनि	30/05/2042
गुरु	30/07/2041	शनि	10/01/2042	बुध	17/06/2042
शनि	16/08/2041	बुध	05/02/2042	केतु	24/06/2042
बुध	01/09/2041	केतु	15/02/2042	शुक्र	16/07/2042
केतु	07/09/2041	शुक्र	18/03/2042	सूर्य	22/07/2042
शुक्र	25/09/2041	सूर्य	27/03/2042	चंद्र	02/08/2042

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
14/09/2041		01/01/2042		03/07/2042	
01/01/2042		03/07/2042		08/11/2042	
सूर्य	19/09/2041	चंद्र	16/01/2042	मंगल	10/07/2042
चंद्र	28/09/2041	मंगल	27/01/2042	राहु	29/07/2042
मंगल	05/10/2041	राहु	23/02/2042	गुरु	16/08/2042
राहु	21/10/2041	गुरु	20/03/2042	शनि	05/09/2042
गुरु	05/11/2041	शनि	18/04/2042	बुध	23/09/2042
शनि	22/11/2041	बुध	14/05/2042	केतु	30/09/2042
बुध	08/12/2041	केतु	24/05/2042	शुक्र	22/10/2042
केतु	14/12/2041	शुक्र	24/06/2042	सूर्य	28/10/2042
शुक्र	01/01/2042	सूर्य	03/07/2042	चंद्र	08/11/2042

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
02/08/2042		26/06/2043		14/04/2044	
26/06/2043		14/04/2044		27/03/2045	
राहु	20/09/2042	गुरु	04/08/2043	शनि	07/06/2044
गुरु	03/11/2042	शनि	20/09/2043	बुध	27/07/2044
शनि	25/12/2042	बुध	31/10/2043	केतु	16/08/2044
बुध	09/02/2043	केतु	17/11/2043	शुक्र	13/10/2044
केतु	01/03/2043	शुक्र	05/01/2044	सूर्य	30/10/2044
शुक्र	24/04/2043	सूर्य	19/01/2044	चंद्र	28/11/2044
सूर्य	11/05/2043	चंद्र	13/02/2044	मंगल	18/12/2044
चंद्र	07/06/2043	मंगल	01/03/2044	राहु	08/02/2045
मंगल	26/06/2043	राहु	14/04/2044	गुरु	27/03/2045

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
08/11/2042		02/10/2043		21/07/2044	
02/10/2043		21/07/2044		03/07/2045	
राहु	27/12/2042	गुरु	10/11/2043	शनि	14/09/2044
गुरु	09/02/2043	शनि	27/12/2043	बुध	02/11/2044
शनि	02/04/2043	बुध	06/02/2044	केतु	22/11/2044
बुध	18/05/2043	केतु	23/02/2044	शुक्र	19/01/2045
केतु	07/06/2043	शुक्र	12/04/2044	सूर्य	05/02/2045
शुक्र	31/07/2043	सूर्य	26/04/2044	चंद्र	06/03/2045
सूर्य	17/08/2043	चंद्र	21/05/2044	मंगल	26/03/2045
चंद्र	13/09/2043	मंगल	07/06/2044	राहु	17/05/2045
मंगल	02/10/2043	राहु	21/07/2044	गुरु	03/07/2045

योगिनी दशा

उल्का 2 वर्ष 0 मास 4 दिन

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
01/02/2019		05/02/2021		06/02/2028	
05/02/2021		06/02/2028		06/02/2036	
	00/00/0000	सिद्ध	17/06/2022	संक	16/11/2029
	00/00/0000	संक	06/01/2024	मंग	05/02/2030
	00/00/0000	मंग	17/03/2024	पिंग	18/07/2030
	01/02/2019	पिंग	06/08/2024	धांय	18/03/2031
पिंग	06/02/2019	धांय	08/03/2025	भ्राम	06/02/2032
धांय	07/08/2019	भ्राम	17/12/2025	भद्रि	18/03/2033
भ्राम	07/04/2020	भद्रि	07/12/2026	उल्क	18/07/2034
भद्रि	05/02/2021	उल्क	06/02/2028	सिद्ध	06/02/2036

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
06/02/2036		05/02/2037		06/02/2039	
05/02/2037		06/02/2039		05/02/2042	
मंग	16/02/2036	पिंग	18/03/2037	धांय	08/05/2039
पिंग	07/03/2036	धांय	18/05/2037	भ्राम	07/09/2039
धांय	07/04/2036	भ्राम	07/08/2037	भद्रि	06/02/2040
भ्राम	17/05/2036	भद्रि	16/11/2037	उल्क	06/08/2040
भद्रि	07/07/2036	उल्क	18/03/2038	सिद्ध	08/03/2041
उल्क	06/09/2036	सिद्ध	07/08/2038	संक	06/11/2041
सिद्ध	16/11/2036	संक	16/01/2039	मंग	06/12/2041
संक	05/02/2037	मंग	06/02/2039	पिंग	05/02/2042

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
05/02/2042		05/02/2046		06/02/2051	
05/02/2046		06/02/2051		05/02/2057	
भ्राम	18/07/2042	भद्रि	17/10/2046	उल्क	06/02/2052
भद्रि	06/02/2043	उल्क	17/08/2047	सिद्ध	07/04/2053
उल्क	07/10/2043	सिद्ध	06/08/2048	संक	07/08/2054
सिद्ध	17/07/2044	संक	16/09/2049	मंग	07/10/2054
संक	07/06/2045	मंग	06/11/2049	पिंग	06/02/2055
मंग	17/07/2045	पिंग	15/02/2050	धांय	07/08/2055
पिंग	07/10/2045	धांय	18/07/2050	भ्राम	07/04/2056
धांय	05/02/2046	भ्राम	06/02/2051	भद्रि	05/02/2057

उल्का 2 वर्ष 2 मास 27 दिन

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
01/02/2019		30/04/2021		30/04/2028	
30/04/2021		30/04/2028		30/04/2036	
	00/00/0000	सिद्ध	09/09/2022	संक	08/02/2030
	00/00/0000	संक	30/03/2024	मंग	30/04/2030
	00/00/0000	मंग	09/06/2024	पिंग	10/10/2030
	01/02/2019	पिंग	29/10/2024	धांय	10/06/2031
पिंग	01/05/2019	धांय	31/05/2025	भ्राम	30/04/2032
धांय	30/10/2019	भ्राम	11/03/2026	भद्रि	10/06/2033
भ्राम	30/06/2020	भद्रि	01/03/2027	उल्क	10/10/2034
भद्रि	30/04/2021	उल्क	30/04/2028	सिद्ध	30/04/2036

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
30/04/2036		30/04/2037		01/05/2039	
30/04/2037		01/05/2039		30/04/2042	
मंग	10/05/2036	पिंग	10/06/2037	धांय	31/07/2039
पिंग	30/05/2036	धांय	10/08/2037	भ्राम	30/11/2039
धांय	30/06/2036	भ्राम	30/10/2037	भद्रि	30/04/2040
भ्राम	09/08/2036	भद्रि	08/02/2038	उल्क	29/10/2040
भद्रि	29/09/2036	उल्क	10/06/2038	सिद्ध	31/05/2041
उल्क	29/11/2036	सिद्ध	30/10/2038	संक	29/01/2042
सिद्ध	08/02/2037	संक	10/04/2039	मंग	28/02/2042
संक	30/04/2037	मंग	01/05/2039	पिंग	30/04/2042

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
30/04/2042		30/04/2046		01/05/2051	
30/04/2046		01/05/2051		30/04/2057	
भ्राम	10/10/2042	भद्रि	09/01/2047	उल्क	30/04/2052
भद्रि	01/05/2043	उल्क	09/11/2047	सिद्ध	30/06/2053
उल्क	30/12/2043	सिद्ध	29/10/2048	संक	30/10/2054
सिद्ध	09/10/2044	संक	09/12/2049	मंग	30/12/2054
संक	30/08/2045	मंग	29/01/2050	पिंग	01/05/2055
मंग	09/10/2045	पिंग	10/05/2050	धांय	30/10/2055
पिंग	30/12/2045	धांय	10/10/2050	भ्राम	30/06/2056
धांय	30/04/2046	भ्राम	01/05/2051	भद्रि	30/04/2057

योगिनी दशा

उल्का 2 वर्ष 0 मास 4 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
05/02/2057		06/02/2064		06/02/2072	
06/02/2064		06/02/2072		05/02/2073	
सिद्ध	17/06/2058	संक	16/11/2065	मंग	16/02/2072
संक	06/01/2060	मंग	05/02/2066	पिंग	07/03/2072
मंग	17/03/2060	पिंग	18/07/2066	धांय	07/04/2072
पिंग	06/08/2060	धांय	18/03/2067	भ्राम	17/05/2072
धांय	08/03/2061	भ्राम	06/02/2068	भद्रि	07/07/2072
भ्राम	17/12/2061	भद्रि	18/03/2069	उल्क	06/09/2072
भद्रि	07/12/2062	उल्क	18/07/2070	सिद्ध	16/11/2072
उल्क	06/02/2064	सिद्ध	06/02/2072	संक	05/02/2073

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
05/02/2073		06/02/2075		05/02/2078	
06/02/2075		05/02/2078		05/02/2082	
पिंग	18/03/2073	धांय	08/05/2075	भ्राम	18/07/2078
धांय	18/05/2073	भ्राम	07/09/2075	भद्रि	06/02/2079
भ्राम	07/08/2073	भद्रि	06/02/2076	उल्क	07/10/2079
भद्रि	16/11/2073	उल्क	06/08/2076	सिद्ध	17/07/2080
उल्क	18/03/2074	सिद्ध	08/03/2077	संक	07/06/2081
सिद्ध	07/08/2074	संक	06/11/2077	मंग	17/07/2081
संक	16/01/2075	मंग	06/12/2077	पिंग	07/10/2081
मंग	06/02/2075	पिंग	05/02/2078	धांय	05/02/2082

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
05/02/2082		06/02/2087		05/02/2093	
06/02/2087		05/02/2093		06/02/2100	
भद्रि	17/10/2082	उल्क	06/02/2088	सिद्ध	17/06/2094
उल्क	17/08/2083	सिद्ध	07/04/2089	संक	06/01/2096
सिद्ध	06/08/2084	संक	07/08/2090	मंग	17/03/2096
संक	16/09/2085	मंग	07/10/2090	पिंग	06/08/2096
मंग	06/11/2085	पिंग	06/02/2091	धांय	08/03/2097
पिंग	15/02/2086	धांय	07/08/2091	भ्राम	17/12/2097
धांय	18/07/2086	भ्राम	07/04/2092	भद्रि	07/12/2098
भ्राम	06/02/2087	भद्रि	05/02/2093	उल्क	06/02/2100

उल्का 2 वर्ष 2 मास 27 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
30/04/2057		30/04/2064		30/04/2072	
30/04/2064		30/04/2072		30/04/2073	
सिद्ध	09/09/2058	संक	08/02/2066	मंग	10/05/2072
संक	30/03/2060	मंग	30/04/2066	पिंग	30/05/2072
मंग	09/06/2060	पिंग	10/10/2066	धांय	30/06/2072
पिंग	29/10/2060	धांय	10/06/2067	भ्राम	09/08/2072
धांय	31/05/2061	भ्राम	30/04/2068	भद्रि	29/09/2072
भ्राम	11/03/2062	भद्रि	10/06/2069	उल्क	29/11/2072
भद्रि	01/03/2063	उल्क	10/10/2070	सिद्ध	08/02/2073
उल्क	30/04/2064	सिद्ध	30/04/2072	संक	30/04/2073

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
30/04/2073		01/05/2075		30/04/2078	
01/05/2075		30/04/2078		30/04/2082	
पिंग	10/06/2073	धांय	31/07/2075	भ्राम	10/10/2078
धांय	10/08/2073	भ्राम	30/11/2075	भद्रि	01/05/2079
भ्राम	30/10/2073	भद्रि	30/04/2076	उल्क	30/12/2079
भद्रि	08/02/2074	उल्क	29/10/2076	सिद्ध	09/10/2080
उल्क	10/06/2074	सिद्ध	31/05/2077	संक	30/08/2081
सिद्ध	30/10/2074	संक	29/01/2078	मंग	09/10/2081
संक	10/04/2075	मंग	28/02/2078	पिंग	30/12/2081
मंग	01/05/2075	पिंग	30/04/2078	धांय	30/04/2082

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
30/04/2082		01/05/2087		30/04/2093	
01/05/2087		30/04/2093		01/05/2100	
भद्रि	09/01/2083	उल्क	30/04/2088	सिद्ध	09/09/2094
उल्क	09/11/2083	सिद्ध	30/06/2089	संक	30/03/2096
सिद्ध	29/10/2084	संक	30/10/2090	मंग	09/06/2096
संक	09/12/2085	मंग	30/12/2090	पिंग	29/10/2096
मंग	29/01/2086	पिंग	01/05/2091	धांय	31/05/2097
पिंग	10/05/2086	धांय	30/10/2091	भ्राम	11/03/2098
धांय	10/10/2086	भ्राम	30/06/2092	भद्रि	01/03/2099
भ्राम	01/05/2087	भद्रि	30/04/2093	उल्क	01/05/2100

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

1	मूलांक	1
6	भाग्यांक	6
1, 4, 8, 9, 6	मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 6
3, 5,	शत्रु अंक	3, 5,
19,28,37,46,55	शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शनि, बुध, शुक्र	शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शनि, बुध, शुक्र	शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मीन, सिंह	मित्र राशि	मीन, सिंह
सिंह, मकर, मीन	मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
हनुमान	अनुकूल देवता	हनुमान
हीरा	शुभ रत्न	मूंगा
जरकिन, ओपल	शुभ उपरत्न	संगमूंगी
नीलम	भाग्य रत्न	पुखराज
रजत	शुभ धातु	ताम्र
रजत	शुभ रंग	रक्त
दक्षिणपूर्व	शुभ दिशा	दक्षिण
सूर्योदय	शुभ समय	सूर्योदय के बाद
मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन	दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
चावल	दान अन्न	मल्का
दूध	दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

PijushNandi

जीवन रत्नः	हीरा	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
भाग्य रत्नः	नीलम	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
कारक रत्नः	पन्ना	भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
शुभ उपरत्नः	माणिक्य	भाग्योदय, सुख

mun

जीवन रत्नः	मूंगा	कम खर्च, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
भाग्य रत्नः	पुखराज	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, कम खर्च
कारक रत्नः	माणिक्य	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
शुभ उपरत्नः	मोती	भाग्योदय, सुख

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	--- --
साढेसाती द्वितीय ढैया	31/01/2019-18/01/2020
साढेसाती तृतीय ढैया	18/01/2020-21/07/2022
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/03/2025-26/10/2027
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/07/2034-20/08/2036

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती तृतीय ढैया	20/07/2049-17/02/2052
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2054-01/04/2057
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/02/2064-03/10/2065

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	20/04/2073-04/08/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	04/08/2076-03/01/2079
साढेसाती तृतीय ढैया	03/01/2079-18/08/2081
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/03/2084-11/05/2086
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/06/2093-07/08/2095

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	दाम्पत्य कलह
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	धनार्जन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	पराक्रम हानि

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	--- --
साढेसाती द्वितीय ढैया	31/01/2019-18/01/2020
साढेसाती तृतीय ढैया	18/01/2020-21/07/2022
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/03/2025-26/10/2027
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/07/2034-20/08/2036

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती तृतीय ढैया	20/07/2049-17/02/2052
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2054-01/04/2057
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/02/2064-03/10/2065

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	20/04/2073-04/08/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	04/08/2076-03/01/2079
साढेसाती तृतीय ढैया	03/01/2079-18/08/2081
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/03/2084-11/05/2086
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/06/2093-07/08/2095

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	भाग्योदय
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	कम खर्च
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	सुख हानि

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

PijushNandi

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप यज्ञ याजन, दान, भजन, कीर्तन आदि धर्म कार्यों में जातक को अरुचि रहती है। भाग्योदय होने में आंशिक रूप से रूकावटें आती हैं। नौकरी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में थोड़ा व्यवधान उपस्थित होता है। लेकिन जातक को राजकीय सेवा का अवसर भी मिलता है और जातक विदेश गमन करता है, जिसमें थोड़ा बहुत क्लेश उठाना पड़ता है। यश, पद, प्रतिष्ठा व पराक्रम के लिए आंशिक रूप से संघर्ष करना पड़ता है।

इस योग के कारण शारीरिक स्थूलता तथा आलस्य थोड़े दिनों के लिए जातक को घेर लेती है। कभी रोग व्याधि भी पकड़ लेती है जिसमें थोड़ा ज्यादा धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक संकट आ जाता है परन्तु कालान्तर में वे सब हट जाते हैं और आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक को पारिवारिक सदस्यों से किसी समय मनमुटाव हो जाता है। भाई-बहनों से कभी आंशिक क्लेश उठाना पड़ता है। जातक को अपने रिश्तेदार समय पर काम नहीं आते हैं और मित्रगण भी आंशिक रूप में क्लेश पहुँचाते हैं। जातक कानूनी-दस्तावेजों में भावुकतावश हस्ताक्षर कर थोड़ा बहुत नुकसान पाता है और राज्यपक्ष से कभी प्रतिकूलता व निलम्बित होने का भय बना रहता है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। परन्तु जातक के जीवन में एक अच्छा समय भी आता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।

9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

mun

आपकी जन्मकुण्डली में शंखपाल नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्ण रूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। परिणामस्वरूप घर-द्वार जमीन-जायदाद, चल-अचल सम्बन्धी वस्तुओं पर थोड़ा बहुत कठिनाईयाँ आती हैं और उससे जातक को बेवजह चिन्ता कभी-कभी घेर लेती है तथा विद्या प्राप्ति में आंशिक रूप से तकलीफ उठानी पड़ती है।

माता से कोई न कोई किसी समय आंशिक रूप में तकलीफ मिलती है। सवारी एवं नौकरों से भी कोई न कोई परेशानियाँ उपस्थित होती रहती हैं। जिसमें थोड़ा बहुत नुकसान उठाने पड़ते हैं। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी तनावग्रस्त हो जाता है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जातक समय-समय मानसिक रूप से परेशान रहता है। कार्य के क्षेत्र में अनेक विघ्न आते हैं। पर वे सब विघ्न कालान्तर में स्वतः नष्ट हो जाते हैं। बहुत सारे कामों को एक साथ करने के कारण कोई भी काम प्रायः पूरा नहीं हो पाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का आर्थिक संतुलन थोड़ा बहुत बिगड़ जाता है, जिस कारण आर्थिक संकट उपस्थित हो जाता है। लेकिन इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी जातक के व्यवसाय, नौकरी तथा राजनीति के क्षेत्र में बहुत सफलताएँ प्राप्त होती हैं एवं सामाजिक पद प्रतिष्ठा भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।

7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

RATNA JYOTI

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	श्वान	श्वान	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	धनु	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

कुल : **28 / 36**

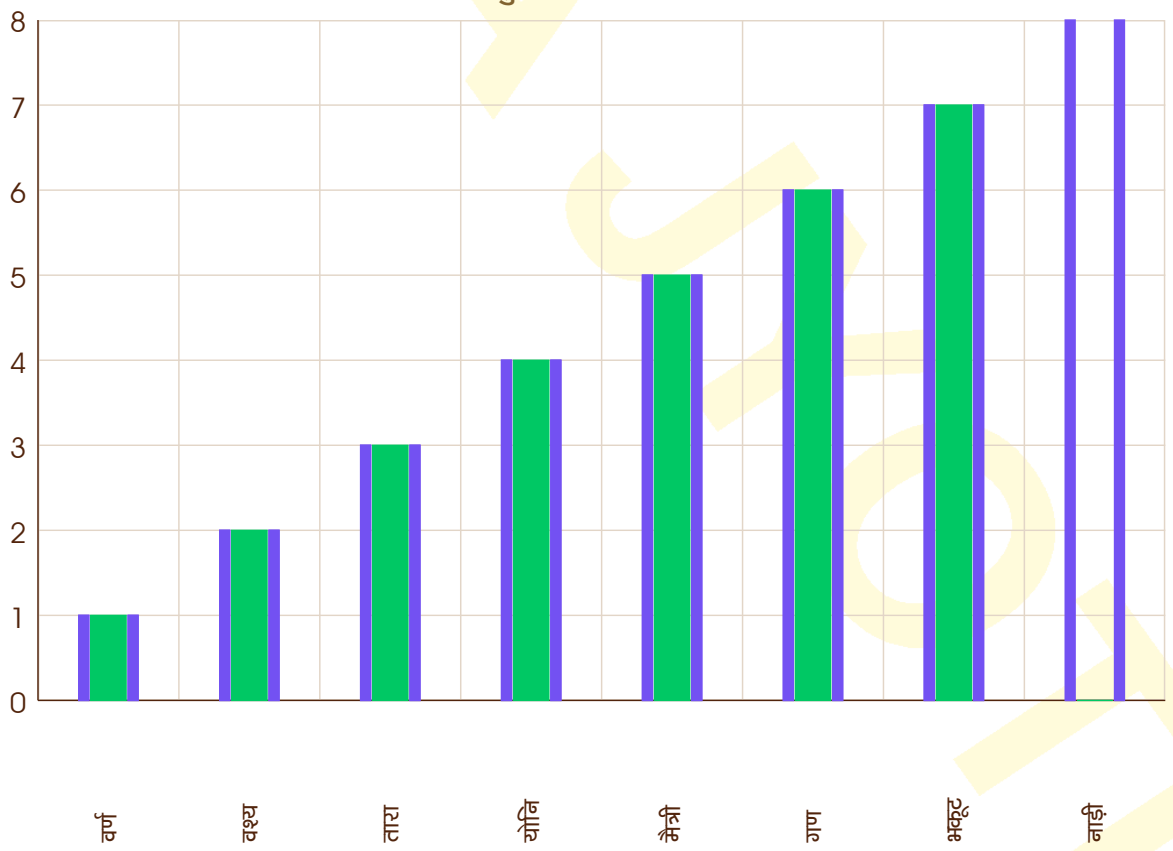

RATNA JYOTI

अष्टकूट मिलान

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के एक ही नक्षत्र एवं एक ही चरण है।

PijushNandi का वर्ग मूषक है तथा mun का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार PijushNandi और mun का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

PijushNandi मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

mun मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु PijushNandi कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

PijushNandi तथा mun में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

मेलापक फलित

स्वभाव

PijushNandi और mun की जन्म राशि अग्नि तत्व युक्त धनु राशि है। अतः इसके प्रभाव से PijushNandi और mun के मध्य स्वभावगत समानताएं विद्यमान होंगी तथा परस्पर संबंधों में भी प्रगाढ़ता रहेगी जिससे वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः यह मिलान उत्तम रहेगा।

PijushNandi और mun की राशि का स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से परस्पर संबधों में मित्रता का भाव रहेगा तथा सच्चे मित्र की तरह एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे। साथ ही एक दूसरे के प्रति हार्दिक प्रेम, सहानुभूति तथा समर्पण का भाव विद्यमान रहेगा एवं सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सुख तथा सहयोग प्रदान करेंगे। ऐसा करने से PijushNandi और mun का वैवाहिक जीवन सुख एवं शांति पूर्ण व्यतीत होगा तथा मधुर स्मृतियों तथा क्षणों की हृदय से आनंद उठाएंगे।

PijushNandi और mun की राशियां परस्पर प्रथम प्रथम - भाव में पड़ती है शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके शुभ प्रभाव से PijushNandi और mun भाग्यशाली सिद्ध होंगे तथा जीवन में इच्छित सुखऐश्वर्य एवं संसाधनों से युक्त होकर उनका उपभोग करेंगे। उनकी परस्पर सामंजस्य की प्रवृति भी होगी तथा एक दूसरे के अस्तित्व एवं स्वतंत्रता का हार्दिक सम्मान करेंगे जिससे PijushNandi और mun का दाम्पत्य जीवन अत्यंत ही शुभ रहेगा तथा शांति पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

PijushNandi और mun दोनों का वश्य मानव है। अतः इनकी अभिरूचियां समान रहेंगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी आवश्यकताएं अनुकूल रहेंगी। फलतः दाम्पत्य संबधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे जिससे जीवन का आनंद बना रहेगा।

PijushNandi एवं mun दोनों का वर्ण क्षत्रिय है। अतः दोनों की कार्य क्षमता बराबर होगी तथा साहसिक एवं पराक्रमी कार्यो को करने में दोनों रूचिशील रहेंगे अतः कार्य क्षेत्र की स्थिति सुदृढ़ रहेगी।

धन

PijushNandi और mun दोनों जनम तारा में उत्पन्न हुए हैं। अतः इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही भकूट सम रहेगा। अतः आर्थिक स्थिति पर भकूट का शुभ या अशुभ कोई प्रभाव नहीं होगा। लेकिन mun पर मंगल का अशुभ प्रभाव होगा जिससे यदा कदा वे हानि या व्यय का सामना कर सकती है परन्तु आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।

PijushNandi और mun दोनों को पैतृक धन या सम्पति की प्राप्ति हो सकती है

तथा धनऐश्वर्य की अभिवृद्धि करने में भी समर्थ होंगे। लेकिन मंगल के अशुभ प्रभाव से mun अनावश्यक व्यय करने में तत्पर रहेंगी जिससे यदा कदा परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अतः mun को चाहिए कि ऐसी प्रवृति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करें।

स्वास्थ्य

PijushNandi और mun दोनों ही आद्य नाड़ी में उत्पन्न हुए है। अतः इन्हें नाड़ी दोष से कष्ट की अनुभूति होगी। आद्य नाड़ी का विशेष प्रभाव PijushNandi के स्वास्थ्य पर होगा। इसके प्रभाव से पक्षाघात आदि से वे कष्ट प्राप्त करेंगे तथा सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम से सम्पन्न होंगे जिससे दाम्पत्य जीवन की खुशी में अल्पता रहेगी। साथ ही मंगल के दुष्प्रभाव से भी PijushNandi को स्वास्थ्य संबधी परेशानियां रहेगी फलतः वे धातु संबंधी रोगों से परेशानी की अनुभूति करेंगे। इससे उनकी संभोग शक्ति भी प्रभावित होगी जिससे दाम्पत्य जीवन में कलह उत्पन्न होगा एवं परस्पर असन्तुष्टि का भाव रहेगा। अतः इसके अशुभ फलों को दूर करने के लिए उन्हें नित्य हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी करने चाहिए। रहेगा। वैसे सामान्यतया ऐसी स्थिति में विवाह की उपेक्षा ही करनी चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से PijushNandi और mun का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त PijushNandi और mun के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में mun के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन mun को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में mun को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से PijushNandi और mun सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार PijushNandi और mun का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

mun के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों के मामलों

में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत mun के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

mun अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल रहेंगी।

इस प्रकार mun के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

PijushNandi तथा उनकी सास के आपसी संबधों में विशेष मधुरता नहीं रहेगी तथा कई मामलों में उनके मध्य काफी प्रबल मतभेद समय समय पर दृष्टि गोचर होंगे। अतः यदि परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता के भाव का प्रदर्शन किया जाय तो इन मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा आपसी संबधों में मधुरता के भाव की वृद्धि होगी जिससे स्नेह एवं सम्मान का भाव बना रहेगा।

लेकिन ससुर के साथ में PijushNandi के संबध अच्छे रहेंगे तथा वह उन्हें अपने पिता की तरह मान सम्मान तथा सेवा का भाव प्रदान करेंगे। साथ ही समयानुसार वह PijushNandi को अपनी ओर से बहुमूल्य तथा आवश्यक सलाह भी प्रदान करते रहेंगे एवं उन्हें अपने पुत्र के समान अपनत्व तथा स्नेह प्रदान करेंगे। साले एवं सालियों के साथ ही PijushNandi के संबध अच्छे रहेंगे तथा उनसे वांछित आदर सहयोग एवं सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी। साथ ही उनसे सामंजस्य का भाव भी रहेगा। इस प्रकार ससुराल का दृष्टिकोण PijushNandi के प्रति अनुकूल ही रहेगा।

RATNA JYOTI

अंक ज्योतिष फल

PijushNandi

आपका जन्म दिनांक एक होने से आपका मूलांक एक होता है। मूलांक एक के प्रभाववश आप एक स्थिर विचारधारा के व्यक्ति हेंगे। अपने निश्चय पर दृढ़ रहेंगे। जीवन में आप जब भी किसी को वचन इत्यादि देंगे उन्हें निभाने की पूर्ण कोशिश करेंगे। इच्छा शक्ति आपकी दृढ़ रहेगी एवं आप अपने मन संबंधों में, मित्रता के संबंधों में स्थायित्व रहेगा। लम्बे समय तक जो भी विचार बना लेंगे उनका पालन करने की निरंतर कोशिश करेंगे। आपके प्रेमएवं स्थायी बनें रहेंगे। यदि किसी कारणवश आपका किसी से विवाद या शत्रुता होती है तो ऐसी स्थिति में शत्रु या विवादित व्यक्ति से भी आपका मन मुटाव दीर्घकाल तक बना रहेगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की होने से आप पराधीन रहकर कार्य करने में असुविधा महसूस करेंगे। आप किसी के अनुशासन में कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करना अधिक पसंद करेंगे। आपकी निरंतर कोशिश एवं महत्वाकांक्षा रहेगी कि आप जो भी कार्य करें वह निष्पक्ष एवं स्वतंत्र हो, उस कार्य में किसी का भी हस्तक्षेप आपको मंजूर नहीं होगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह होने के कारण सूर्य से संबंधित गुण कमोवेश मात्रा में आपके अंदर मौजूद रहेंगे। इसके प्रभावश दूसरों का उपकार, उपचार करने की प्रवृत्ति आपके अंदर प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहेगी। सामाजिक क्षेत्र में आप सूर्य के समान ही प्रकाशित होना पसंद करेंगे। सामाजिक संगठनों में मुखिया का पद पाने की आपकी चाहत बनी रहेगी। जोकि आप अपनी मेहनत एवं लगन से प्राप्त करेंगे।

mun

आपका जन्म दिनांक एक होने से आपका मूलांक एक होता है। मूलांक एक के प्रभाववश आप एक स्थिर विचारधारा की महिला होंगी। अपने निश्चय पर दृढ़ रहेंगी। जीवन में आप जब भी किसी को वचन इत्यादि देंगी उन्हें निभाने की पूर्ण कोशिश करेंगी। इच्छा शक्ति आपकी दृढ़ रहेगी एवं आप अपने मन में जो भी विचार बना लेंगी उनका पालन करने की निरंतर कोशिश करेंगी। आपके प्रेम संबंधों में, मित्रता के संबंधों में स्थायित्व रहेगा तथा लंम्बें समय तक आपके संबंध मधुर एवं स्थायी बनें रहेंगे। यदि किसी कारणवश आपका किसी से विवाद या शत्रुता होती है तो ऐसी स्थिति में शत्रु या विवादित व्यक्ति से भी आपका मन मुटाव दीर्घकाल तक बना रहेगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की होने से आप पराधीन रहकर कार्य करने में असुविधा महसूस करेंगी। आप किसी के अनुशासन में कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करना अधिक पसंद करेंगी। आपकी निरंतर कोशिश एवं महत्वाकांक्षा रहेगी कि आप जो भी कार्य करें वह निष्पक्ष एवं स्वतंत्र हो, उस कार्य में किसी का भी हस्तक्षेप बीच में आपको मंजूर नहीं होगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह होने के कारण सूर्य से संबंधित गुण कमोवेश मात्रा में आपके अंदर मौजूद रहेंगे। इसके प्रभावश दूसरों का उपकार, उपचार करने की प्रवृत्ति आपके अंदर प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहेगी। सामाजिक क्षेत्र में आप सूर्य के समान ही प्रकाशित होना पसंद करेंगी। सामाजिक संगठनों में मुखिया का पद पाने की आपकी चाहत बनी रहेगी। जोकि आप अपनी मेहनत एवं लगन से प्राप्त करेंगी।

PijushNandi

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय चौंसठ कलाओ के अन्दर ही होगा। शुक्र कला का दाता है। अतः आपके अन्दर ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होगा। आप कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करेंगे। कलात्मक वस्तुएं आपको लाभ प्रदान करेंगी। आप विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन-मन एवं धन का व्यय करेंगे। सौन्दर्य की ओर आकर्षण आपकी कमजोरी रहेगा।

आपके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज-सजावट बनाये रखने में आपको हमेशा धन व्यय करते रहना होगा। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना आपके मनोनुकूल है। आप वस्त्र आभूषण के शौकीन रहेंगे। धन स्थिति आपकी ठीक रहेगी। शान-शौकत बनी रहेगी। सामने वाले व्यक्ति आपको हमेशा धनी समझते रहेंगे, भले ही आप यदा-कदा कड़की के दिनों में चल रहे हों। किसी भी कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार का क्षेत्र चुनते हैं, तो आपकी उन्नति निश्चित ही होगी।

mun

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय चौंसठ कलाओ के अन्दर ही होगा। शुक्र कला का दाता है। अतः आपके अन्दर ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होगा। आप कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करेंगी। कलात्मक वस्तुएं आपको लाभ प्रदान करेंगी। आप विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन-मन एवं धन का व्यय करेंगी। सौन्दर्य की ओर आकर्षण आपकी कमजोरी रहेगा।

आपके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज-सजावट बनाये रखने में आपको हमेशा धन व्यय करते रहना होगा। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना आपके मनोनुकूल है। आप वस्त्र आभूषण की शौकीन रहेंगी। धन स्थिति आपकी ठीक रहेगी। शान-शौकत बनी रहेगी। सामने वाले व्यक्ति आपको हमेशा धनी समझते रहेंगे, भले ही आप यदा-कदा कड़की के दिनों में चल रही हों। किसी भी कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार का क्षेत्र चुनती हैं, तो आपकी उन्नति निश्चित ही होगी।

लग्न फल

PijushNandi

आपका जन्म कृतिका नक्षत्र के तृतीय चरण में बृषभ लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल पूर्वीय क्षितिज पर कुंभ का नवमांश एवं वृषभ राशि का द्रेष्काण उदित था। आपके जन्म प्रभाव से ऐसा स्पष्ट हो रहा है कि आपका व्यक्तित्व सामान्य तथा जीवन विखंडित है।

यद्यपि आप धार्मिक प्रवृत्ति के सुव्यवस्थित व्यक्ति हैं। आप व्यवसायिक मनोवृत्ति के प्राणी हैं। आप बैल के समान उत्तरदायीत्व निभा सकते हैं। यदि आपको कोई क्रोधित कर दे तों आपकी सहनशीलता सीमा रहित हो जाती है और आप अपने विरोधात्मक परिस्थिति को प्रचंड प्रहार से मुक्त करा लेने की इच्छा रखते हैं।

परंतु आप ऐसे व्यक्ति हैं कि अपने घर के साज-सज्जाओं को विभिन्न प्रकार से परिवर्तित करते रहते हैं। आप किसी भी घटनाओं के प्रति अपनी पत्नी को भिन्न-भिन्न प्रकार की राय देते हैं। व्यक्तिगत रूप से आपका व्यवहार किसी को अपने वशीभूत (अधिनस्थ) रखने जैसा होता है।

बल्कि अन्य परस्पर विरोधाभास यह है कि आप लिहाज पूर्वक अपने प्रेम संबंध को बनाए रखते हैं। आप स्वयं अपने हाथ से अपनी पत्नी से छिपा कर प्रेमिका को घर से बाहर उदारता पूर्वक उपहार स्वरूप आभूषण एवं वस्त्रादि प्रदान करते हैं।

आप चाहते हैं कि आपका साझीदार अन्य की अपेक्षा सुंदर और आकर्षक हो। परंतु आप दूसरी ओर विपरीत योनि के लिए सौम्यता पूर्ण ढंग से अति संवेदनशील रह कर अहंकार पूर्ण व्यवहार करते हैं। आप गुप्त रूप से प्रेम संबंध के लिए विशेष सोच-विचार बिना किए अवसर प्राप्त करते हैं। परंतु निश्चयपूर्वक इसे गुप्त रखते हैं।

परंतु आप में दो मुख्य विशेषताएं विद्यमान हैं। प्रथम तो यह है कि आप में कुछ करने की दृढ़ इच्छा शक्ति प्रबल रहती है। अन्य आप किसी भी विषय पर गंभीरता पूर्वक सोच समझकर ही उसे कार्यरूप देते हैं। जब-जब जिस-जिस विषय पर आप कार्यारंभ करते हैं। उस योजना को पूर्ण रूपेण संतुलित करके ही मात्र उसी विषय का गद्यात्मक अध्ययन कर संकल्पित हो कर कार्य रूप में व्यवहृत करते हैं। आप कभी भी अंधात्मक छलांग नही लगातें। आप निःसंदेह होकर, अपने कार्य के लिए (मधुर) अनुकूल समय निकाल कर कार्यरंभ करते हैं। जब एक बार अपने मन से कार्य हेतु निश्चय कर लेते हैं। पुनः अपनी योजना की सफलता के लिए कोई भी प्रयास करने में नहीं हिचकतें।

प्रत्येक क्षण आपके मन में स्थायी रूप से यह विषय प्रमुखता से स्थिर रहता है कि किस प्रकार धन प्राप्त एवं संचित किया जाए। आपके जीवन में धन और बहुत धन प्राप्ति का लक्ष्य प्रमुख है। तत्पश्चात् आप धन का बिना दुरुपयोग किए मात्र संचित करने के लिए चिंतित रहते हैं कि किस यत्न से धन का दुरूपयोग किसी भी विंदु पर या स्थिति में न हो तथा धन

राशि अक्षुणण रहे। आपके समक्ष इस बात की प्रमुखता रहती है कि आप अपने अधीन या सपंर्क में रहने वालों को अपने से निकटता एवं सहानुभूति बनाए रखते हैं।

आप शारीरिक रूप से संतुलित एवं सामान्य शक्ति संपन्न, गोल मोल आकृति, चौड़ा कंधा, मोटी गर्दन एवं चमकीली आखों से युक्त सुंदर स्वरूपवान हैं। आप भौज्य प्रिय, चाटुकार (पेटू) और मसालेदार भोजन करने वाले प्राणी हैं। आपके लिए अधिक भोजन के पश्चात् शारीरिक समस्याएं उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक है। आपको अति रक्त संचार, कब्जियत, नेत्र रोग, नस संबंधी गडबड़ी तथा मस्तिक ज्वर से पीड़ित रहने की आशंका है। अतः आपके लिए सदैव नियंत्रित एवं संतुलित आहार ग्रहण करना ही अति अनुकूल है।

इसके अतिरिक्त आपके लिए अत्यावश्यक है कि आप छोटी-मोटी दुर्घटनाओं के प्रति सचेत रहें क्योंकि आपके लिए यह संभव है कि आपको किसी छोटी भी दुर्घटनाओं का शिकार होना पड़े। आप अत्यंत ही सुविख्यात प्राणी है, अस्तु आपसे बहुत अधिक मित्र वर्ग संबंधित रहेंगे। आपके लिए आरामदायक वस्तुओं का व्यवसाय संगीत, गायन, वादन नृत्य कलाकारिता संबंधी कार्य प्रतिरक्षा-विभाग या पुलिस विभाग की सेवा कार्य अनुकूल हो सकता है। सप्ताह के शुक्रवार एवं शनिवार आपके लिए अच्छा दिन है। इसके अतिरिक्त बुधवार का दिन आपके साझीदारी व्यवसाय हेतु उत्तम एवं समयोचित है। रविवार, गुरूवार सोमवार, एवं मंगलवार का दिन आपके लिए अपव्ययकारी हो सकता है।

आपके लिए संवेदनशील अंक 2 एवं 8 अंक अनुकूल है। अंक 7 एवं 9 अंक आपके लिए प्रभावक एवं आकर्षक अंक हैं तथा यह भी स्पष्ट है कि आपके लिए अंक 5 का व्यवहार अनुपयुक्त है।

आपके लिए अति आरामदायक एवं अनुकूल रंग हरा, गुलाबी, एवं श्वेत वस्त्र हैं। आपके लिए लाल रंग का व्यवहार सर्वथा उत्तेजक एवं अनिवार्य रूप से त्यागनीय है।

mun

ज्योतिषीय गणना के अनुसार यह ज्ञात हो रहा है कि आपका जन्म मेष लग्न में अर्थात् जब मेदिनीय क्षितिज पर मेष लग्न उदित था उस समय भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में कन्या राशि के नवमांश एवं सिंह राशि के द्रेष्काण में हुआ था। परिणामस्वरूप यह स्पष्ट हो रहा है कि आप महान भाग्यशाली हैं। प्रसन्नता का विषय यह है कि जब कभी भी संयोग प्राप्त हो मुख्य रूप से लाटरी के टिकट प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त करें ताकि आप शीघ्र ही धनवान बन सकें। अन्यथा परिणाम स्वरूप आप निर्विध्न आराम देह एवं आनंददायक जीवन व्यतीत करने के लिए प्रर्याप्त (धन) आय के अतिरिक्त साधन प्राप्त करें ताकि आपका सुखमय जीवन विलास-प्रियता से व्यतीत हो सके।

आप शरीर से दुबली (कृशकाय) कद की मांसल एवं हृष्ट-पुष्ट शरीर वाली संयमी स्त्री हैं। आपकी उन्नत ललाट, सुंदर और आकर्षक आंखे आपके व्यक्तित्व को अपेक्षाकृत सौंदर्य प्रदान कर रही हैं। यह संभव है कि आपके मस्तक पर कोई पुराने चोट या घाव के चिह्न हों।

आपका संपूर्ण व्यक्तित्व सुंदर और आकर्षक है, जो मुख्यतः विपरीत योनि के प्रति सुंदरता का केंद्र है। यह संभव है कि आप कामी पुरुष के आकर्षण में दिशाहीन होकर अपने शयन कक्ष के अतिरिक्त कहीं बाहर कामोत्तक आनंद प्राप्ति का पता लगाकर आनंद ले तो अन्य पुरुष के साथ संभोग के परिणाम स्वरूप यौन संबंधी रोग अर्थात् यौन रोग का शिकार हों। ऐसी संभावना है।

आप अपनी वाचाल प्रवृत्ति के प्रभाव से किसी भी विषय पर अपना मंतव्य प्रकट कर देती हैं, जो आवश्यक नहीं है। यह प्रवृत्ति आपकी मेधावीपना की औसत से अधिक है। फिर भी सदैव ही आप बात-चीत कर के अपना मुंह बंद नही रखती लगातार बोलते ही रहते हैं, जो आपके संपर्क में आता है। वह आपको अधिक सामान्य महिला समझता है। आपको पूर्णरूपेण अधिकाधिक मदद करता है। आपकी मित्रमंडली आपके लाभ के लिए धन का भुगतान भी करती हैं। अर्थात् मित्र से आपको आर्थिक लाभ होता है।

आप पूर्ण रूपेण आश्वस्त हैं कि आप में नेतृत्व की क्षमता विद्यमान है तथा आप एक अच्छी नेता के गुणों से पूर्ण हैं। आप अपनी योजना के संबंध में किसी अन्य के विचारों का कोई महत्व नहीं देतीं, वास्तव में आप अपने ही विचारों और निर्णयों को सर्वोपरि समझती हैं। परंतु किसी-किसी विषय में आप भ्रमित होकर किसी अन्य उपाय को अपनाती हैं। परंतु आप बिना किसी बड़ी बाधाओं के भी पार कर लेती हैं। सामान्यतः आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा क्योंकि आप में पूर्ण आत्म शक्ति विद्यमान है, जिसके प्रभाव से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगी। परंतु आप जब कोई जोखिम मोल लेंगी तब साधारण रूप से किसी प्रकार से घायल होने के प्रति सर्तकता बरतना होगा। विशेषतया दुर्घटना के कारण सिर में चोट न लगे, इसके लिए आपको पूर्णरूपेण सतर्क रहना चाहिए। क्योंकि यह दुर्घटना संभाव्य है। यदि आप सतर्क रहें तो संभावित दुर्घटना से सुरक्षित रहेंगी। क्योंकि आप कम से कम समय बचा कर भी स्वास्थ्य रक्षा के लिए अत्यधिक उत्साहित एवं अभिलाषित रहते हैं। आपकी बुद्धि और शरीर किसी भी दबाव से स्थिर रहता है।

अतएव आपके लिए यह उचित है कि आप अपनी तनाव मुक्ति हेतु यथा संभव विश्राम प्राप्त कर यथेष्ठ शयन करें। अन्यथा आप नस की गडबड़ी अथवा मस्तिष्क संबंधी रोग से ग्रसित हो जाएंगी। आपके लिए यह पूर्व सूचना है कि आप स्वास्थ्य रक्षा के लिए सभी संभव उपाय करे अर्थात् सचेत रहें, तथा समय-समय पर स्वास्थ्य संबंधी सलाह डॉक्टर से प्राप्त कर ही संयमित जीवन बिताएं। सामान्य स्वास्थ्य को उत्तम रखने के लिए आपको मद्य एवं मंसाहार से बच कर रहना चाहिए। आपको शाकाहारी भोजन का सेवन पर्याप्त मात्रा में करनी चाहिए। आप पर्याप्त मात्रा में धन प्राप्ति संबंधी वार्तालाप करने में विश्वास रखती हैं तथा धन प्राप्ति के सुअवसर प्राप्त करना चाहती हैं। आपको निम्नांकित निर्देशों का पालन करना चाहिए।

आपके लिए मंगलवार, गुरुवार, रविवार एवं सोमवार उपयुक्त एवं भाग्यशाली दिन है। शुक्रवार, शनिवार एवं बुधवार तीन दिन आपके लिए प्रतिकूल एवं व्ययकारी होंगे।

आपके लिए अनुकूल एवं भाग्यशाली अंक 9 एवं 1 अंक है। इसके अतिरिक्त अंक 4 एवं 8 अंक से आप आकर्षित हैं। अंक 6 एवं 7 अंक आपके लिए अनुकूल नही है।

आपके लिए लाल, स्वर्णिम एवं पीला रंग भाग्यशाली प्रमाणित होगा।

RATNA JYOTI

नक्षत्रफल

PijushNandi

आपका जन्म मूल नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, गण राक्षस, नाड़ी आद्य, योनि श्वान तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का शुभारम्भ "भ" या "भा" अक्षर से होगा- यथा भगत सिंह

आप गण्डमूल नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। इस चरण में जन्म लेने से जातक के लिए स्वयं अरिष्ट होता हैं। अतः जन्म समय में इसकी शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान द्वारा शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए तथा 27 दिन बाद जब यह नक्षत्र पुनः आवे उस दिन जपे हुए नक्षत्र के दंशाश का हवन करना चाहिए। इस प्रकार पूर्ण विधि विधान से इसकी शान्ति करने के उपरान्त सम्बन्धित जातक को कोई भी कष्ट नही होता हैं तथा वह सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करता हैं।

मंत्र - ऊं अपाधमयः किल्विषमपकृत्यामपोरय अपामार्गत्वमस्मदपटुः दुश
मानसागरी

आप एक भाग्यवान पुरूष होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार के सुखों का आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। साथ ही धनैश्वर्य से सुसम्पन्न होकर समाज में एक धनाढ्य पुरूष के रूप में ख्याति अर्जित करेंगे। आपको वाहन सुख की प्राप्ति भी होगी तथा आनन्दपूर्वक आप इसका उपभोग कर सकेंगे। शारीरिक बल से भी आप पूर्ण रूपेण युक्त रहेंगे। आप स्थिर बुद्धि से किसी भी कार्य को सम्पन्न करेंगे शीघ्रता या चंचलता पूर्वक कार्य करना आपको पसन्द नहीं होगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में आप पूर्ण रूपेण सक्षम रहेंगे तथा वे भी आपसे अत्यन्त भय ग्रस्त रहेंगे। विभिन्न शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा तथा समाज में विद्धान के रूप में यश प्राप्त करेंगे।

सुखेनयुक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रे बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता।
प्रतापितारतिजनो मनुष्यो मूलेकृती स्याज्जननं प्रपन्नः।।
जातकाभरण एवं मानसागरी

आप एक वाक्पटु पुरुष होंगे तथा अपनी इस विशेषता से अधिकांश कार्यों को सिद्ध करने में सफल हो जाएंगे। आप में अभिमान का भाव भी रहेगा तथा यदा कदा समाज में अन्य जनों के समक्ष इसका आप प्रदर्शन करते रहेंगे। आपकी अधिकाँश बातों को प्रमाण के अभाव में अन्य लोग शीघ्रता से स्वीकार नही करेंगे।

मूलर्क्षे पटुवाग्विधूर्तकुशलो धूर्तः कृतघ्नो धनी।
जातकपरिजातः

आप आजीवन धन ऐश्वर्य तथा वैभव से सर्वदा समृद्ध रहेंगे तथा इनका आपके जीवन में अभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा। आप दृढतापूर्वक कार्य करना पसन्द करेंगे अस्थिर होकर कार्य करने में आपको कोई आनन्द नहीं आएगा। आपके पास स्थिर वैभव भी रहेगा।

मूले मानी धनवान्सुखी न हिंस्रः स्थिरो भोगी।
बृहज्जातकम्

mun

आप मूल नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि श्वान, वर्ण क्षत्रिय, गण राक्षस, वर्ग मूषक तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "भ" या "भा" अक्षर से होगा यथा- भगवती, भारती आदि।

आप गण्डमूल नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुई हैं। इस नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा होने से जातक को सवयं अरिष्ट होता हैं। अतः जन्म समय में इस नक्षत्र की विधि विधान से शान्ति करा लेनी चाहिए। यह कार्य किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाना चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए तथा 27 दिन बाद जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो उस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। इस प्रकार विधि पूर्वक शान्ति करने से जातक का अरिष्ट दूर होता हैं एवं वह सुखपूर्वक रहता हैं।

मंत्र – ऊं अपाधमयः किल्विषमपकृत्यामपोरय अपामार्गत्वमस्मदपटुः दुश
मानसागरी

आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखों से सुसम्पन्न रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही एक धनवान महिला के रूप में समाज में आप जानी जाएंगी। वाहन सुख से भी आप युक्त रहेंगी तथा सुखपूर्वक इसका आनन्द उठायेंगी। शारीरिक स्वास्थ्य भी आपका उत्तम रहेगा फलतः शारीरिक शक्ति का अभाव नहीं रहेगा। आप स्थिर बुद्धि की होंगी। अतः एकाग्रचित से ही अपने कार्यों को सम्पन्न करने में यत्नशील रहेंगी। आप के शत्रु आपसे नित्य भयातुर रहेंगे तथा कोई भी आपके विरोध करने में सक्षम नही होगा। शास्त्रों के अध्ययन में भी आप रूचिशील रहेगी तथा कई शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा।

सुखेनयुक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रे बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता।
प्रतापितारतिजनो मनुष्यो मूलेकृती स्याज्जननं प्रपन्नः।।
जातकाभरण एवं मानसागरी

आपकी वाक्पटुता से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा इसके कारण आप अपने अधिकाँश कार्यों को सिद्ध करने में सफलता अर्जित करेंगी। आप में अभिमान की

भावना भी रहेगी जिसका आप समय समय पर अन्य सामाजिक जनों के समक्ष प्रदर्शन करती रहेंगी।

मूलर्क्षे पटुवाग्विधूर्तकुशलो धूर्तः कृतघ्नो धनी।
जातकपरिजातः

आपको जीवन में धन मान एवं सम्मान का कभी भी अभाव नहीं रहेगा। इनसे आप हमेशा सुसम्पन्न रहकर समाज से पूर्ण आदर प्राप्त करेंगी। आप अपने द्वारा किये गए कार्यों में चपलता का प्रदर्शन नहीं करेंगी अपितु स्थिरता से उन्हे सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त स्थिर धनैश्वर्य का भी आप सर्वदा उपभोग करने में सफल रहेंगी।

मूले मानी धनवान्सुखी न हिंस्रः स्थिरो भोगी।
बृहज्जातकम्

RATNA JYOTI

राशिफल

PijushNandi

धनु राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके कंठ एवं मुख की आकृति दीर्घ होगी तथा दान्त, कान एवं ओठ भी देखने में स्थूल रहेंगे। साथ ही दोनों भुजाएं कोमल तथा मांसल होगी। आप को पिता द्वारा प्रचुर मात्रा में धनादि की प्राप्ति होगी जिसका आप प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल यथा शक्ति अपनी इस प्रवृति का पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। आपकी लेखन कार्य में भी रूचि रहेगी तथा इसी सन्दर्भ में काव्य आदि सृजन में सफलता प्राप्त करेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा बल का आप में अभाव नहीं रहेगा। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपकी वक्तृत्व शक्ति अत्यन्त ही तीक्ष्ण होगी जिससे लोग आपकी बातों को ध्यान पूर्वक सुनेंगे। नाना प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप दक्षता का परिचय देंगे। चित्रकारी या शिल्प कला में आप विशिष्ट योग्यता प्राप्त कर सकेंगे। आप प्रकृति से गम्भीर रहेंगे तथा धर्म के विषय में काफी ज्ञान स्वपरिश्रम से अर्जित करेंगे। अपने भाई बन्धुओं से आपके संबंध औपचारिक ही अधिक रहेंगे। उत्पन्न होगा। इसके अतिरिक्त आप प्रेम तथा सम्मान सहित ही वश में किये जा सकेंगे। बल पूर्वक या आपकी इच्छा के विरूद्ध कुछ नही किया जा सकेगा।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आखें गोलाकृति की तथा हाथ एवं कन्धे सामान्य से अधिक लम्बाई से युक्त रहेंगे। उम्र के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। आप को पानी के किनारे निवास करना या भ्रमण करना अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा। अतः इसके लिए आप सदैव तत्पर रहेंगे। साथ ही हृदय से आप हमेशा प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आपकी हड्डियां भी पुष्ट एवं मजबूत रहेंगी अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार मानेंगे तथा हृदय से उनका धन्यवाद भी करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप किसी न किसी प्रकार के कार्य में अपने को हमेशा व्यस्त रखेंगे। बोलने में आप अत्यन्त ही दक्ष होंगे जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा प्रसन्न

रहेंगे एवं इसके द्वारा आपके काफी कार्य स्वयं ही सिद्ध हो जाएंगे। आपका अर्न्तमन त्याग की भावना से परिपूर्ण रहेगा। आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा एवं साहसी प्रवृति से युक्त रहेंगे। आपके शत्रु प्रायः आपसे हारे हुए रहेंगे एवं आपसे भय की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त आप उच्चाधिकारी वर्ग एवं धनाढ्य लोगों के प्रिय रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण मान सम्मान प्राप्त होगा।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नैकसाध्योऽश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप विभिन्न प्रकार के कार्यों तथा कलाओं में निपुण रहेंगे। आपका चरित्र भी निर्मल रहेगा। आप हमेशा सत्य बोलने में विश्वास करेंगे तथा इसी प्रवृति का आप पालन करते रहेंगे। इसके साथ ही आप व्यय करने में अत्यन्त सावधानी का परिचय देंगे एवं आय के अनुसार ही व्यय करके अनावश्यक आर्थिक संकट से सुरक्षित रहेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर एवं सुडौल रहेंगे। आप अपने परिवार में प्रधान एवं श्रेष्ठ रहेंगे। सभी परिवार जन आपको यथा योग्य सम्मान तथा स्नेह प्रदान करेंगे। आप विशेष रूप से इंजीनियरिंग या चित्रकला से क्षेत्र में विशिष्ट सफलता भी अर्जित कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक शूरवीर पुरूष होंगे तथा सत्य का अनुपालन करने के लिए आजीवन तत्पर रहेंगे। आप स्थिर बुद्धि के होंगे अतः स्थिर कार्य करना ही पसन्द करेंगे। आप में सत्व गुण की भी प्रधानता विद्यमान रहेगी एवं मन में अन्य जनों के प्रति स्नेह तथा प्रेम का भाव रहेगा। किसी प्रकार से द्वेष या वैमनस्य का भाव रखना आपको रूचिकर नहीं लगेगा। आप एक सुन्दर पुरूष होंगे तथा गुणवती एवं बुद्धिमती पत्नी के पति होंगे। नाना प्रकार के खेलों तथा नाटकों के प्रति आपके मन में रूचि रहेगी। आपका शरीर भी स्थूलता को प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप ऐसा कार्य सम्पन्न करेंगे जिससे आपके परिवार या कुल को परेशानी हो सकती है। लेकिन समाज में आप पूर्ण रूपेण लोकप्रिय रहेंगे।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप सर्वगुणों से सम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा समाज से पूर्ण मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति करेंगे। अपने अन्य भाई बहनों में आप श्रेष्ठ एवं मुख्य रहेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक भी होगी तथा देवता, ब्राहमण तथा गुरूजनों के प्रति आपके मन में विशिष्ट श्रद्धा का भाव सर्वथा विद्यमान रहेगा। आपकी गमनगति अत्यन्त ही आकर्षक रहेगी तथा सहनशीलता के भाव का सर्वथा अभाव रहेगा फलतः कई बार आपको हतोत्साहित भी होना पड़ सकता हैं।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुर्वर्गेक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा सर्वथा कष्ट तथा अशुभ फल देने वाला होगा। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभकार्य को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूपेण सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी।

यदि समय आपके लिए अशुभ चल रहा हो मन में परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार एवं गुरूवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही पीत वस्त्र, पीत पुष्प, पीत चन्दन, सोना, पुखराज , चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फलो में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम किसी योग्य विद्वान से 16000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको शुभ फल प्राप्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

mun

धनु राशि में पैदा होने के कारण आप दीर्घ गले तथा मुख से युक्त होंगी। पैतृक धन से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा आपके अर्न्तमन में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा समय समय पर यथाशक्ति आप अपनी इस प्रवृति का पालन करती रहेंगी। लेखन कार्य में भी आपकी स्वाभाविक रूचि रहेगी तथा इसी कम में आप कविता सृजन में सफलता प्राप्त कर सकेंगी। आप का शारीरिक बल पूर्ण होगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप एक उत्तम वक्ता होंगी तथा अपने

ओजस्वी भाषणों के द्वारा जन सामान्य में आपकी ओर आकृष्ट करने में सफल सिद्ध होंगी। नाना प्रकार के कार्यों को करने में भी आप में पूर्ण योग्यता रहेगी तथा चित्रकला में विशेष योग्यता अर्जित कर सकेंगी। आप स्वभाव से गम्भीर होंगी तथा धर्म के प्रति भी निष्ठावान रहकर उसका पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगी। अपने बन्धुवर्ग से आपके सम्बन्ध सामान्य ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपको समान व्यवहार या स्नेह के द्वारा ही वशीभूत किया जा सकेगा बलपूर्वक आप कोई भी कार्य नहीं करेंगी।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आखें सुन्दरता से युक्त गोलाकार होंगी तथा हाथ एवं कन्धों की आकृति भी दीर्घ रहेगी। आपका वक्षस्थल भी पूर्ण रूप से विकसित रहेगा। आयु के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। जल के किनारे निवास करने या भ्रमण करने में आप नित्य तत्पर रहेंगी तथा प्रसन्न चित्त से इन स्थानों में निवास या भ्रमण करेंगी। गूढ़ से गूढ़ विषय के ज्ञान को प्राप्त करने में आप अत्यन्त ही प्रवीण होंगी तथा भय से हमेशा प्रसन्न रहने का प्रयत्न करेंगी। आप अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर उनके प्रति पूर्ण कृतज्ञता के भाव को प्रकट करेंगी तथा हृदय से उनके प्रति आभार भी व्यक्त करेंगी।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप अपने कार्यों को सिद्ध करने में हमेशा तत्पर रहेगी तथा बिना कार्य के बैठना आपको उचित नहीं लगेगा। आप का वाक्चातुर्य प्रशंसनीय तथा दर्शनीय रहेगा जिससे आपके अधिकाँश कार्य भी सफल होंगे। आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर आप इसका प्रदर्शन भी करेंगी। आपका कद भी मध्यम रहेगा। साथ ही आप एक साहसी प्रवृति की महिला भी होंगी। शत्रुओं को पराजित करने में आप हमेशा समर्थ होंगी। अतः कोई भी शत्रु आपका विरोध नहीं कर सकेगा। इसके अतिरिक्त धनाढ्य तथा उच्चाधिकार वर्ग में आप आदरणीय रहेंगी तथा इनसे आपके अच्छे संबंध रहेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोळरिहन्ता साम्नैकसाध्योळश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप नाना प्रकार की कलाओं को जानने वाली होंगी तथा सुशीलता का गुण भी आप में विद्यमान रहेगा। आप एक निर्मल चरित्र वाली महिला होंगी तथा स्पष्ट वक्ता के रूप में समाज में प्रसिद्ध रहेंगी। इसके साथ ही व्यय आप अत्यन्त सी सोचविचार कर एवं आय को मध्यनजर रखते हुए ही करेंगी।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शरीर के अधिकाँश अंग पुष्ट एवं सुडौलता से सुशोभित रहेंगे। आप अपने कुल या परिवार में श्रेष्ठता को प्राप्त करेंगी। समस्त परिवारिक लोग आपको उचित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही चित्रकारी या इंजीनियरिंग आदि के क्षेत्र में आप विशेष रूप से सफल हो सकेंगी।

सौम्याङ्गो रुचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप निडर तथा बहादुर महिला होंगी तथा सत्यानुपालन में सर्वथा तत्पर रहेंगी। आपकी बुद्धि भी स्थिर रहेगी तथा स्थिर कर्मों को ही सम्पन्न करने में आप विशेष रूचिशील रहेंगी। अन्य जनों के प्रति आप के मन में हमेशा प्रेम की भावना रहेगी तथा किसी के प्रति द्वेष की भावना अपने मन में नहीं रखेंगी। आप एक बुद्धिमान तथा गुणवान पुरूष की पत्नी होंगी। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर होगी जिससे अन्य जन आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। परन्तु आपका शरीर थोड़ी मात्रा में स्थूलता को प्राप्त रहेगा। समाज में आप सभी वर्गों में प्रिय रहेंगी।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप कई प्रकार के सद्गुणों से युक्त रहकर समाज में सम्माननीया होंगी। देवता, ब्राहमण तथा गुरूजनों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर आप इनके प्रति सम्मान तथा सेवा की भावना का भी परिचय देती रहेंगी। आपकी चाल भी अत्यन्त आकर्षक होगी परन्तु सहन शीलता के भाव का आप में प्रायः अभाव ही रहेगा जिससे कभी कभी आप अनावश्यक दुःखों की अनुभूति करेंगी।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल दायक हैं। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण तथा 3,8, 13 तिथियों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि अन्य शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति विशेष सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार एवं वृहस्पतिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी इत्यादि पदार्थो का दात्र करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप या किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे शुभ फलों में वृद्धि होकर अन्यत्र लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

RATNA JYOTI

पाया विचार

PijushNandi

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीडित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

mun

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में सपरिवार धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने के लिए भी आप नित्य तत्पर एवं उत्सुक रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित रहेंगे तथा तीर्थयात्रा करने के लिए भी सदैव यत्नशील एवं उद्यत रहेंगी। आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं ऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। साहित्य या काव्यशास्त्रादि के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा एवं समयानुसार आप इनका अध्ययन भी करेंगी। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य प्रथम प्रयत्न में ही सफल हो जाया करेंगे। बन्धुवर्ग से आपका विशेष स्नेह का भाव रहेगा एवं उनसे नित्य सहयोग एवं सहायता प्राप्त करती रहेंगी। आप एक सौभाग्यशाली महिला भी होंगी एवं धार्मिक तथा देव पितृ संबंधी कार्यों में नित्य निष्ठावान होंगी। इसके अतिरिक्त आप हमेशा सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी एवं गुणवान पुत्रों से प्रसन्नता प्राप्त करेंगी।

RATNA JYOTI

गण फलादेश

PijushNandi

राक्षस गण में जन्म होने के कारण आप को अधिक बोलने वाले होंगे तथा मन से दया एवं कोमल भावों का प्रदर्शन अल्प मात्रा में ही करेंगे। आपकी प्रवृति साहसी होगी तथा साहसपूर्वक आपके अधिकाँश कार्य सुसम्पन्न होंगे। आप शीघ्र अकारण ही अपने क्रोध का भी प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति होंगे। साथ ही आपकी प्रवृति अन्य लोगों से विवाद करने की भी रहेगी। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा फलतः शारीरिक शक्ति का अभाव नहीं रहेगा।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से व्याकुलता का अनुभव कर सकते हैं। साथ ही आप का शारीरिक स्वरूप भी आकर्षक होगा। इसके अतिरिक्त आप यदा कदा अपने सम्भाषण में कठोर शब्दों का भी प्रयोग करेंगे जिससे श्रोता आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही प्रयोग करें।

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदाकलहप्रियः।
पुरुषोदुस्सहब्रूते प्रमेही राक्षणे गणे।।
मानसागरी

mun

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपका स्वभाव कभी कभी अधिक बातों को बोलने वाला रहेगा तथा हृदय में भी कोमलता की न्यूनता रहेगी। परन्तु आपकी प्रवृति स्वभाव से ही साहसी रहेगी। अतः साहस से आपके कई महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। आप शीघ्र ही अकारण कभी कभी अपनी क्रोधी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगी। साथ ही अपने कार्य को पूर्ण करने के लिए भी नित्य प्रयत्नशील रेंगी। आपका अन्य जनों से विवाद तथा भी प्रायः चलता रहेगा। परन्तु शारीरिक शक्ति का भी आप में अभाव नहीं होगा तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से व्याकुलता की भी अनुभूति कर सकती हैं। साथ शारीरिक सौन्दर्य का आकर्षण भी आपका मध्यम रहेगा परन्तु आपकी वाणी कभी कभी कठोर होगी जिससे सुनकर श्रोता अत्यन्त ही अप्रसन्न होंगे। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही प्रयोग करें।

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदाकलहप्रियः।
पुरुषोदुस्सहब्रूते प्रमेही राक्षणे गणे।।
मानसागरी

RATNA JYOTI

योनी फलादेश

PijushNandi

श्वान योनि में पैदा होने के कारण आप हमेशा अपने कार्यों को पूर्ण करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप में हमेशा उत्साह की भावना रहेगी। अतः अधिकाँश कार्य आप इसी प्रवृति से करने में सफल हो जाएंगे। आपकी प्रवृति साहस से भी युक्त रहेगी अतः आपकी समस्त समस्याओं का साहस पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे। आपकी बन्धुवर्ग से विशेष घनिष्ठता कम ही रहेगी। तथा माता पिता के प्रति आप अत्यन्त ही श्रद्धालु रहेंगे एवं निःस्वार्थ भाव से आजीवन उनकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

mun

श्वान योनि में जन्म होने के कारण आप प्रायः अपने उद्यम को करने में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगी। आपकी प्रवृति अत्यन्त ही उत्साह से परिपूर्ण रहेगी फलतः कार्य सिद्धि करने में आपको विशेष कठिनाई नहीं होगी। आप एक साहसी महिला भी होंगी तथा साहस पूर्वक अपनी सांसारिक समस्याओं का समाधान करेंगी। माता पिता के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा तथा निःस्वार्थ रूप से आप आजीवन उनकी सेवा करती रहेंगी।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

RATNA JYOTI

ग्रह फल - सूर्य

PijushNandi

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

mun

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

ग्रह फल - चन्द्र

PijushNandi

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

mun

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील,धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरें से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए

शुभ रहेंगी।

RATNA JYOTI

ग्रह फल - मंगल

PijushNandi

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

mun

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

ग्रह फल - बुध

PijushNandi

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

mun

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

RATNA JYOTI

ग्रह फल - गुरु

PijushNandi

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

mun

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

RATNA JYOTI

ग्रह फल - शुक्र

PijushNandi

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

mun

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

RATNA JYOTI

ग्रह फल - शनि

PijushNandi

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

mun

नवम भाव मे शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

RATNA JYOTI

ग्रह फल - राहु

PijushNandi

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

mun

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं कूर होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

RATNA JYOTI

ग्रह फल – केतु

PijushNandi

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

mun

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

RATNA JYOTI

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

PijushNandi

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक सुदंर उदार तथा सहिष्णु स्वभाव के होते हैं। उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहता है। साथ ही व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में वे समर्थ रहते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा मानसिक सन्तुष्टि भी उनकी बनी रहती है। ये अत्याधिक परिश्रमी जातक होते हैं तथा परिश्रम करने की उनकी अपूर्व क्षमता रहती है जिससे जीवन में उन्नति मार्ग प्रशस्त करने तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में वे प्रायः सफल रहते हैं। शांति एवं सहिष्णुता के साथ इनमें साहस तथा पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। अपने वाक्चातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा परन्तु स्वरूप सुदंर एवं आकर्षक होगा। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्च पद या समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेंगे साथ ही अपने सदगुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट करने में सफल होंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा विभिन्न विषयों कला साहित्य एवं संगीत का आपको उचित ज्ञान रहेगा तथा इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी।

लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे। दानशीलता का भाव भी आप में विद्यमान होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्दों को दान देने में तत्पर रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी।

धर्म के प्रति आप श्रद्धालु रहेंगे तथा अवसरानुकूल धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। धार्मिक क्षेत्र में आप किसी संस्था से सम्बंधित हो सकते हैं या इस क्षेत्र में आपको कोई विशिष्ट सफलता या प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है।

आप में उदारता तथा सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल आप समाज सेवा के लिए भी उद्यत रहेंगे। आपकी प्रवृति सात्विक होगी तथा विचार भी उत्तम होंगे। साथ ही परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त कई शास्त्रों का आपको ज्ञान होगा जिससे आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी।

इस प्रकार आप स्वस्थ सुदंर आकर्षक व्यक्तित्व विद्वान एवं साहसी पुरूष होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक आपका जीवन व्यतीत होगा।

mun

आपके जन्म समय में लग्न में मेष राशि उदित हो रही थी जिस कास्वामी मंगल है। सामान्यतया मेष लग्न में उत्पन्न जातक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होते है तथा उनमें पराक्रम साहस एवं तेजस्विता का भाव सर्वदा विद्यमान रहता है। इसके साथ ही जीवन में वे स्वपरिश्रम एवं योग्यता के बल पर उन्नति मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होते हैं। शारीरिक रूप से वे स्वस्थ रहते है तथा कठिन से कठिन कार्य को परिश्रम पूर्वक सफल बनाना उनके लिए आसान कार्य होता है।

अतः इस लग्न के प्रभाव से आप साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी बिना किसी भय के अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में सफल होंगी। इससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही आप प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि भी अर्जित करेंगी। आप एक स्वाभिमानी महिला होंगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से सम्मान जनक स्थिति में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

आप में प्रारम्भ से ही तेजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। इसी परिपेक्ष्य में यथा कदा आप क्रोध के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी फलतः इससे आपको कई बार अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः अनावश्यक क्रोध के भाव का यत्नपूर्वक परित्याग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगी तथा आनंद पूर्वक सांसारिक सुखों का उपभोग करेंगी।

लग्न में लग्नेश मंगल की राशि की स्थिति के प्रभाव से आप एक सत्यभाषी महिला होंगी तथा सत्यानुपालन में यत्नपूर्वक तत्पर रहेंगी। आप तेजस्वी एवं साहसी महिला होंगी तथा अपने पराक्रम से किसी उच्च एवं प्रतिष्ठित पद को अर्जित करने में समर्थ होंगी जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी प्रवृति दानशीलता के भाव से भी युक्त होगी तथा समय समय पर दीन दुखियों को अपनी ओर से सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगी। आपमें महत्वाकांक्षा का भाव भी विद्यमान होगा तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूति के लिए नित्य परिश्रमशील रहेंगी। शारीरिक रूप से आप बलिष्ठ रहेंगी तथा उत्तम स्वास्थ्य से युक्त रहकर अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। कार्य क्षेत्र में व्यापार की अपेक्षा नौकरी आपके लिए उत्तम रहेगी अतः व्यवसाय के प्रति उपेक्षा का ही भाव रखें।

इस प्रकार आप अपने साहस पराक्रम तेजस्विता एवं योग्यता से अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करके इच्छित मात्रा में धनैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगी तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करके आनंद पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

PijushNandi

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रूचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते है। यदि आप यह अनुभव करते है कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।

mun

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सांसारिक सुखों तथा धन ऐश्वर्य को अर्जित करेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इस राशि के प्रभाव से जीवन में आपको किसी निकट संबंधी की धन सम्पति की प्राप्ति की भी संभावना रहेगी क्योंकि अपने निकट संबंधियों से आपका व्यवहार सद्भावना से परिपूर्ण रहेगा तथा उनकी सुख दुख में पूर्ण सेवा तथा सहायता करने में तत्पर रहेंगी। बागवानी के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा समय समय पर आप इसमें तत्पर रहेगी।

जीवन में आपका पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा तथा शान्ति एवं आनन्द पूर्वक पारिवारिक जनों के साथ समय व्यतीत करेंगी साथ ही समाज में भी एक आदरणीय महिला रहेंगी तथा अन्य लोग आपको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे। आप स्वभाव से उदार तथा भावुक भी रहेंगी तथा इस प्रवृति का समय समय पर प्रदर्शन भी करेंगी। मिष्ठान भक्षण के प्रति आप रूचिशील रहेंगी तथा इससे आपको प्रसन्नता प्राप्त होगी । अन्य जनों से सामान्यतया वार्तालाप में आप अत्यंत ही मधुर वाणी का उपयोग करेंगी जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन आदि से भी युक्त रहेंगी तथा बहुमूल्य वस्तुओं तथा रत्नों को अर्जित

करके सुखपूर्वक उनका उपभोग करेंगी।

RATNA JYOTI

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

PijushNandi

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने भाई बहिनों के प्रति उदार भावुक तथा अत्यंत ही सहानुभूति का व्यवहार रखेंगे। आप उनसे अत्यधिक प्रेम करेंगे तथा उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगे परन्तु इसके बाद भी उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा आदर अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। कभी कभी परिस्थिति के अनुकूल आप असाधारण साहस तथा पराक्रम का प्रदर्शन करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा नैतिकता का यत्नपूर्वक अनुपालन करते रहेंगे। भाई बहिनों के प्रति समयानुसार आप अपने को परिवर्तन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी स्मरण शाक्ति तीव्र रहेगी तथा ऐतिहासिक घटनाओं को याद रखने में सफल रहेंगे। साथ ही भाई बहिनों के प्रति आपका क्रोध भी क्षणिक रहेगा तथा शीघ्र ही उनसे प्रसन्न हो जाएंगे।

जीवन में आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति रहेंगे तथा यत्नपूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करेंगे। आपकी सीखने या याद करने की शक्ति तीव्र होगी अतः किसी से कोई नवीन ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही उच्च शिक्षा या दर्शन शास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। आप सामाजिक जनों की भी यथाशाक्ति सेवा करेंगे। अतः अपने इन कार्यो से ख्याति भी प्राप्त होगी। आप किसी भी उददे्श्य को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए साहसिक निर्णय लेने में हमेशा समर्थ रहेंगे अतः यदा कदा आप समूह के नेतृत्व को भी प्राप्त कर सकते हैं। आप समाज सेवा, लेखन या किसी नवीन आविष्कार से प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते है। साथ ही संचार की सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे तथा संचार के क्षेत्र में आजीविका आदि भी कर सकेंगे। प्रकाशक संपादक या संवाददाता के रूप में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप वैश्य वर्ग के मित्र रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक अपने घर एवं परिवार का पालन पोषण करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपकी रूचि रहेंगी तथा शील स्वभाव भी उत्तम रहेगा।

mun

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति अच्छी रहेगी तथा किसी भी बात को समझने में दक्षता का परिचय देंगी। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने या दर्शन शास्त्र आदि के क्षेत्र में सर्वदा रूचिशील रहेंगी। साथ ही लेखन क्षेत्र में भी आपको सम्मान एवं ख्याति अर्जित होगी। चचेरे भाई बहिनों से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनको इच्छित सुख एवं सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगी ।

आप एक बुद्धिजीवी महिला होंगी तथा शारीरिक बल की अपेक्षा बौद्धिक कार्य ही अधिक मात्रा में सम्पन्न करेंगी। अतः समाज में बुद्धिमती महिला के रूप में जानी जाएंगी। आप एक निर्भीक तथा साहसी महिला होंगी साथ ही कलम की शक्ति भी आपके पास रहेगी।

अतः समय के अनुसार आप उच्चाधिकारियों या नेताओं के विरूद्ध भी लिख सकती है। आप एक साहसी महिला होंगी तथा अपने विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगी। आधुनिक संचार के उपकरणों यथा टेलीफोन, टेलीविजन, वाहन या अन्य साधनों से आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक उनका उपभोग करेंगी। साथ ही सूचना केंद्रों में कार्यरत भी हो सकती हैं। संगीत एवं कला के प्रति भी समय समय पर आप अपनी रूचि प्रदर्शित करेंगी तथा वाद्ययंत्रों के प्रयोग में आपको आनन्दानुभूति होगी। समीपस्थ यात्राओं से आपको लाभ श्रखयाति तथा मधुर स्मृतियों की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही समाचार पत्र में संपादक या संवाददाता के रूप में भी कार्य कर सकती है। इसके अतिरिक्त आप पति एवं परिवार से प्रेम तथा उदारता के भाव से युक्त होकर सत्य के पालन में रूचिशील रहेंगी तथा कुल में श्रेष्ठ रहेंगी। इसके अतिरिक्त सज्जन पुरूषों से आपको हमेशा सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

RATNA JYOTI

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

PijushNandi

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक विलासमय वस्तुओं से युक्त होंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। शुक्र के प्रभाव से युवावस्था से ही आपको सुख-संसाधनों की उपलब्धि हो जायेगी तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी कम ही करना पड़ेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे। आपके प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा विवाह के बाद इसमें काफी वृद्धि होगी। स्त्री के सहयोग से भी धनाढ्य एवं समृद्धशाली व्यक्ति माने जायेंगे। चल सम्पत्ति की उपेक्षा अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता होगी जिससे जमीन जायदाद तथा मकान प्रमुख होंगे। साथ ही समस्त आधुनिक भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से आप सम्पन्न होंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

उत्तम निवास स्थान के विषय में आप सौभाग्यशाली व्यक्ति समझे जायेंगे। आपका घर उत्तम एवं आधुनिक स्थान में होगा तथा सर्व प्रकार से यह आकर्षक एवं सुसज्जित रहेगा। आप भी इसकी सुन्दरता एवं सफाई का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा आपसी संबंध अच्छे रहेंगे। आपकी कुंडली में उत्तम वाहन के भी योग बनते है जिसका आप युवावस्था से ही उपयोग करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

आपकी माता जी सुन्दर सुसंस्कृत एवं मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक चतुर एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी चतुराई एवं व्यवहार कुशलता से परिवार का अच्छी तरह पालन पोषण करेंगी एवं किसी भी व्यक्ति को उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। आपके प्रति उनके हृदय में विशेष वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहयोग की भी प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त सुख-दुख में उनको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आपसी संबंध भी मधुर होंगे।

अध्ययन के प्रति वचपन से ही आपकी रूचि होगी तथा बुद्धिमान एवं परिश्रमशील होने के कारण प्रारंभ से ही अध्ययन के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करेंगे तथा इससे आप की आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी फलतः जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। सामाजिक जनों एवं संबंधियों में भी आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे। इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा जिससे भविष्य

उज्ज्वल होगा।

mun

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा राहु भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में सुख संसाधनों से आप युक्त होंगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से इन्हें अर्जित करेंगी। यद्यपि इनको अर्जित करने में आपको कई बार समस्याओं एवं परेशानियों का भी सामना करना पड सकता है एवं इनकी प्राप्ति में विलम्ब भी हो सकता है क्योंकि सुख भाव में राहु लग्नेश की राशि में स्थिति है। अतः आधुनिक भौतिक सुख साधनों एवं ऐश्वर्य का आप अवश्य उपभोग करेंगी भले ही इसमें आपको विलम्ब का सामना करना पड़े।

राहु की स्थिति चन्द्रमा की राशि में चतुर्थ भाव में होने के कारण जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगी परंतु इसमें न्यूनाधिक विलम्ब की संभावना होगी। लेकिन आप परिश्रमी महिला है। अतः स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी। लेकिन आपको विवादित सम्पत्ति से हमेशा दूर ही रहना चाहिए क्योंकि इसके क्रय-विक्रय से आपका ऐसी सम्पति से संबंधित होने पर अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

जीवन में आपका अपने घर विलम्ब से ही होगा परंतु सुख सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा अच्छे मकान में निवास करेंगे चाहे वह किराये का ही क्यों न हो। आप किसी धनाढ्य क्षेत्र में मकान का निर्माण करेंगी तथा आपके पडोसी या कालोनी के लोग धनाढ्य एवं शिक्षित होंगे लेकिन आपसी संबंधों में औपचारिकता का भाव ही अधिक होगा। साथ ही वाहन सुख भी अवसरानुकूल प्राप्त होगा।

आपकी माता जी तेजस्वी स्वभाव की शिक्षित महिला होंगी तथा आधुनिक एवं पाश्चात्य संस्कृति की पक्षधर होंगी। पारिवारिक जनों के प्रति उनका दृष्टिकोण अनुकूल होगा तथा अपना नियंत्रण रखेंगी। आपके प्रति भी उनका वात्सल्य पूर्ण दृष्टिकोण होगा एवं उनसे नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति सम्मान एवं श्रद्धा का भाव रहेंगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रहेंगी परंतु आप दोनो के मध्य वैचारिक भिन्नता रहेगी जिससे यदा कदा संबंधो में मधुरता में कमी आएगी। अतः ऐसी स्थिति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

शिक्षा के क्षेत्र में परीक्षाएं आप परिश्रम से ही उतीर्ण करेंगी तथापि प्रारंभिक कक्षाओं में आपको अच्छी सफलता मिलेगी लेकिन उच्च कक्षाओं में प्रतिशत अंकमें कमी आ सकती है जिससे स्नातक परीक्षा आप अत्यधिक परिश्रम से उतीर्ण करेंगी लेकिन तकनीकी शिक्षा आपके लिए लाभदायक होगी। अतः स्नातक की अपेक्षा यदि आप तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में ही अध्ययन करें तो आपको इच्छित सफलता मिलेगी तथा आपका परिश्रम भी रंग लाएगा एवं मानसिक असंतुष्टि से भी सुरक्षित होंगी।

चतुर्थभाव मनुष्य की कुंडली में हृदय का स्थान माना गया है। इस भाव में नैसर्गिक पाप ग्रह राहु की स्थिति के प्रभाव से आयु में वृद्धि के साथ साथ आपको हृदय संबंधी कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही रक्त चाप की भी संभावना है। अतः युवावस्था से ही आपको खान पान पर नियंत्रण रखना चाहिए जिससे भविष्य में आपको अनावश्यक परेशानियों का सामना न करना पड़े।

RATNA JYOTI

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

PijushNandi

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सांसारिक एवं अन्य कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप कठिन से कठिन कार्य को आसानी से पूर्ण करने में भी समर्थ होंगे। यद्यपि वैदिक धर्म एवं दर्शन शास्त्रों में आपकी रूचि अल्प होगी परंतु आधुनिक साहित्य कविता एवं कला में आप पूर्ण रूचि रखेंगे। पाश्चात्य कला, संगीत एवं साहित्य के विशेष प्रेमी होंगे तथा इन क्षेत्रों में आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से ज्ञान अर्जित करके समाज में अपने प्रभुत्व को स्थापित करने में समर्थ होंगे। फलतः आपका सम्मान एवं विद्वता का प्रभाव समाज में बना रहेगा।

पंचमभाव में कन्या राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आप अधिक लिप्त रहेंगे तथा अधिकांश प्रसंग आप मनोरंजन या मानसिक सन्तुष्टि के लिए स्थापित करेंगे। आपके प्रेम प्रसंग में आदर्श, यथार्थवाद एवं मर्यादा की भी कमी होगी। फलतः ऐसे क्षेत्र में आप अपने लिए अनावश्यक परेशानियां एवं अशान्ति उत्पन्न कर सकते है तथा वैवाहिक जीवन पर भी दुष्प्रभाव हो सकता है। अतः ऐसे प्रसंगों की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए तभी आप सुखी रह सकते है।

पंचमभाव में बुध की राशि के प्रभाव से आपको यथा समय संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा आपकी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होगी तथा आज्ञाकारिकता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा एवं एक दूसरे के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव भी रखेंगे । वे व्यावहारिक बुद्धि के स्वामी होंगे फलतः जीविकार्जन एवं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ रहेंगे। सुख दुःख में माता पिता की पूरी सेवा करेंगे।

अध्ययन के प्रति बच्चों की रूचि सामान्य होगी तथापि परिश्रम पूर्वक वे वांछित शिक्षा अर्जित करने में समर्थ होंगे। यद्यपि किसी मान्यता प्राप्त प्रशासनिक या अन्य क्षेत्रों में वे परिश्रम एवं पराक्रम से ही प्रवेश कर रखेंगे परंतु वाणिज्य क्षेत्र में योग्य सिद्ध होंगे तथा इसी से अपने जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगे। अतः इनके लिए आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि अपने लिए आपको पूर्ण धन संचय करके रखना चाहिए जेकि आपके सुख दुख के समय काम आएगा तथा बच्चों को स्वावलंबी छोड़ देना चाहिए एवं उनके कार्यो में दखल नहीं देना चाहिए। इससे आप तथा वे शान्ति एवं सन्तुष्टि अनुभूति करेंगे।

mun

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी बुद्धिमता से समस्त सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। इससे आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर तो होंगी ही

साथ ही सामाजिक जनो में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा वे आपकी बुद्धिमता का आदर करेंगे। आपकी बुद्धि व्यावहारिक होगी तथा शीघ्र एवं व्यावहारिक रूप से किसी भी समस्या का समाधान करने में समर्थ होंगी। वैदिक शास्त्रों एवं साहित्य में आपकी रूचि कम होगी परंतु आधुनिक शास्त्रों के प्रति विशेष लगाव होगा तथा इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी जिससे आपकी विद्वता समाज में दूर दूर तक व्याप्त होगी।

पंचमभाव में सिंह राशि की स्थिति के प्रभाव से आप एक व्यावहारिक महिला होंगी तथा भावुकता के भाव की आप में न्यूनता होगी। प्रेम प्रसंगों में आपकी विशेष रूचि कम ही होगी तथापि यदि कोई प्रसंग चला भी तो इसमें आप आदर्शवादिता एवं मर्यादा का पूर्ण ध्यान रखेंगी क्यों कि आप स्वाभिमानी एवं आदर्शवादी महिला है। इससे आपका प्रेम प्रसंग विवाह में भी परिवर्तित हो सकता है लेकिन प्रेम में भावुकता को कोई स्थान नहीं देंगी।

सिंह राशि की स्थिति पंचमभाव में होने के कारण आपको सन्तति का सुख अवश्य प्राप्त होगा तथा पुत्र की भी विलंब से परंतु निश्चित प्राप्ति होगी। आपकी संतति संख्या अल्प ही होगी तथा सभी योग्य कुशल परिश्रमी एवं बुद्धिमान होंगी। माता की अपेक्षा पिता से बच्चों का अधिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए पिता पर अधिक निर्भर होंगे तथापि दोंनो को पूर्ण सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता पिता की अवश्य सलाह लेंगी। अतः बच्चों से आप सुखी एवं संतुष्ट रहेंगी तथा उनसे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

अध्ययन के प्रति बच्चों की प्रारंभ से ही रूचि होगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में वे वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। वे तेजस्वी बुद्धिमान एवं व्यावहारिक होंगे तथा अन्य सामाजिक जनों, समीपरस्थ संबंधियों एवं मित्रवर्ग के मध्य अपना प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होंगे जिससे वे सबके स्नेह एवं आदर के पात्र होंगे। बच्चों के इनगुणों से आप भी अभिभूत होंगी तथा स्वयं को गौरवान्वित महसूस करेंगी। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

PijushNandi

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेंगी। आप यदा कदा बुखार या अन्य सामान्य रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आप में रोग अवरोधक तत्वों की न्यूनता होने से जब एक बार बीमार पड़ेगें तो इसमें ठीक होने में काफी समय लग जाएगा। इसके अतिरिक्त भावुकता में आपको वाहन आदि को भी सामान्य गति से चलाना चाहिए।

आपके शत्रु काफी होंगे तथा समय समय पर आपको नीचा दिखाने के लिए वे प्रयत्नशील रहेंगे क्योंकि वे आपकी खुशहाली के प्रति ईर्ष्या का भाव रखते हैं। साथ ही आपके मित्र, संबन्धी एवं पड़ौसी भी आपके ऐश्वर्य से ईर्ष्या करेंगे अतः ये भी समय समय पर शत्रुओं का कार्य करेंगे जो कि आपके अन्य प्रत्यक्ष शत्रुओं से अधिक प्रभावी होंगे। यद्यपि मुकद्दमे आदि में आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी परन्तु धन संबन्धी मामलों में आप कोई मुकद्दमा दायर कर सकते हैं। इसमें आपका धन व्यय अधिक होगा परन्तु कुछ परिश्रम के बाद आपको इसमें सफलता मिल सकती है। आपके नौकर आपके लिए विश्वास पात्र नहीं रहेंगे तथा पारिवारिक गुप्त रहस्यों को वे अन्य लोगों को बताकर आपके सम्मान में न्यूनता लाएंगे। साथ ही उनकी चोरी करने की आदत से भी आपको आर्थिक हानि की संभावना रहेगी।

आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा अपनी रूचि के अनुसार ही कार्यो को सम्पन्न करेंगे। यद्यपि आपके पास प्रचुर मात्रा में धनागमन होता रहेगा लेकिन आपात्काल के लिए आप बचाव करने में असमर्थ रहेंगे तथा प्रौढ़ावस्था में आपको भाइयों या संबन्धियों के कारण आपको ऋृण के बोझ में दबना पड़ सकता है। इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता होगी अतः ऐसी परिस्थितियों से सावधान रहना चाहिए। आपके मामा मामियों से संबन्ध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा उनसे सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। खान पान के प्रति भी आपको सतर्क रहना चाहिए अन्यथा वृद्धावस्था में आपको वायु, गुर्दे तथा प्रमेह संबन्धी रोगों से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप एक धनवान व्यक्ति होंगे परन्तु समाज में आपके अच्छे कार्यो से भी लोगों से शत्रुता के भाव में वृद्धि होगी अतः सावधान रहें।

mun

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी। अतः इसके प्रभाव से आप यदा कदा नाक कान या गले से संबन्धित परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। आप में सहनशीलता के भाव की न्यूनता रहेगी तथा समय समय पर चर्म रोगों से भी आपके लिए समस्या उत्पन्न होगी। आपको क्रोध एवं उत्तेजना के भाव पर नियंत्रण रखना चाहिए अन्यथा इसके दुष्प्रभाव से आपके मित्रों की संख्या में न्यूनता आएगी तथा शत्रु पक्ष की वृद्धि

होगी। आपके शत्रु या विरोधी पक्ष में बन्धु पड़ोसी एवं सरकारी प्रतिनिधि मुख्य रहेंगे तथा इनसे आपको समय समय पर परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। अतः आप अपने क्रोधी स्वभाव पर नियंत्रण रखें तथा किसी भी व्यक्ति की अनावश्यक रूप से आलोचना न करें। इससे आपके शत्रु एवं विरोधियों की संख्या में न्यूनता आएगी ।

आपके लिए धन संबन्धी झगड़े या मुकद्दमे अनुकूल नहीं रहेंगे तथा इनसे आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी अतः यत्न पूर्वक ऐसे मुकद्दमों की उपेक्षा करें। नौकर-चाकरों से आप युक्त रहेंगी तथा इनकी आपको आवश्यकता होगी परन्तु यदा कदा धन या अन्य प्रकार से इनके द्वारा हानि हो सकती है। अतः इनकी नियुक्ति के समय पूर्ण जानकारी के बाद ही उन्हें नौकरी पर रखें । ऋण आदि लेने की भी आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। यदि आप ऐसा नहीं करेंगी तो ऋण भार से आपको जीवन में काफी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। मामा मामी का सुख एवं सहयोग भी आपको समय समय पर प्राप्त होता रहेगा तथा बाल्यावस्था में अधिक मिलेगा।

इसके अतिरिक्त खान पान आदि में तेज मसालों का उपयोग नहीं करना चाहिए अन्यथा इससे उदर या गुर्दे संबन्धी परेशानी हो सकती है। साथ ही शत्रु पक्ष का दमन करने में भी आप समर्थ रहेंगी परन्तु अनावश्यक व्यय की प्रवृत्ति का आपको त्याग करना चाहिए तभी जीवन में सुख एवं शान्ति प्राप्त हो सकेगी।

RATNA JYOTI

परिवार, विवाह एवं साझेदार

PijushNandi

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा बृहस्पति भी सप्तम भाव में ही स्थित है। वृश्चिक राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी पित प्रवृति धनवान एवं अधिक व्ययशील प्रवृति का मनुष्य होता है परन्तु शुभ ग्रह बृहस्पति के प्रभाव से वह विद्वान बुद्धिमान गुणवान तथा धर्म के प्रति श्रद्धा वाला होता है एवं धर्म या परोपकार संबंधी कार्यो में अधिक व्यय करता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी विदुषी बुद्धिमती एवं गुणवती महिला होगी तथा धर्म के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी फलतः धार्मिक कार्य कलाप समय समय पर होते रहेंगे। बृहस्पति के शुभ प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता की भावना भी होगी एवं सामाजिक तथा पारिवारिक जनों के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी। साथ ही अपनी मृदुवाणी से भी लोगों पर प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होंगी।

आपकी पत्नी सुंदर एवं गौरवर्ण की महिला होंगी तथा कद भी मध्यम होगा। उनका सौन्दर्य भी आकर्षक रहेगा एवं शरीर के अंग प्रत्यंग सुंदर पुष्ट एवं सुडौलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी परन्तु आयु के साथ साथ शरीर में स्थूलता भी आ सकती है। इसके लिए उन्हें नियमित रूप से व्यायाम या योगिक क्रिया करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त उच्च साहित्य के अध्ययन के प्रति उनकी रूचि रहेगी तथा सुंदर कलात्मक वस्तुओं के प्रति भी मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह अपने किसी श्रेष्ठ संबंधी या सम्मानीय व्यक्ति के द्वारा सम्पन्न होगा जिससे आपको सन्तुष्टि होगी। विवाह के बाद आप एक दूसरे की भावनाओं का पूर्ण आदर करेंगे तथा सुख दुख में पूर्ण सहयोग देंगे। साथ ही कोई भी सांसारिक महत्व का कार्य आपसी सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे इससे परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा दाम्पत्य जीवन भी सुख पूर्वक व्यतीत होगा जो अन्य जनों के लिए एक उदाहरण भी हो सकता है।

आपका विवाह किसी उच्च तथा प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा साथ ही उनसे नैतिक सहयोग आपको अवसरनुकूल मिलता रहेगा तथा सास ससुर के प्रति भी आपकी श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा वे भी आपको पुत्रवत स्नेह प्रदान करेंगे जिससे संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की पूर्ण सेवा एवं श्रद्धा की भावना रहेगी तथा सुख दुख में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी। साथ ही अपनी मृदुवाणी से भी उन्हें प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सहव्यवहार से प्रभावित होंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ एवं अनुकूल

रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ होगा। यदि अपनी आयु से अधिक आयु के व्यक्ति से साझेदारी की जाए तो उसके अधिक लाभ की संभावना रहेगी।

mun

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया तुला राशि चंचल भ्रमण प्रिय प्रियवक्ता तथा माता पिता एवं गुरू जनों पर श्रद्धा रखने वाली होती है। यह वायुतत्व राशि है जिससे जातक सौम्य एवं गंभीर स्वभाव का होता है। लेकिन मंगल नैसर्गिक रूप से तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं अग्नितत्व ग्रह है तथा तुला राशि में स्थित होने के कारण जातक की प्रबल कामेच्छा रहती है।

अतः इनके प्रभाव से आपके पति का स्वभाव सौम्यता के साथ साथ तेजस्वी भी होगा तथा अवसरानुकूल वे इस भाव का प्रदर्शन करेंगे। साथ ही साहस एवं पराक्रम का भाव भी उनमें विद्यमान रहेगा। अपने कार्यक्षेत्र में वह दक्ष होंगे एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे। पाक शास्त्र के प्रति उनकी विशेष रूचि रहेगी तथा यदा कदा उनके द्वारा बनाए गए स्वादिष्ट व्यंजन सबको प्रिय लगेंगे।

आपके पति लालिमा लिए गौर वर्ण के पुरूष होंगे तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा तुला राशि के प्रभाव से उनके सौंदर्य एवं व्यक्तित्व में प्रबल आकर्षण रहेगा। साथ ही शारीरिक स्वस्थता एवं अंगों की पुष्टता के लिए वे व्यायाम या यौगिक क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगे। अग्नि तत्व ग्रह मंगल के प्रभाव से उनकी शारीरिक संरचना में पतलापन रहेगा परन्तु आकर्षण में कोई कमी नहीं आएगी।

सप्तम भाव में तुला राशि के प्रभाव से आपका विवाह उचित समय पर होगा तथा इसमें कोई अनावश्यक परेशानी नहीं होगी। आपका विवाह विज्ञापन या किसी समीपी संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा तथा सुख दुख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा सांसारिक कार्य कलापों को एक दूसरे की सहमति से पूरा करेंगे। इससे आपस में विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा।

आपका विवाह समृद्ध परिवार में होगा तथा ससुराल पक्ष के लोग धनऐश्वर्य से सुसम्पन्न होंगे। विवाह के समय ससुराल से आपको प्रचुर मात्रा में दहेज तथा उपहारों की प्राप्ति होगी जिससे आर्थिक समृद्धि में वृद्धि होगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति का विशेष सेवा एवं सम्मान का भाव होगा।जिससे उनसे संबंधों में मधुरता रहेगी साथ ही साले एवं सालियों से भी सौम्य स्वभाव के कारण उनके मैत्री पूर्ण संबंध बनेंगे।

व्यापार या अन्य योजनाओं में साझेदारी की दृष्टि से आप के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

PijushNandi

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आपकी ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक इसके ज्ञानार्जन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी कुछ कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आप के पास पैतृक सम्पत्ति रहेगी लेकिन वह अधिक नहीं होगी साथ ही उसका उपयोग भी आप अच्छी तरह करने में असमर्थ से रहेंगे। आपके संबन्धी भी आपकी जमीन जायदाद आदि पर अपना दावा कर सकते है जिससे अनावश्यक तर्क वितर्कों के साथ वातावरण अप्रसन्नता से युक्त रहेगा। इसके प्रभाव से पारिवारिक कलह भी हो सकता है। अतः यह जायदाद सन्तुष्टि की जगह असन्तुष्टि का भाव ही उत्पन्न करेगी।

विवाह के समय दहेज आदि आपको मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा तथा ससुराल पक्ष से किसी निश्चित रकम के बारे में कोई विवाद भी हो सकता है जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता प्रभावित हो सकती है। आपको न्यूनाधिक रूप से बीमा अवश्य कराना चाहिए चाहे वह किसी का भी हो इससे आपको न्यूनाधिक लाभ अवश्य प्राप्त होगा यद्यपि जीवन में आपको यहां चोरी आदि की संभावना नहीं है तथापि सावधान अवश्य रहना चाहिए। आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित धनार्जन करेंगे तथा विशिष्ट धन लाभ के भाव की अल्पता रहेगी। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में आप स्वस्थ रहकर अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे परन्तु वृद्धावस्था में यदा कदा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे लेकिन इसका विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा।

mun

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक व्यावहारिक महिला होंगी तथा आधायात्म या ज्यौतिष विषयों पर अधिक विश्वास नहीं करेंगी। आप भाग्य की अपेक्षा कर्म पर अधिक विश्वास करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा जमीन जायदाद मुकद्दमे तथा अन्य किसी भी प्रकार से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होता रहेगा। साथ ही पैतृक सम्पत्ति या किसी संबन्धी आदि की जायदाद मिलने के योग भी बनते है। इससे आपकी खुशहाली तथा वैभव में वृद्धि होगी। पति के लिए भी आप भाग्यशाली रहेंगी तथा विवाह के बाद सर्वत्र उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे जिससे ससुराल से आपको पूर्ण मान सम्मान तथा स्नेह प्राप्त होगा।

जीवन में आपके घर में चोरी आदि की संभावनाएं अल्प मात्रा में ही होंगी तथा कोई ऐसी घटना होगी भी तो उसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। अतः इस विषय में आपको कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए फिर भी सावधानी वश अपनी बहूमूल्य वस्तुओं तथा आभूषणों को उचित सुरक्षा में रखना चाहिए। आपका स्वयं का अथवा अन्य महत्वपूर्ण वस्तुओं का बीमा

अवश्य कराना चाहिए क्योंकि बीमे आदि से आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा। साथ दीर्घावधि बीमा की अपेक्षा लधु अवधि के बीमों से आपको शीघ्र लाभ प्राप्त होगा। आप सामान्यतया स्वस्थ तथा दीर्घजीवी होंगी तथापि वाहन चालन आदि में आपको सावधानी रखनी चाहिए तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए। इस प्रकार आप का सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

RATNA JYOTI

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

PijushNandi

आपके जन्म समय में नवम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप धर्म तथा धार्मिक कार्य कलापों का विरोध नहीं करेंगे परंतु स्वयं की इसमें कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही इच्छा पूर्वक किसी भी धार्मिक ग्रंथ के अध्ययन के इच्छुक भी नहीं रहेंगे लेकिन ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप व्रतादि का भी आचरण करेंगे। आप दैनिक पूजा पाठ भी सम्पन्न करेंगे या इस उदद्शेय की पूर्ति के लिए प्रतिदिन किसी मंदिर या अन्य पूजास्थल में जा सकते है। आप धार्मिक कार्य कलापों में विशेष व्यय करना उचित नहीं समझते। इसके साथ ही अन्य विषयों में उच्चशिक्षा अर्जित करने के लिए विशेष उत्सुक रहेंगे लेकिन धर्म एवं भाग्य को आप अपनी विचार धारा में सम्मिलित कम ही करेंगे। आपकी अर्न्तप्रज्ञा विकसित रहेगी तथा शरीर में आत्मा को स्वीकार करेंगे।

आपके विचार में जीवन कर्म प्रधान होना चाहिए तथा भाग्य इसमें सहायक की भूमिका निभाता है। अतः अन्य जनों को हमेशा कार्य करने की शिक्षा देंगे तथा भाग्य पर अल्प विश्वास करने के लिए कहेंगे लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप स्वयं कर्म की अपेक्षा भाग्य की महत्ता को अधिक मात्रा में अनुभव करेंगे तथा आपके विचार में भाग्य की प्रबलता के बिना कर्म का कोई विशेष महत्व नहीं है। आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इनसे विशेष लाभ भी नहीं होगा लेकिन समाज में सम्मानीय तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे। आप अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के फल से मध्यमायु में शुभ फल प्राप्त करेंगे तथा इस समय सुखी रहेंगे लेकिन वृद्धावस्था में किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही पौत्रादि का सुख भी मध्यम ही रहेगा।

mun

आपके जन्म समय में नवम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करती रहेंगी। साथ ही तीर्थ स्थानों की यात्रा करने की भी इच्छुक रहेंगी। आप प्रतिदिन न्यूनाधिक समय दैनिक पूजापाठ में व्यतीत करेंगी। समाज में धर्म के क्षेत्र में आप कई कार्य सम्पन्न करेंगी तथा धर्म का आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा। ईश्वर के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा आपके विचार से उसकी इच्छा से ही समस्त संसार संचालित होता है। इसके साथ ही कर्म की अपेक्षा भाग्य पर अधिक विश्वास करेंगी।

आप में अन्तर्प्रज्ञा शक्ति विद्यमान रहेगी अतः किसी भी विषय में पूर्वाभास के द्वारा आपको अनुभूति होगी साथ ही यदा कदा आपकी भविष्य वाणी भी सत्य सिद्ध हो सकती है। धर्म संबधी क्षेत्र में आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगी तथा लम्बी दूरी की तीर्थ यात्राएं भी सम्पन्न करेंगी। जीवन में आपको सामाजिक तथा कार्य क्षेत्र में इच्छित सफलता प्राप्त होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे साथ ही मान सम्मान में भी वृद्धि होगी। आपके विचार में वर्तमान

काल में जो भी शुभ या अशुभ फल प्राप्त होते है वे सब पूर्व जन्म के अर्जित कार्यो पर आधारित होते है अतः मानसिक शान्ति आपकी बनी रहेगी। पौत्रों से आपको उचित सुख एवं आनंद की प्राप्ति होगी तथा आपकी वे पूर्ण सेवा करेंगे। साथ ही ज्यौतिष तथा तंत्र मंत्र का ज्ञान अथवा इनके प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा ।

इसके अतिरिक्त आप धर्मानुपालन में तत्पर देवता तथा ब्राह्मणों की सेविका, महात्माओं की आज्ञा का पालन करने वाली तथा परम्परागत धर्म से समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाली होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगी।

RATNA JYOTI

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

PijushNandi

आपके जन्म समय में दशमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। कुम्भ राशि वायुतत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र निरंतर उन्नतिशील रहेगा एवं किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही इच्छित उन्नति एवं सफलता भी मिलती रहेगी।

दशम भाव में कुंभ राशि का स्वामी शनि है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आजीविका उत्तम रहेगी। आपके लिए वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम उद्योगों में भागीदारी, फैक्टरी कर्मचारी, संदेशवाहक तथा राजनीति के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता मिल सकती है। अतः यदि आप अपनी आजीविका इन्हीं क्षेत्रों में प्रारंभ करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने में आप समर्थ होंगे। साथ ही राजनीति आपके लिए काफी अनुकूल होगी तथा इस क्षेत्र में अल्प समय में ही आप काफी उन्नति करने में समर्थ हो सकते है। अतः आजीविका में वांछित सफलता एवं नवीन आयाम स्थापित करने के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों में ही अपना कार्य क्षेत्र निश्चित करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में लोहे के व्यापार से विशिष्ट लाभ प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही भारी उद्योग, फैक्टरी, पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार प्रेस, खेती, बागवानी, आदि के कार्यो से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ होंगे तथा जीवन में विशिष्ट उन्नति तथा लाभ अर्जित करेंगे। अतः आपको चाहिए कि यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपने व्यापार का शुभारम्भ करें।

योगकारक ग्रह की राशि के प्रभाव से जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं पद अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आपको प्रचुर मात्रा में यश तथा प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी। आपका सम्पर्क अधिकारी एवं राजनैतिक नेताओं से बने रहेंगे जिससे सर्वत्र प्रभावशाली माने जाएंगे। साथ ही सामाजिक या सार्वजनिक संस्थाओं में भी आप उच्चपदाधिकारी के रूप में कार्यरत होंगे इनसे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा यश एवं प्रसिद्धि भी मिलेगी तथा आपका सामाजिक स्तर भी उच्च होगा।

आपके पिता तेजस्वी बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी पुरुष होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य जन उनके कार्यकलापों से प्रभावित रहेंगे। आपके प्रति उनका विशेष स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का समुचित ध्यान रखेंगे साथ ही आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा एवं उनके प्रभाव से भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ उन्नति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा पालन करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। इसके अतिरिक्त परस्पर सिद्धांतों एवं वैचारिक एकता होने के कारण संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

mun

आपके जन्म समय में दशम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही केतु भी दशम भाव में ही स्थित है। भूमि तत्व मकर राशि एवं वायुत्व केतु के प्रभाव से आपका व्यवसाय श्रमसाध्य होगा तथापि बौद्धिकता भी उसमें विद्यमान होगी। साथ ही वायुत्व केतु के प्रभाव से आप स्वंतत्र व्यवसाय को करना विशेष श्रेयकर समझेंगी तथा कार्यक्षेत्र में अवसरानुकूल परिवर्तन भी करती रहेंगी तथा ऐसे सामयिक परिवर्तनों से आपको लाभ होगा।

जीविका की दृष्टि से आपके लिए वायुसेना, एअर लाइन्स, एअर ट्रैवल एजेन्सी, खनिज एवं खान विभाग, रासायनिक क्षेत्र, राजनीति, उद्यमों में कार्य, फैक्टरी कर्मचारी, सन्देश वाहक (दूत) तथा पेट्रोलियम विभाग अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों में यदि आप अपनी आजीविका क्षेत्र का चयन करेंगी तो जीवन में आपको प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा तथा इच्छित उन्नति एवं सफलता भी प्राप्त होगी एवं उन्नति में अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना भी करना पड़ेगा। अतः यत्नपूर्वक आपको इन्ही विभागों में कार्य करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति में एवं लाभ अर्जित करने के लिए आपको खनिज पदार्थ, ट्रैवल एजेन्सी, लोहे का उत्पादन, फैक्टरी, पेट्रोल पम्प, खेती बागवानी एवं भारी उद्योग का क्षेत्र अनुकूल रहेगा। यदि आप अपना व्यवसाय इन क्षेत्रों में करेंगी आपको इच्छित धन अर्जित होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी। साथ ही प्रगति में किसी भी प्रकार की अनावश्यक परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में व्यापारिक कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

मकर राशि में दशम भावस्थ केतु के प्रभाव से जीवन में आप उच्चपद एवं सम्मान अर्जित करने में समर्थ होंगी। साथ ही किसी सार्वजनिक संस्था या सामाजिक परोपकार संबंधी संस्थाओं के भी आप किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में मनोनीत की जा सकती है। लेकिन उचित मान सम्मान एवं पद प्राप्त करने में आपको किंचित विलम्ब का सामना करना पड़ सकता है एवं इसमें अनावश्यक समस्याएं एवं व्यवधान भी उत्पन्न हो सकती हैं। परन्तु इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा ईमानदारी एवं परिश्रमपूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी एवं उग्रस्वभाव के व्यक्ति होंगे परन्तु उनका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जन उनसे पूर्ण रूप से प्रभावित रहेंगे। साथ ही सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं शिक्षा के स्तर के प्रति पूर्ण सचेत दौरान आपकी- अध्ययन पर काफी व्यय करेंगे। आपका कार्यक्षेत्र भी उन्हीं के प्रभाव से प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होगा। आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन में तत्पर होंगी परन्तु नैसर्गिक पाप ग्रह केतु के प्रभाव से संबंधों में यदा कदा मतभेद एवं तनाव उत्पन्न होंगे। अतः यदि ऐसी स्थिति की यत्नपूर्वक उपेक्षा की जाए तो आपके परस्पर संबंधो में अनुकूलता आएगी तथा जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

PijushNandi

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईमानदारी तथा सत्य का अनुपालन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक उनको पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही आप जब भी जिस वस्तु की कामना करते है आपको उसकी प्राप्ति भी हो सकती है। आप शिक्षक, बैंक अधिकारी, वकील कम्पनी या सरकारी अधिकारी के रूप में व्यवसायिक सफलता अर्जित कर सकते है या इन लोगों से आपको समय समय पर विशिष्ट लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इसके प्रभाव से आप मित्रों के संबंध में भाग्यशाली रहेंगे तथा उनसे आपको समय समय पर इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। मित्रों से आप को जीवन में उचित प्रोत्साहन भी प्राप्त होगा जिससे आपकी उन्नति होगी तथा वे आपसे वयस्क एवं अनुभवी होंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा बड़े बड़े अधिकारी मंत्री नेता या महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपका मेल जोल या संबंध रहेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही महत्वपूर्ण लोगों के प्रभाव से आप उचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपके संबंध सामान्यतया मधुर रहेंगे आवश्यकतानुसार उनका सहयोग भी मिलता रहेगा। आपके आय के साधन मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य भी हो सकते है जिससे की आपका धनार्जन अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में आप समयानुसार कोई विशिष्ट सम्मान भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते है। इसके अतिरिक्त बाएं कान के दर्द से यदा कदा परेशान हो सकते है परन्तु सामान्य जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगे।

mun

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप सौभाग्य से युक्त रहेंगी तथा अपनी अधिकाशं इच्छाओं एवं मनोकामनाओं को परिश्रम पूर्वक पूर्ण करने में समर्थ रहेंगी। आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा मन में कई उमंगे विद्यमान रहेंगी लेकिन अन्य जनों की अपेक्षा आपकी अधिकांश इच्छाएं सरलता से पूर्ण हो सकेंगी । अतिरिक्त आय स्रोतों में वृद्धि करने के लिए आप मूल संबन्धी व्यापार, लकड़ी या खनिज पदार्थो अथवा पेट्रोलियम आदि से इच्छित धनार्जन करने में समर्थ हो सकती है। यदि आप कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त साधनों से आपके पति की आय हो सकती है।

आप स्थाई मित्रता की इच्छुक रहेंगी अतः आपका मित्र मंडल अधिक विस्तृत नहीं होगा। मित्रों के मध्य आपको हार्दिक प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। साथ ही उनसे इच्छित लाभ सहयोग एवं सम्मान भी प्राप्त होता रहेगा लेकिन आप अपनी आयु से अधिक आयु वाले लोगों से अधिक मित्रता करना पसंद करेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी होगा। प्रौढ़ या

वृद्धावस्था में मित्रों के मध्य आप अत्यंत ही आदरणीया रहेंगी तथा सभी को समय समय पर उचित सलाह या मार्ग निर्देशन प्रदान करेंगी।

सामाजिकता की भावना से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा सामूहिक उत्सव या मनोंरजन आपके लिए परमानन्द दायक रहेगा। समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा आदरणीया रहेंगी तथा सभी लोग आपको इच्छित आदर प्रदान करेंगे। बड़े भाइयों एवं बहिनों से आपको विशेष अपनत्व स्नेह तथा सहयोग की प्राप्ति होगी तथा आपका वे हर क्षेत्र में पूर्ण ध्यान रखेंगी। इसके अतिरिक्त यदा कदा बाऐं कान संबन्धी परेशानी से कष्ट होगा परन्तु इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा आपका सांसारिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

RATNA JYOTI

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

PijushNandi

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप धन का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल बचत भी करेंगे। आप समान्यतया अनावश्यक व्यय कम ही करेंगे। साथ ही धैर्य का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। आप धन की कीमत समझेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक इसका उपयोग करेंगे लेकिन आपको अपना पूंजीनिवेश सामान्य कंपनियों या अन्य स्थानों में नहीं करना चाहिए।

आपकी जीवन में उन्नति शनैः शनैः सम्पन्न होगी क्योंकि आप किसी कार्य को अत्यंत ही सोच समझकर धैर्य पूर्वक सम्पन्न करते हैं तथा आर्थिक स्थिति भी युवावस्था के बाद ही विशेष अनुकूल हो सकती है। अतः आपको आर्थिक क्षेत्र में किसी नाटकीय परिवर्तन की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आप लम्बी अवधि के निवेशों से लाभान्वित हो सकते है।

आपका सामान्य व्यय परोपकार संबंधी कार्यो पर होगा तथापि यदा कदा कोई अनावश्यक व्यय भी हो सकता है। अतः इससे आपको सावधानी रखनी चाहिए। यात्राओं से आपको आनन्द की अनुभूति होगी तथा समय समय पर इनसे लाभ भी होता रहेगा। आप जीवन में विदेश यात्रा अवश्य करेंगे। यह यात्रा आपकी धर्म या धार्मिक कार्यो से संबंधित होगी अथवा किसी अन्य व्यक्ति या संबंधी के सहयोग से आपको यह सुअवसर प्राप्त होगा। यह चाहे यात्रा किसी भी संदर्भ में हो आपके लिए आर्थिक एवं अन्य दृष्टियों से लाभदायक रहेगी तथा विभिन्न दर्शनीय स्थानों की सैर करने का भी आपको अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपको बायीं आंख में कोई परेशानी हो सकती है। अतः इसका उचित ध्यान रखना चाहिए।

mun

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक मामलों में प्रारंभ से ही सौभाग्यशाली रहेंगी लेकिन यदा कदा बिना सोचे समझें उन्नमुक्त रूप से धन व्यय करेंगी इससे आपको ऐसे समय में आर्थिक परेशानी हो सकती है यदि आप बुद्धिमता पूर्वक योजना बनाकर व्यय करेंगी तो आर्थिक परेशानियों से आप सुरक्षित हो सकती हैं।

आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति की महिला होगी तथा धार्मिक कार्य कलापों, तीर्थ यात्राओं, मन्दिर निर्माण, परोपकार संबंधी कार्यो पर काफी व्यय करेंगी। बच्चों की आप पूर्ण चिन्ता करेंगी तथा उनके रहन सहन, खान पान एवं पठन पाठन के प्रति विशेष ध्यान रखेंगी तथा उनका स्तर बढ़ाने के लिए उचित व्यय करेंगी। आप उन्हें अच्छे स्कूलों या कालेजों में प्रवेश दिलाने की इच्छुक रहेंगी। साथ ही आपके मित्र एवं संबंधी भी अधिक होंगे। अतः समय समय

पर इन पर आपका व्यय होता रहेगा। घर की साज सज्जा की वस्तुओं फर्नीचर आदि तथा अन्य भौतिक उपकरणों पर भी समय समय पर व्यय करती रहेंगी। लेकिन आप व्यय के बाद बजट देखेंगी इससे आपको कर्ज आदि भी लेना पड़ सकता है लेकिन इससे विशेष परेशानी नहीं होगी तथा आसानी से कर्ज चुका देंगी ।

नवीन ज्ञान तथा विचारों को प्राप्त करने के लिए आप यात्रा आदि सम्पन्न करेंगी। आपकी यात्राएं सामान्यतया शिक्षा या व्यावसायिक होंगी तथा इन यात्राओं से आपको इच्छित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आप समयानुसार विदेश संबंधी यात्रा भी करेंगी एवं काफी समय तक वहां रह भी सकती हैं । इस प्रकार जीवन में आपका प्रत्येक स्तर पर क्षेत्र बढ़ता रहेगा।

RATNA JYOTI

दशा विश्लेषण

PijushNandi

महादशा :- केतु
(01/02/2019 - 08/06/2021)

केतु की महादशा 01/02/2019 को आरम्भ और 08/06/2021 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु नवें भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि तृतीय भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण साझेदारों से लाभ, विवाह, यात्रा तथा जीवन में प्रगति हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में यात्रा, अध्यात्म में रुचि, उच्च शिक्षा और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में आत्मविश्वास है और आप शक्ति शाली तथा स्फूर्तिवान होंगे। छूत की बीमारी, फोड़े-फुन्सी, आँख में पीड़ा, पित्त दोष, निचले अंगों में कष्ट, बुखार आदि हो सकता है। ये मौसमी होंगे। कुछ सावधानी बरत कर इनसे बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपको पिता से लाभ मिल सकता है। आपको संचार-साधन, मास मीडिया तथा सगे-संबंधियों से लाभ हो सकता है। सट्टा और निवेश लाभदायक होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए तकनीकी तथा वैज्ञानिक सेवा, योजना और प्रशासन, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, दवा, सरकारी सेवा, शिक्षण आदि का चयन कर सकते हैं। रत्न, पत्थर, संगमरमर, अनाज, चमड़े, बिजली के सामान आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान और उच्च पद मिलेगा। यश, ख्याति और सम्मान की प्राप्ति होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का शुभ परिवर्तन होगा और कार्यों में सफलता मिलेगी। आपको लक्ष्य की प्राप्ति और विरोधियों पर विजय मिलेगी। उपार्जन और लाभ भी अच्छा होगा।

वाहन, यात्रा जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपको आराम मिलेगा। जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी। वाहन-सुख भी मिल सकता है। शनि की अन्तर्दशा में छोटी और शुक्र की अन्तर्दशा में बड़ी यात्रा होगी जो लाभदायक होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप उच्च शिक्षा ग्रहण करेंगे और अपनी पसन्द के संस्थान में आपका नामांकन होगा। इन्जीनियरिंग, भौतिक विज्ञान, अध्यात्म तथा गुप्त विद्या, भाषा, तत्त्व-विज्ञान आदि में रुचि हो सकती है। आप साहसी तथा दृढ़संकल्प हैं और अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे सुखी और समृद्धि शाली होंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य थोड़ा खराब रहेगा और शत्रुओं पर विजय मिलेगी जबकि पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा सम्पत्ति और सफलता मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों की विदेश-यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी जबकि बड़ों की शिक्षा होगी और समृद्धि, आराम और सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी तथा बच्चों से सुख, यश और ख्याति मिलेगी। शुक्र के कारण मामूली स्वास्थ्य समस्या, लाभ और ननिहाल पक्ष से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में धन-समृद्धि की प्राप्ति, यात्रा तथा धार्मिक कार्यों में रुचि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में परिवर्तन और कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी और अचानक लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यय होगा और उत्तम शिक्षा तथा बच्चों से सुख मिलेगा। राहु के कारण सुख, यश और ख्याति मिलेगी तथा जमीन-जायदाद और आराम में वृद्धि होगी। शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और कुछ बाधा होगी तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि बुध की अन्तर्दशा के दौरान व्यवसाय में सफलता, विवाह, साझेदारों से लाभ, यात्रा आदि हो सकती है।

mun

महादशा :- केतु
(01/02/2019 - 14/09/2021)

केतु की महादशा 01/02/2019 को आरम्भ और 14/09/2021 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु दशम भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति, समृद्धि, विरोधियों पर विजय तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको यश ओर ख्याति मिलेगी और जीवन में प्रगति तथा लाभ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप खुश और आशावादी होंगे। केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी तथा विषाणुजन्य बुखार, चर्मरोग, हृदय-पीड़ा, निचले अंगों में पीड़ा बुखार फोड़ा तथा अल्सर आदि हो सकते हैं। समय पर उपाय करने से इनसे बचाव हो सकता है।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। व्यवसाय-व्यापार में उपार्जन अच्छा होगा।

शत्रुओं-विरोधियों पर विजय मिलेगी। सट्टा-कार्य कम करें। पिता से कुछ लाभ होगा। जीविका-व्यवसाय के लिए कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, परिष्कृत कला, इंजीनियरिंग, सम्पर्क अधिकारी का कार्य, न्यायिक सेवा, प्रबन्धन तथा भाषा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। रत्न, विलासिता-सामग्री, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, कपड़े, रबड़ तथा प्लास्टिक आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कार्य स्थान में अनुकूल परिवर्तन आय में वृद्धि तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आपको वरिष्ठ कर्मचारियों का अनुग्रह तथा सहकर्मियों-सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों के जीवन में प्रगति, आय में वृद्धि तथा लाभ और व्यापार का विस्तार होगा। आर्थिक और व्यावसायिक उन्नति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी और साझेदारी में लाभ होगा। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और बड़ी दोनों यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे। आपको परीक्षा तथा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। भाषा, दवा, प्रबन्धन, इन्जीनियरिंग तथा विधि के विषयों में आपकी रुचि होगी। आप कूटनीतिक और स्नेही हैं और आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी। समाज सेवा में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की विरोधियों पर विजय और कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। उन्हें आपकी सहायता की जरूरत हो सकती है। आपके जीवनसाथी को सुख, जमीन जायदाद में वृद्धि और कुछ परिवर्तन होगा। आपकी माता को साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी जबकि पिता की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी और उनके साथ अचानक कोई घटना घटेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक लाभ और हानि और कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या होगी जबकि बड़ों के आवास या व्यवसाय में परिवर्तन, यात्रा और व्यय होगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति और जीवन में प्रगति होगी। शुक्र की दशा में बच्चों से सुख, शिशु का जन्म, सफलता तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यवसाय में लाभ होगा। मंगल के कारण जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और सगे-संबंधियों से सहायता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में यश और ख्याति की प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सफलता मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन-समृद्धि, यश तथा सफलता मिलेगी।

दशा विश्लेषण

PijushNandi

महादशा :- शुक्र
(08/06/2021 - 08/06/2041)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 08/06/2021 को आरंभ होकर 08/06/2041 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है और संगीत, नाटक, अच्छे स्वाद, भावनात्मक आनन्द और मनोरंजन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है एवं मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या राशि में निम्न का होता है। आपकी कुण्डली में यह अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव में स्थित यह आपकी जन्म कुण्डली के द्वितीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव, जिसमें यह स्थित है अर्थात अष्टम भाव दीर्घायु, पैतृक गुण, पैतृक सम्पत्ति, दुर्घटनाएँ, धोखे से मृत्यु, भाग्यहीनता, उदासी और अपयश का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

अष्टम भाव में स्थित शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है जो दीर्घ आयु का द्योतक है। इसलिए आपकी उम्र काफी लम्बी होगी तथा आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र अष्टम भाव में स्थित है जो आपके वित्तीय जीवन में काफी उतार-चढ़ाव देगा। आपकी जन्म कुण्डली में यह अष्टम भाव से द्वितीय भाव, जो धन का भाव है, को देख रहा है। अतः इस दशा काल में धन की कमी नहीं होगी और आप चल तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि कर पाने की स्थिति में होंगे। आपको कुछ विरासती सम्पत्ति भी मिल सकती है।

व्यवसाय :

व्यावसायिक रूप से सुभ्यस्त आप जमीन, वाहन, अधिकार, तथा पद प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में ख्याति करेंगे। आप कोई भी व्यवसाय करें, सफल होंगे। आप शिक्षित होंगे और आपका झुकाव धर्म की ओर होगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्र पूर्ण तथा नियमित होगा। जीवन में कुछ उदासी तथा बाधाएं आएंगी जिन्हें आप पार कर लेंगे। आपके पिता कुछ कठिनाइयों से गुजर सकते है अपने कार्य में असफल हो सकते हैं।

महादशा :- शुक्र
(14/09/2021 - 14/09/2041)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 14/09/2021 को आरम्भ होकर 14/09/2041 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र नवम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है, और संगीत, नाटक और आनन्द का द्योतक है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में निम्न का जबकि मीन राशि में उच्च का होता है। यह विवाह का कारक भी है। नवम भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्म कुण्डली के तृतीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् तृतीय भाव विश्वास, भाग्य, धार्मिक तथा अध्यात्मिक आस्था, ध्यान, त्याग, दान, पिता, गुरु, लम्बी यात्रा, उच्च शिक्षा, विदेश यात्रा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फल स्वरूप आपको कोई क्षति नहीं होगी तथा आप बिना किसी समस्या के एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आपको इस दशा काल में चल तथा अचल सम्पत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आप अपने कर्म और पिता सहित गुरु जनों के आशीर्वाद से काफी धन एकत्र कर पाएँगे।

व्यवसाय :

शुक्र नवम् भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आप अपने पारिवारिक व्यवसाय को जारी रखेंगे। आप भाग्यशाली हैं, आपको ख्याति मिलेगी, शिक्षा-प्रशिक्षण आपके पारिवारिक व्यवसाय को बड़े स्तर में ले जाने में सहायक होगा।

आप विदेश यात्रा कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

नवम भाव में स्थित शुक्र के फलस्वरूप आपके पिता दीर्घायु और समृद्धिशाली होंगे। आपकी दान-पुण्य के कार्यों में रुचि हो सकती है। आप अपने परिवार की परंपरा का निर्वाह करते हुए धनोपार्जन करेंगे। आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे। और परिवार को एकरूपता से प्रगति के पथ पर ले जाएंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके पदचिह्नों का अनुसरण करेंगे।

दशा विश्लेषण

PijushNandi

महादशा :- सूर्य
(08/06/2041 - 08/06/2047)

सूर्य की महादशा 08/06/2041 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की होकर 08/06/2047 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य पिता, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति, साहस, स्वास्थ्य, आनन्द और सात्विक स्वभाव का द्योतक है जबकि नवम भाव पिता, लम्बी यात्रा या तीर्थ यात्रा और उच्च शिक्षा का द्योतक है। अतः इस दशा में आपको आदर, शिक्षा तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली होंगे और आप में जीवन-शक्ति प्रचुर मात्रा में रहेगी। आपमें स्वास्थ्यलाभ की अद्‌भुत क्षमता होगी और आप किसी भी रोग से जल्द छुटकारा प्राप्त कर लेंगे। अतिशयताओं का परित्याग करें। मानसिक तथा शरीरिक विश्राम की आवश्यकता है। आपको हृदय अथवा आँखों की सम्भावित बीमारी को रोकने के लिये सन्तुलित आहर लेना चाहिए। गिरने अथवा चोट से बचना चाहिए।

अर्थ :

इस दशा के दौरान आप अत्यधिक भाग्यशाली होंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपको पिता से लाभ होगा अथवा पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आप स्वयं भी नौकरी अथवा व्यवसाय से धनोपार्जन करेंगे। आप स्वभाव से उदार हैं, किन्तु, आपको व्यय के प्रति सावधान रहना चाहिए। तथाकथित मित्रों से आपकी हानि हो सकती है। किन्तु इस महादशा में आपको सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप भाग्यशाली होंगे। आपको आपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आप एक जन्मजात नेता हैं और संगठनों, निगमों तथा अन्य सरकारी एजेसियों के प्रधान का कार्य अति सुन्दर ढंग से सम्पादित कर सकते हैं। आपको शक्तिशाली तथा आधिकारिक पद की प्राप्ति होगी। सैन्य तथा राजनीतिक कार्यों में आपकी रुचि होगी और आप उनमें अच्छा कर सकते हैं। प्रशासकीय कार्य, तकनीकी तथा विज्ञान सम्बन्धी सेवाएँ भी आपके अनुकूल होंगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारी, यात्राओं तथा विदेश से लाभ मिलेगा। बड़े भाई-बहनों को सभी प्रकार के लाभ, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति तथा मित्रों की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध उत्तम होंगे।

शिक्षा :

गुप्त विद्या में आपकी रुचि होगी अथवा आप चिकित्सा का क्षेत्र भी अपना सकते हैं।

mun

महादशा :- सूर्य
(14/09/2041 - 14/09/2047)

सूर्य की महादशा 14/09/2041 को आरंभ और 14/09/2047 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य दशम भाव में अवस्थित है। सूर्य शक्ति, प्रभुत्व, या, ख्याति, और राजकीय अनुग्रह का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि दशम भाव व्यवसाय, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति, प्राप्ति और कार्य के स्वभाव का सूचक है। अतः इस दशा में आपको व्यवसाय में लाभ तथा प्रतिष्ठा, सम्पत्ति तथा जीवन की सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें स्वास्थ्यलाभ की अद्‌भुत शक्ति है और आप किसी भी बीमारी से जल्द ही छुटकारा प्राप्त कर लेंगे।

अर्थ :

आप भाग्यशाली हैं आपको पर्याप्त संसाधनों की प्राप्ति होगी। आप स्वभाव से उदार व दानी हैं, इसलिये यदि आप पर्याप्त धन चाहते हैं तो अपने व्यय पर नियंत्राण रखें। आप अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आप पिता के कारोबार में शामिल हो सकते हैं और नौकरी तथा वाणिज्य-व्यापार से धन अर्जित कर सकते हैं। आपको सरकारी व्यवसाय से लाभ प्राप्त हो सकता है और कठिन परिश्रम से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस दशा में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी।

व्यवसाय :

आपको आपके सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आप एक जन्मजात नेता हैं और संगठनों, निगमों या अन्य सरकारी एजेंसियों के प्रधान होंगे। आपको शक्तिशाली व आधिकारिक पद की प्राप्ति होगी। इस दशा-काल में आपको नियत आमदनी के साथ-साथ एक सुरक्षित कार्य मिलेगा। आप सैन्य, राजनीतिक, प्रशसकीय, तकनीकी तथा वैज्ञानिक सेवाओं में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। रत्न, पत्थर, संगमरमर, सोना, कोयला, अनाज आदि का व्यवसाय लाभदायक होगा। नौकरी पेशा लोग इस दशा के दौरान बहुत अच्छा करेंगे और उनकी पदोन्नति होगी। उच्चाधिकारियों के अनुग्रह की प्राप्ति और आमदनी में वृद्धि होगी। व्यवसायियों -व्यापारियों को यश और ख्याति तथा विरोधियों पर विजय की प्राप्ति होगी।

परिवार :

आप इस दशा में अपने बच्चों को प्यार देंगे और उनका ध्यान रखेंगे। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे। आप अपने परिवार तथा जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रखेंगे। आपके मित्रों की संख्या बड़ी होगी और आपका सामाजिक जीवन उत्तम होगा। अपना विचार दूसरों पर न थोंपे। आपके जीवन साथी की आमदनी अच्छी होगी और उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपकी माता को सुख प्राप्त होगा और साझेदारी में लाभ प्राप्त होंगे। आपके पिता भाग्यशाली होंगे और उन्हें धन की प्राप्ति होगी। आपके भाई-बहनों की

अवांछित यात्राएँ और व्यय होंगे। उन्हें सुख-सुविधाएँ और लाभ प्राप्त होंगे।

शिक्षा :

आप धार्मिक प्रवचन देंगे, या योग में आपकी रुचि होगी।

RATNA JYOTI

PijushNandi

एस्ट्रोग्राफ – 2019

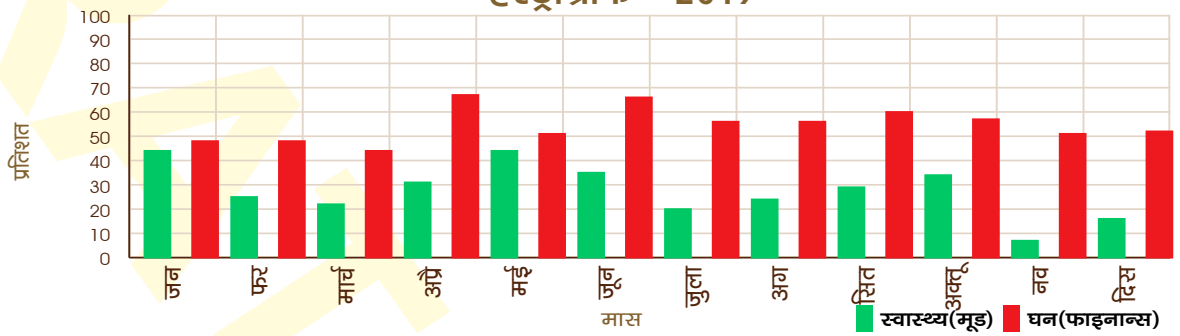

mun

एस्ट्रोग्राफ – 2019

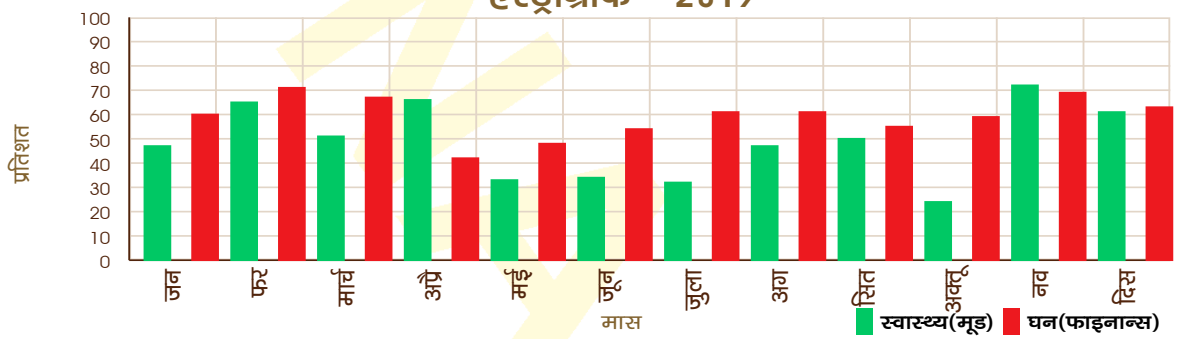

PijushNandi

एस्ट्रोग्राफ – 2020

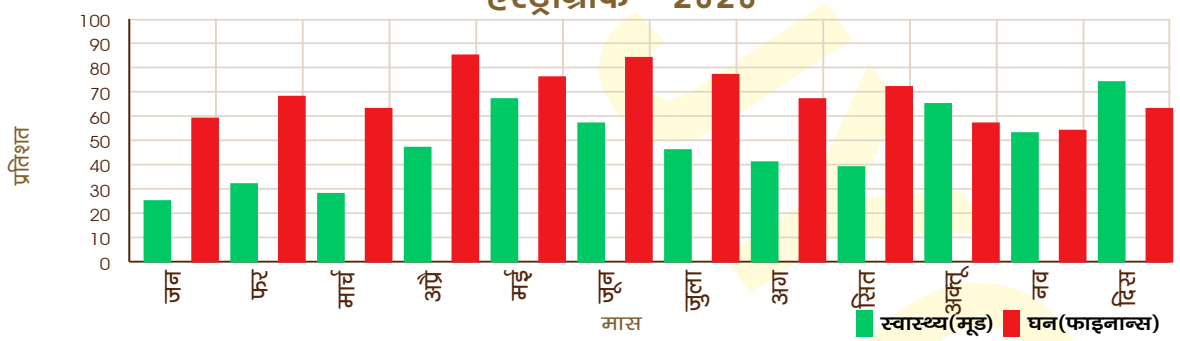

mun

एस्ट्रोग्राफ – 2020

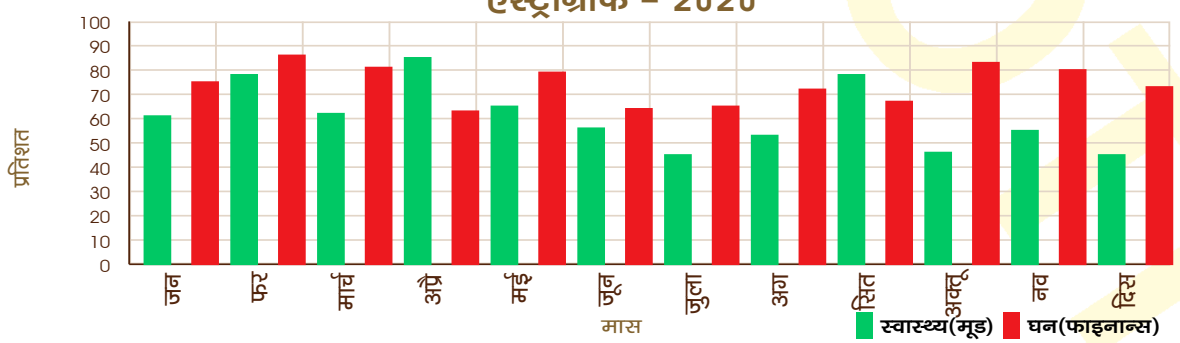

PijushNandi

एस्ट्रोग्राफ – 2021

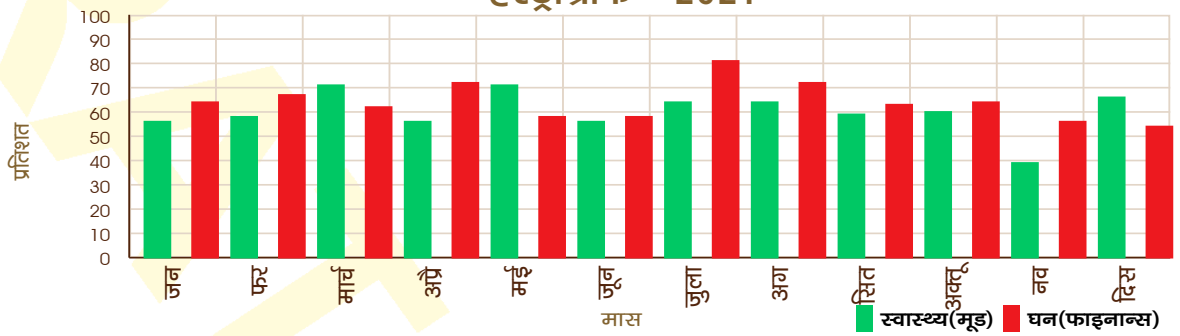

mun

एस्ट्रोग्राफ – 2021

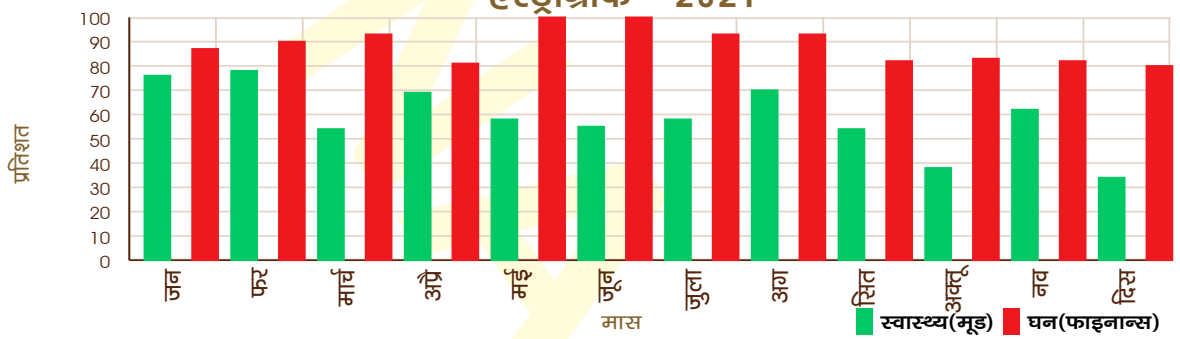

PijushNandi

एस्ट्रोग्राफ – 2022

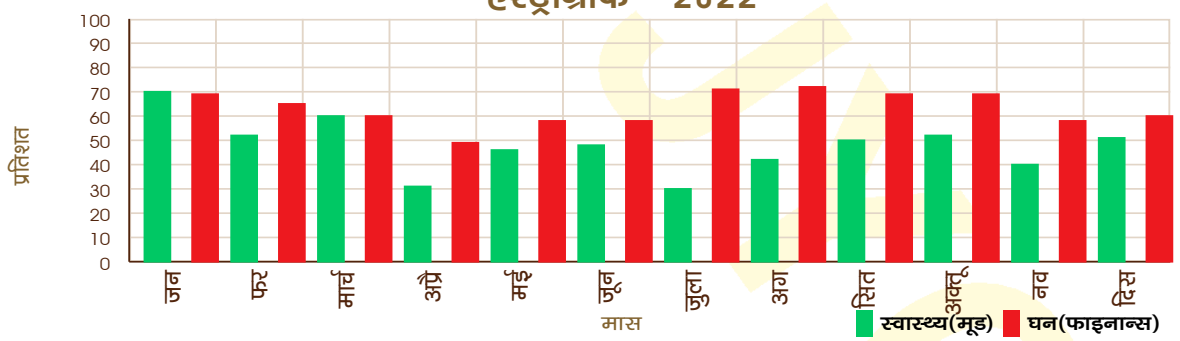

mun

एस्ट्रोग्राफ – 2022

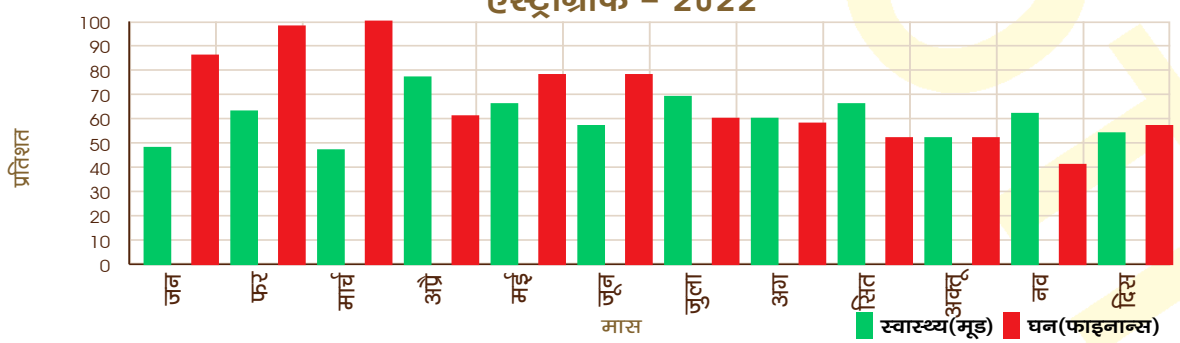

PijushNandi

एस्ट्रोग्राफ – 2023

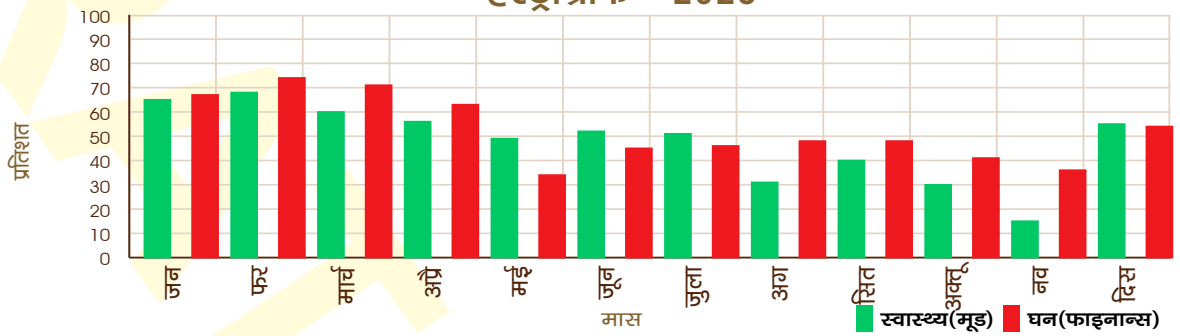

mun

एस्ट्रोग्राफ – 2023

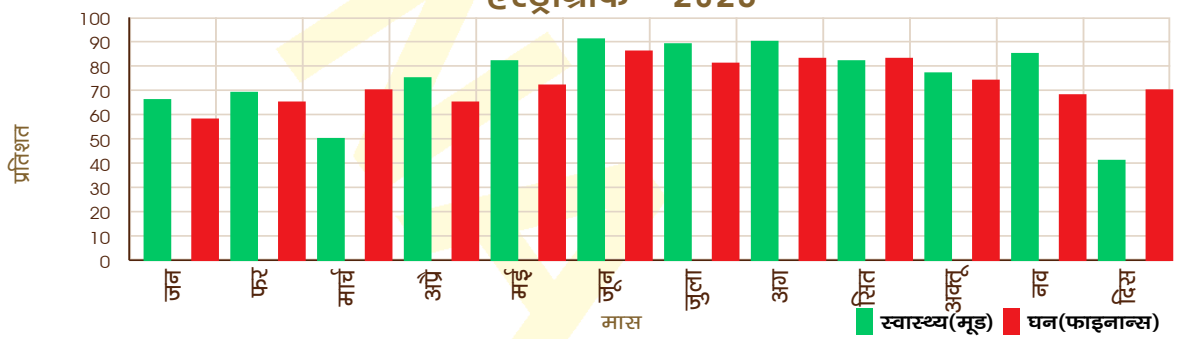

PijushNandi

एस्ट्रोग्राफ – 2024

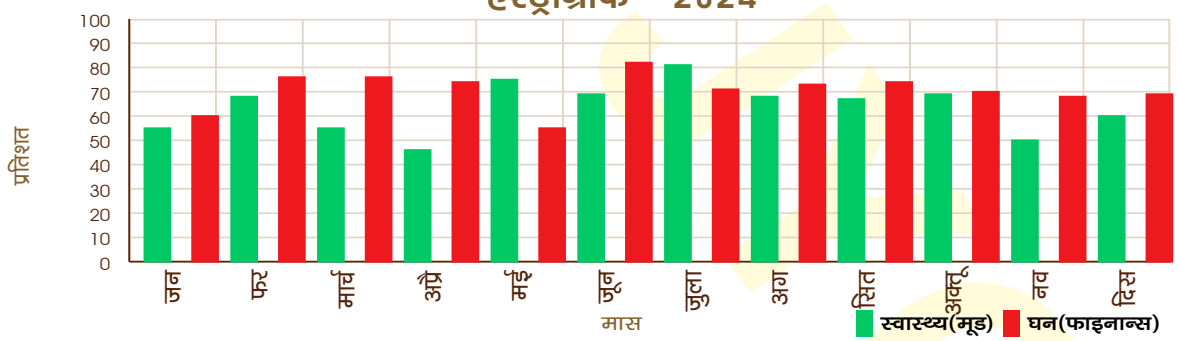

mun

एस्ट्रोग्राफ – 2024

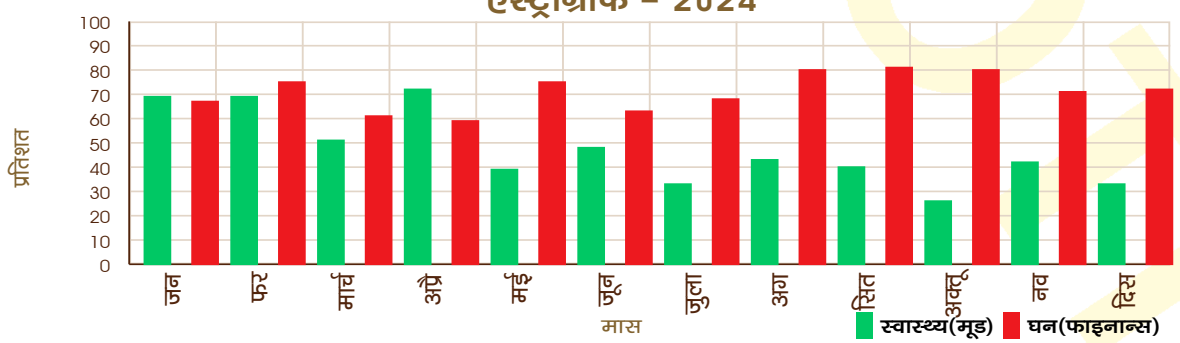

PijushNandi

एस्ट्रोग्राफ – 2025

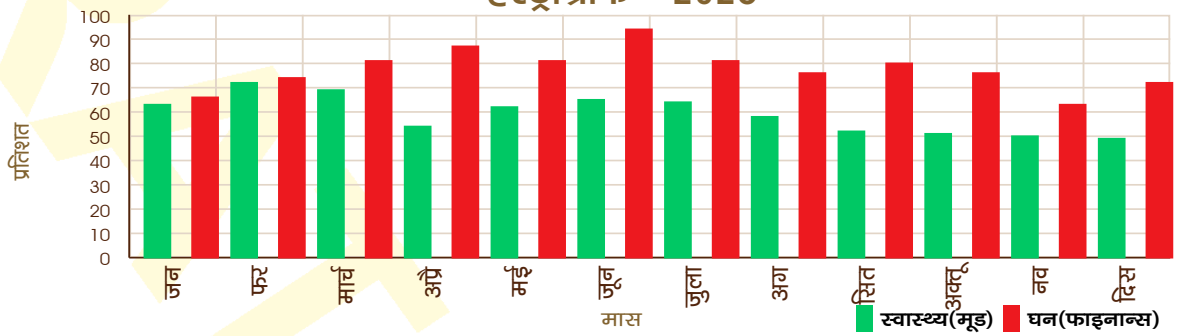

mun

एस्ट्रोग्राफ – 2025

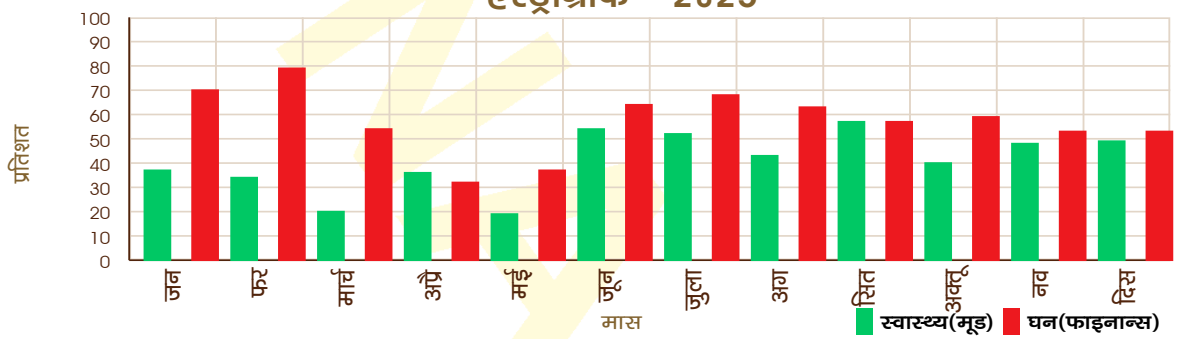

PijushNandi

एस्ट्रोग्राफ – 2026

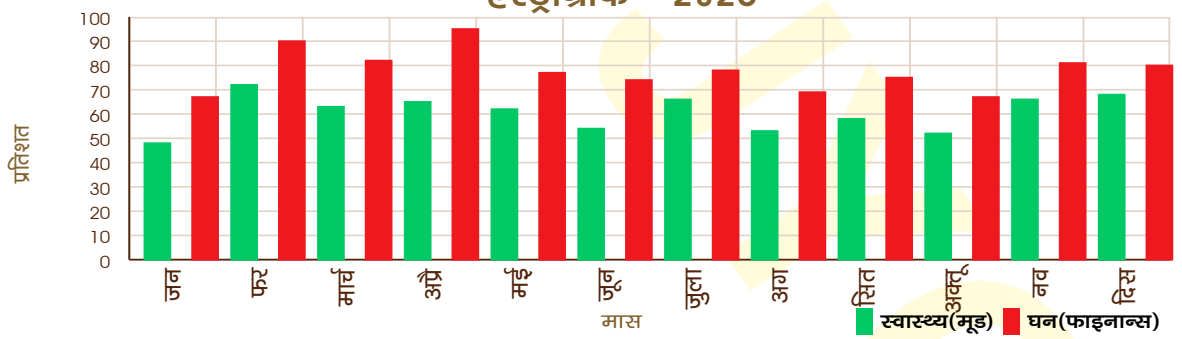

mun

एस्ट्रोग्राफ – 2026

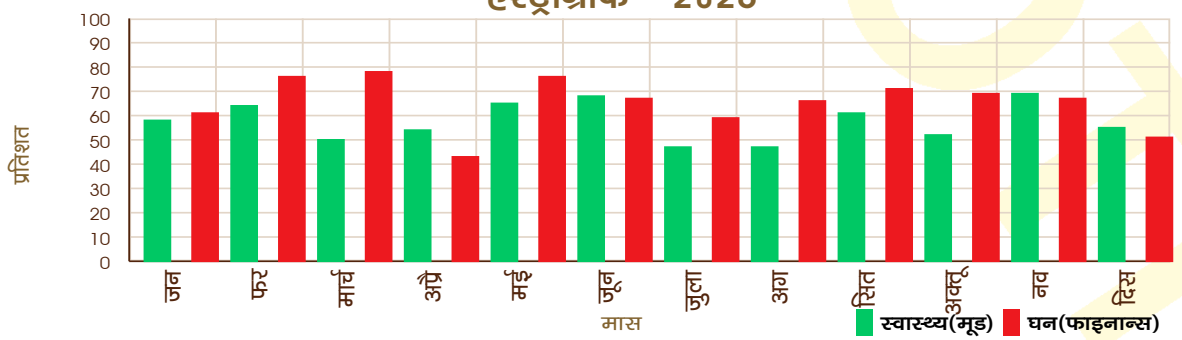

PijushNandi

एस्ट्रोग्राफ – 2027

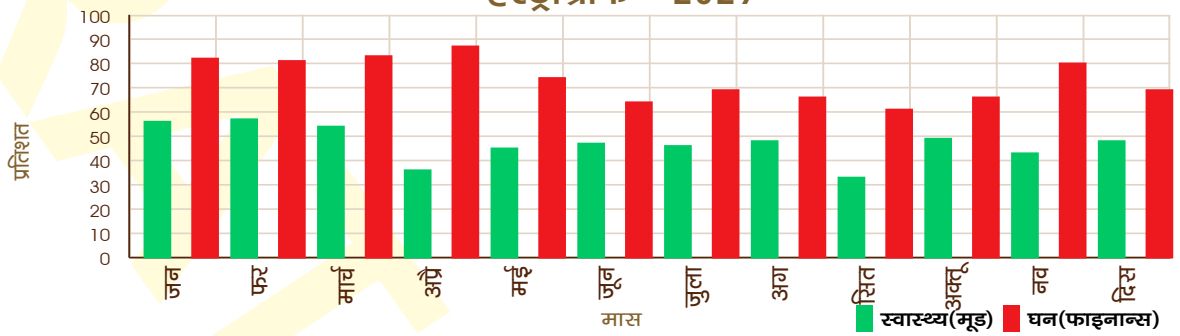

mun

एस्ट्रोग्राफ – 2027

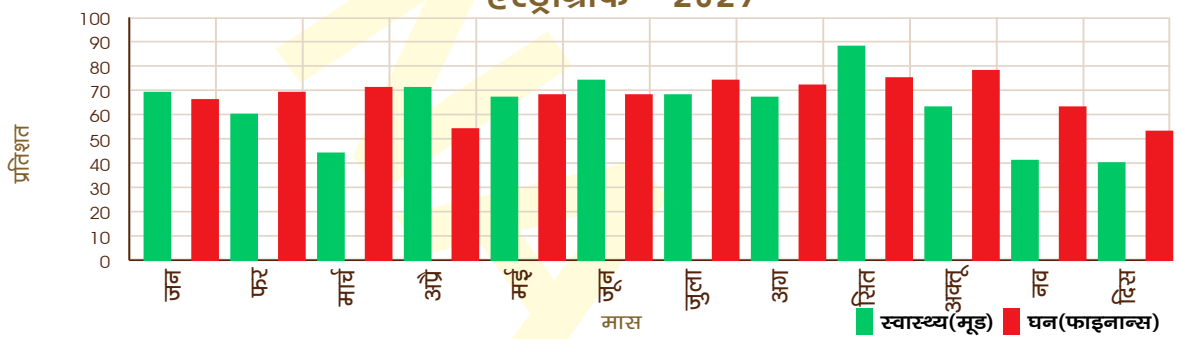

PijushNandi

एस्ट्रोग्राफ – 2028

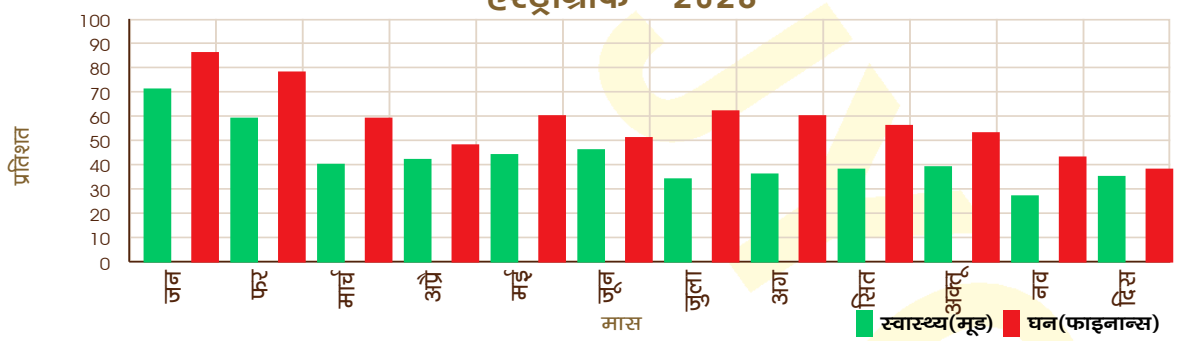

mun

एस्ट्रोग्राफ – 2028

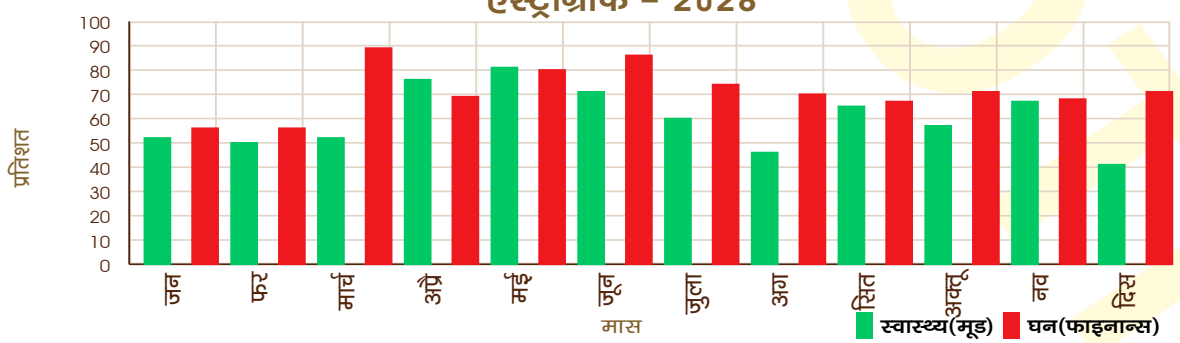

PijushNandi

एस्ट्रोग्राफ – 2029

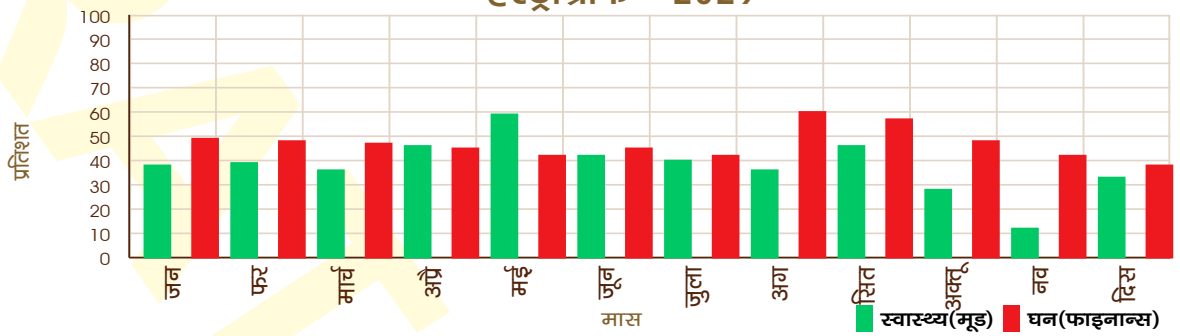

mun

एस्ट्रोग्राफ – 2029

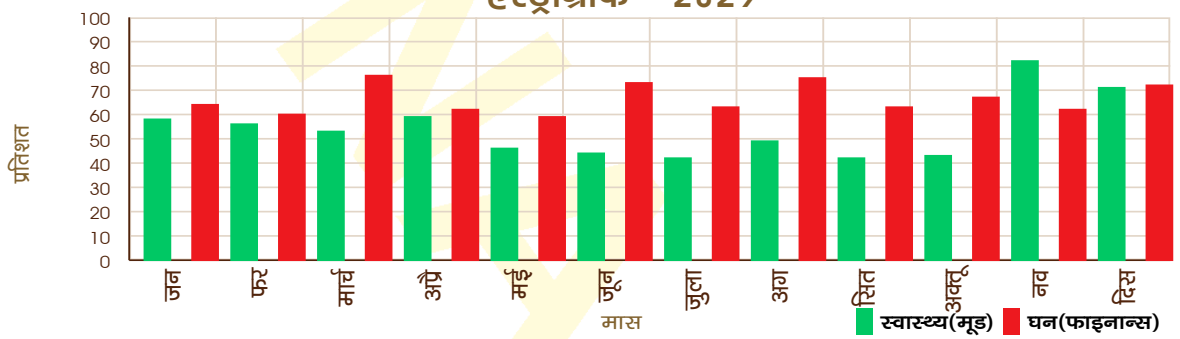

PijushNandi

एस्ट्रोग्राफ – 2030

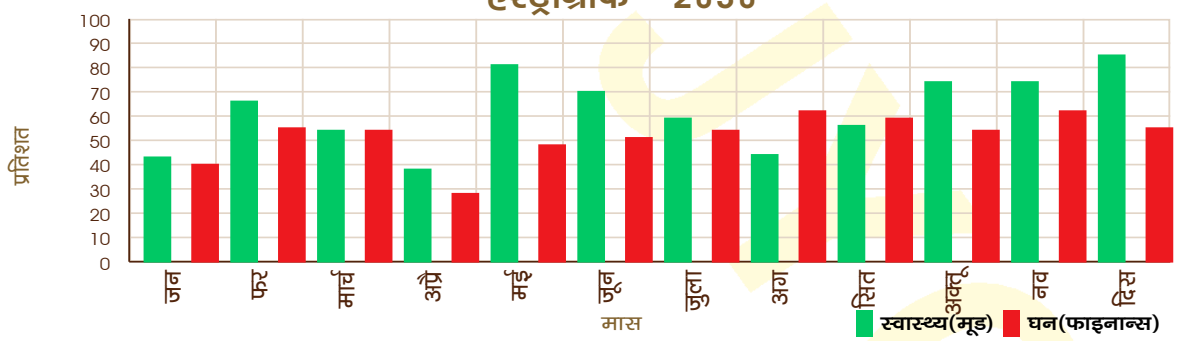

mun

एस्ट्रोग्राफ – 2030